स्वप्न - विद्या

डा० कामेश्वर उपाध्याय

श्रद्धेय गुरुवर्य

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी जी

को

सादर

।

कमलेश्वर उपाध्याय

४.३.७.

स्वप्नविद्या

डा० कामेश्वर उपाध्याय
ज्योतिषाचार्य (स्वर्णपदकप्राप्त), एम.ए. (स्वर्णपदक प्राप्त)
साहित्याचार्य, पीएच.डी.

त्रिस्कन्धज्योतिषम् प्रकाशनं, वाराणसी

प्रकाशक – त्रिस्कन्धज्योतिषम् प्रकाशन
संस्करण – प्रथम, संवत् 2053
मूल्य – रु0 100.00

त्रिस्कन्धज्योतिषम् प्रकाशन
65; ब्रह्मानन्द नगर, दुर्गाकुण्ड
वाराणसी– 221005.
दूरभाष – (0542) 311320

SWAPNA VIDYA

Dr. Kameshwar Upadhyaya
Jyotishacharya (Gold Medallist), M.A. (Gold Medallist), Sahityacharya. Ph.D.

Triskandha Jyotisham Publication

Publisher — Triskandha Jyotisham publication
Edition — First, 25th November 1996
Price — Rs. 100.00

Triskandha Jyotisham Publication
65; Brahamanda Nagar Colony
Durgakunda.
Varanasi 221005
✆: (0542) 311320

स्वप्न विद्या के भारतीय सिद्धान्त

संस्कृत वाङ्मय में स्वप्न विद्या को परा विद्या का अंग माना गया है । अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया है । फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं है न तो कामज या इच्छित विकारों का प्रतिफलन मात्र है ।

सामान्य रूप से वेदान्त की विद्या में कहाजाए तो स्वप्न लोक की तरह यह दृश्य लोक क्षणभंगुर है । इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता है । रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भीखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही है; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा हरिश्चन्द्र द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते है । त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया । ये सब ऐसे उदाहरण है जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते है । स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती है ।

स्वप्नकमलाकर ग्रन्थ में स्वप्न को चार प्रकार का माना गया है –(1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभ स्वप्न और (4) मिश्र स्वप्न ।

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि का साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये है । स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये है– (1) श्रुत (2) अनुभूत (3) दृष्ट (4) चिन्ता (5) प्रकृति (स्वभाव) (6) विकृति (बीमारी आदि से उत्पन्न) (7) देव (8) पुण्य और (9) पाप ।

प्रकृति और विकृति कारण में काम (सेक्स) और इच्छा आदि

का अन्तर्भाव होगा । दैवी आदेश वाले स्वप्न उसी व्यक्ति को मिलते है जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते है । जिनका हृदय राग द्वेष से रहित और निर्मल होता है ।

देव, पुण्य और पाप भाव वाले तीन प्रकार के स्वप्न सर्वथा सत्य सिद्ध होते है । शेष छः कारणों से उत्पन्न स्वप्न अस्थायी एवं शुभाशुभ युक्त होते है ।

मैथुन, हास्य, शोक, भय, मलमूत्र और चोरी के भावों से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ होते है–

रतेर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः ।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत् ।।

बृहस्पति के मतानुसार दश इन्द्रियाँ और मन जब निश्चेष्ट होकर सांसारिक चेष्टा से, गतिविधियों से पृथक् होते हैं तो स्वप्न उत्पन्न होते है । इस परिभाषा के अनुसार विदेशी विचारकों के इस कथन को बल मिलता है जिसमें वे स्वप्न का मुख्य कारण जाग्रत अवस्था के दृश्यों को मानते है ।

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं यदा ।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति ।।१।।

बृहस्पति द्वारा प्रदत्त स्वप्न की यह अवस्था सूचित करती है कि प्रत्यक्ष रूप से शरीर का कोई भी भाग जब तक काम करता रहेगा स्वप्न नही आयेगा । यहाँ तक की मन को भी शिथिल होकर निद्रित होना आवश्यक है । बच्चे जब स्वप्न को देखकर हंसते या रोते है तब धीरे से उनके शरीर को छूने मात्र से स्वप्न भंग हो जाता है । कुछ लोगों का मानना है कि प्रगाढ़ निद्रा की अवस्था में स्वप्न नहीं आते । यह सिद्धान्त वाक्य नहीं है । निद्रा की प्रगाढ़ता में भी स्वप्न की तरंगें उठती है ।

स्वप्न देखने के लिए चाक्षुष प्रत्यक्ष कारणों का होना आवश्यक नही है । यह सत्य है कि स्वप्न में उन्हीं वस्तुओं का दर्शन होता है जिन्हें हम जाग्रत अवस्था में कभी न कभी देखे हुए होते है; परन्तु दुर्लभ ही सही पर वैसे भी स्वप्न आते है जिन्हें हम कभी पूर्व प्रत्यक्ष नही मान सकते उदाहरण के तौर पर अदृष्ट पूर्व भूमि, दूसरे लोक के दृश्य, आकाश गंगा आदि । स्वप्नों का अवतरण मानस लोक से ही होता

है, पर दैविक स्वप्न में मन उपकरण बनता है ।. अतः स्वप्न को मानस से अतिरिक्त व्यापार या मानस का व्यापार दोनों ही नहीं कह सकते । ऋषियों ने स्वप्न को उतना ही सहज माना है जितना प्राकृतिक घटनाओं को जैसे– सूर्योदय, सूर्यास्त । पाप पुण्य से उत्पन्न स्वप्न 'अपूर्व घटना' की कोटि में आते है ।

स्वप्न में आवाजें आती है । इन अवाजों को दृश्य विहीनता के बावजूद स्वप्न कोटि में रखा जा सकता है और ये आवाजें कभी-कभी पूर्ण सत्य भी सिद्ध होती है । ऐसे स्वप्नों को कर्णेन्द्रिय प्रधान स्वप्न कह सकते है । स्वप्न देखने में सर्वाधिक बिम्ब चाक्षुष ही होते है । शेष इन्द्रियाँ चाक्षुष विम्बों का सहयोग मात्र करती है । अतः प्रयोग बनता है स्वप्नद्रष्टा, स्वप्नजीवी, स्वप्नलोक आदि । जन्मान्ध व्यक्तियों को जो स्वप्न आते है या आयेगें वे अधिक मात्रा में दृश्यविहीन होंगे । स्वप्न लाल, पीले, काले, नीले, उजले रंगों से युक्त भी हो सकते है और रंगविहीन भी । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दृष्य प्रतीकों के बिना भी स्वप्न आ सकते है । स्वप्न का दर्शन, स्वप्न का श्रवण और स्वप्न का स्पर्शन भी हो सकता है । स्वप्न में हम महसूस कर सकते है कि हमारे बगल में कोई सोया हुआ है और कभी-कभी उसे स्वप्न में ही छूकर आश्वस्त भी हो लेते है । स्वप्न सृष्टि के उस अवस्था विशेष का नाम है जो जाग्रत या चेष्टित अवस्था के विपरीत काल में ही अवतरित होता है । स्वप्न अवतरण के काल अपना विशेष महत्व रखते है । जिस काल में स्वप्न आ रहा है वह काल उस स्वप्न की चरितार्थता को सिद्ध करता है । अतः काल के क्षण, घंटे, प्रहर, संधियाँ भविष्यत् अनुमान या कथन के लिए महत्वपूर्ण नियामक बनती है । एक रात को चार खण्ड में बाँट कर स्थूलतः तीन तीन घंटे का एक याम या खण्ड मान सकते है । रात्रि का प्रविभाग निम्नलिखित प्रकार से कर सकते है–

(1). प्रदोषकाल से तीन घंटे तक
(2). अर्द्धरात्रि से पूर्व तीन घंटे तक
(3). अर्द्धरात्रि के बाद के तीन घंटे तक और
(4). सूर्योदय से पूर्व तीन घंटे तक

(1) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता है । (2) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न छः मास के अंदर अपना फल देता है । (3) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न तीन मास के अंदर में अपना फल देता है (4) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक मास के अंदर अपना फल देता है । ब्राह्ममुहूर्त में देखा गया स्वप्न उसी दिन अपना फल देता है ।

अनिष्टकारी स्वप्नों को देख कर जो व्यक्ति सो जाता है और बाद में शुभ स्वप्नों को देखता है वह अशुभ फल नहीं प्राप्त करता । अतः अनिष्ट स्वप्न को देख कर फिर से सो जाना चाहिए–

अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात्स स्वपेत् पुमान् ।

बृहस्पति के मतानुसार रात्रि के द्वितीय प्रहर में देखा गया स्वप्न आठ मास के अंदर तथा अरुणोदय बेला या ब्राह्ममुहूर्त में देखा गया स्वप्न दश दिन के अंदर अपना फल देता है–

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः ।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ।।
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासे स फलदः स्मृतः ।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ।।

सूर्योदय काल में स्वप्न देखकर जाग जाने के बाद वह स्वप्न अपना तत्काल फल देता है । दिन में मन में सोच कर सोने के बाद यदि उसी का स्वप्न निर्देशात्मक आया तो समझें यह स्वप्न शीघ्र ही अपना फल देगा ।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः ।
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वञ्च लभेद् ध्रुवम् ।।ब्र.वै.७७/७

कफ प्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति जल तथा जलीय पदार्थो का सर्वाधिक स्वप्न देखता है । वातप्रधान प्रकृति वाल व्यक्ति हवा में उड़ता है और ऊँचाई पर चढ़ता तथा ऊँचाई से कूदता है । पित्त प्रकृति वाला व्यक्ति अग्नि की लपटों और स्वर्ण तथा ज्वलित चीजों को देखता है ।

भारतीय स्वप्न विद्या की विशेषता–

भारतीय स्वप्नविदों ने दुःस्वप्न नाशन के लिए कुछ अपूर्व मंत्रों तथा उपायों को खोज रखा है । स्वप्न शास्त्र के सभी ग्रन्थों में प्रायशः ये विधान दिये गये है । रोग और सूक्ष्म आत्माओं के दुष्प्रभाव से उत्पन्न दुःस्वप्न नाश के लिए वेदों में भी मंत्र दिये गये है । इन मंत्रों के प्रभाव से निश्चित ही लाभ मिलता है ।

इन उपायों को देखने मात्र से प्रतीत होता है कि भारतीय ऋषियों ने स्वप्न को दैवत सृष्टि का अंश मान कर उसे मनुष्य के जन्मान्तरार्जित पुण्य-पापों का प्रदर्शक या सूचक तत्त्व माना है ।

स्वप्न विद्या में तात्कालिक मृत्यु या शीघ्र आने वाली मृत्यु के लक्षणों को भी दिया गया है । इससे सिद्ध होता है कि अपमृत्यु के सूचक लक्षण चाहे वे जिस कारण से उत्पन्न होते हों स्वप्न की परिधि में आते है ।

दुःस्वप्न, दुःस्वप्न नाश और आसन्न मृत्यु लक्षण स्वप्न विद्या के अन्तर्गत आने वाले विषय है ।

कुछ स्वप्नों की व्याख्या उनकी प्रकृति के आधार पर की जा सकती है; जैसे–

सभी प्रकार के सफेद पदार्थ स्वप्न में दिखने पर शुभ फल देते है कपास, भस्म, भात और मट्ठा को छोड़ कर । इसी प्रकार काली वस्तुएं गो, हाथी, देवता, ब्राह्मण और घोड़ा को छोड़कर सभी प्रकार का अनिष्ट फल देती है–

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पास भस्मौद्नतक्रवर्ज्यम् ।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिंदितानि
गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ।।

संसार में जितने शुभ पदार्थ है वे आवश्यक नहीं कि स्वप्न

में दिखलायी पड़ने पर शुभ फल ही दें । ठीक इसी तरह सभी प्रकार के अशुभ पदार्थ स्वप्न में दृष्ट होने पर प्रायशः शुभ फल के सूचक होते है–

लौकिक व्यवहारे ये पदार्थाः प्रायशः शुभाः ।
सर्वथैव शुभास्ते स्युरिति नैव विनिश्चयः ।।
परन्तु ते शतपथः शुभं दद्युः फलं सदा ।
अशुभा अपि ये केचित्तेऽपि सत्फलदायिनः ।।

चिता के ऊपर जलते हुए मनुष्य को स्वप्न में देखने से स्वप्न द्रष्टा अकस्मात् विपत्तियों में फंसता है । एक व्यक्ति इस स्वप्न को देखकर विपत्तियों में फंस गया था जिसे विपत्ति से निकलने हेतु तीन वर्षों तक अनवरंत शताक्षरा गायत्री तथा महामृत्युञ्जय मन्त्र का जप करना पड़ा । एक महिला ने स्वप्न देखा कि उसके पूजन घर में चल रहा यन्त्र देवता की शान्ति में बाधक है । अतः उसे वहाँ से हटा दिया जाय । जब तक यन्त्र हटा नहीं चल नहीं सका । एक प्रशासनिक ने देखा कि उसके घर से गाय अपने बछड़े के साथ निकलकर चली गयी । उस अधिकारी के यहाँ से लक्ष्मी ऐसी गायब हुयी कि वे दाने-दाने के लिए मोहताज हो गये । एक महिला ने स्वप्न में देखा कि एक पीत वस्त्रधारी महात्मा उन्हें दो फल दे रहे है । कालान्तर में उन्हें दो जुड़वे पुत्रों की प्राप्ति हुयी । एक महिला ने कन्या प्राप्ति हेतु भगवती की आराधना की । स्वप्न में श्री माँ ने भव्य महिला के रूप में दर्शन देकर मुस्करा दिया । उन्हें कन्या रत्न की प्राप्ति हुयी । मेरे एक परिचित व्यक्ति को रात्रि में एक सर्प का दर्शन हुआ जिसकी लम्बी मूछें थी और वह क्रोध से उन्हें देख रहा था । कुछ ही दिनों बाद वे घोर बीमारियों से ग्रस्त हो गये । ग्रह जप एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र जप से उनकी रक्षा हो सकी । एक वृद्ध व्यक्ति को बार-बार स्वप्न में अनेक ऋषि गण दिखायी पड़ते थे । उन्होंने कहा कि मै एकादशी को मर जाऊँगा और ठीक उसी तिथि को उनकी मृत्यु हो गयी । एक युवा लड़के ने स्वप्न में लगभग चार बजे भोर में देखा कि कुछ लोग उसे ईंट पत्थर से पीट-पीट कर मार डाले है । जागने के बाद उसने

अपने कुछेक मित्रों से फोन कर सूचित किया और अपने मनोभय को भी बतलाया । उसने रात में ही अपने सारे चेकबुक्स पत्नी के नाम कर दिये । जहाँ-जहाँ धन था उसकी सूची बनाकर रख दी । दो दिन बाद एक समझौते के दौरान उस बलिष्ठ युवक को कुछ लोगों ने घेर कर मार डाला । एक महिला ने स्वप्न में देखा कि एक लाल वस्त्र पहनी महिला उसके हाथों से कंगन एवं मंगलसूत्र छीन रही है ।उस महिला ने स्वप्न में ही झगड़ा कर उस लाल वस्त्र धारिणी महिला को भगा दिया।कुछ दिनों बाद महिला के पति रात में लौट रहे थे। उन्हें घेर कर कुछ लोगों ने मारना चाहा परन्तु वे किसी तरह जीवित बच गये । उनकी पत्नी ने बटुक भैरव का प्रयोग कर अपने पति की रक्षा कर ली । काश्मीर के प्रायशः विस्थापितों ने पलायन के पूर्व भयावह दृश्यों वाले स्वप्नों को देखा था ।एक महिला ने रात में एक दिव्य पुरुष को देखा जो देखने से साधक लग रहे थे।उन्होंने उसे दूर्वा में लिपटे लड्डू को दिया ।कुछ दिनों बाद उस महिला को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी।यह बालक शान्त एवं तेजस्वी है । एक साइक्लाजिस्ट महिला ने स्वप्न में देखा कि उसके सिर के सारे बाल सफेद हो गये है । बार-बार डाई करने पर भी वे काले नहीं हो रहे है । कुछ ही दिनों बाद उस आध्यापिका महिला के घर विपत्तियों की श्रृंखला शुरु हुयी । पिता की मृत्यु एवं अन्य आपदायें आयीं । एक छात्रा ने स्वप्न में अपना परीक्षा फल प्रकाशित देखा । यहाँ तक कि उसने अपने अंकों को भी स्वप्न में देखा । पता करने पर यह स्वप्न पूर्ण सत्य निकला ।

इस प्रकार से सामान्य स्वप्नों द्वारा विशिष्ट सूचनाएं मिलती है । आराधना बल एवं स्वप्न सिद्धि के माध्यम से अनेक दृश्यों को देखा एवं जाना जा सकता है । देश विप्लव एवं भूकम्प आदि के भी सूचक स्वप्न होते है । बार-बार फटी पृथ्वी को देखना तथा नगर को अग्नि की लपटों से घिरा देखना सामूहिक विपत्ति का सूचक होता है । फलतः स्वप्न मनुष्य की आन्तरिक तपस्विता एवं इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर मार्ग दर्शन के कारक तत्त्व भी बन जाते है । एक महिला ने तो स्वप्न में ही विदेश गमन किया तथा भीड़ में अपने पति को देखा । उस डाक्टर महिला ने बहुत दिनों बाद विदेश यात्रा की और

अपने पति को भीड़ में स्वप्न से मिलती आकृति के कारण पहचान लिया । बाद में दोनों का जीवन अत्यन्त सुखमय हो गया । मैने स्वयं ही अनेक लोगों को अभिचार एवं अभिचार जनित बीमारियों से स्वप्न के माध्यम से बचने के लिए अभ्युपाय बतलाये है । स्वप्न के माध्यम से पूर्व जन्म की भी कुछ बातों को जाना जा सकता है । यद्यपि यह कार्य बहुत कठिन है पर असम्भव नही है । स्वप्न विद्या के साधक प्रायशः नहीं मिलते परन्तु ग्रन्थों में स्वप्न साधना के अनेक विधान उपलब्ध है । भारतीय स्वप्न विद्या आध्यात्मिक साधना में सुगमता लाने हेतु प्रयुक्त हुयी है । इसके अनेक उल्लेख तन्त्र ग्रन्थों में प्राप्त होते है ।

इस ग्रन्थ को तैयार करने में प्राचीन ग्रन्थों से पूर्ण सहयोग लिया गया है । धर्मसिन्धु एवं अन्य फुटकर ग्रन्थों में जहाँ स्वप्न की चर्चा आयी है वह पुराण एवं स्वप्न ग्रन्थों की पुनरावृत्ति मात्र है । अतः जहाँ अत्यधिक पुनरावृत्ति हुयी है उन संदर्भों को छोड़ दिया गया है । यदि एक-एक व्यक्ति से स्वप्न संकलन किया जाय और उसके परिणामों पर गहन विचार किया जाय तो यह कार्य अपने आप में एक शोध कार्य हो जायेगा । फिर भी इस कार्य का अपना एक अलग महत्व है । यह कार्य स्वप्न के सिद्धान्त को एक स्थान पर उपलब्ध कराने हेतु अपना महत्त्व रखता है ।

अपनी धर्म पत्नी रेखा उपाध्याय को इस कार्य में इन्डेक्स बनाने में सहयोग करने हेतु धन्यवाद देने से अपने को रोक नही सकता । इस महत् कार्य के पीछे मुझे प्रेरित करने वालों में श्री प्रदीप कौल तथा डा0 शशिकला सिंह (वरिष्ठ प्रवक्ता मनोविज्ञान, का0 हि0 वि0 वि0) मुख्य रूप से स्मरणीय है । मै इनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । आर्ष ग्रन्थों के प्रणेता ऋषियों एवं आचार्यो को शतशः प्रणाम करता हूँ ; जिन्होंने इस गुह्य विद्या को सर्व सुलभ किया ।

विदापुनरागमनाय

कार्तिकपूर्णिमा
सम्वत् २०५३

कामेश्वर उपाध्याय
२५. ११. १९९६

उन्हें,
जो विश्व, राष्ट्र एवं मनुष्य के
कल्याण का
शुभ एवं सुमंगल
स्वप्न देखते रहे है ।

ॐनमो देव्यै महाशक्त्यै स्वप्नसृष्ट्यै तथैव च ।
लोकनिर्माणरूपायै स्वप्नधात्र्यै नमो नमः ॥

ॐशिवाय स्वप्नरूपाय महेशाय कपर्दिने ।
शक्त्यै तरंगभूतायै शिवायै च नमो नमः ॥

ॐपरमाणुर्महादेवः शक्तिस्तरंगधारिणी ।
शिवशक्तिस्वरूपाय स्वप्नलोकाय ते नमः ॥

ॐनमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥

ॐनमः सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।
विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥

स्वप्नकमलाकरः

प्रथमः कल्लोलः

मंगलम् वस्तुनिर्देशात्मकम् --

श्रीनृसिंहं रमानाथं गोकुलाधीश्वरं हरिम् ।
वन्दे चराचरं विश्वं यस्य स्वप्नायितं भवेत् ।।१।।
स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि मुह्यन्ते यत्र सूरयः ।
नानामतानि संचिन्त्य यथाबुद्धिबलोदयम् ।।२।।

मै (ज्योतिर्विद् श्रीधर) भगवान् नृसिंह, श्री रमानाथ (श्री रामचन्द्र) तथा गोकुलपति भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ , जिनकी सत्ता से यह समग्र चर अचर सृष्ट्यात्मक विश्व स्वप्नायित हो रहा है ।

नाना प्रकार के मतों (स्वप्न सम्बन्धित सिद्धान्तों) को अपने शास्त्रज्ञान स्वरूप बल तथा बुद्धि के प्रयोग से चयनित कर स्वप्नाध्याय की रचना कर रहा हूँ, जिसकी व्याख्या में वड़े-बड़े विद्वान् भी मोहित हो जाते है ।

स्वप्नं चतुर्विधं प्रोक्तं दैविकं कार्यसूचकम् ।
द्वितीयं तु शुभस्वप्नं तृतीयमशुभं तथा ।।३।।
मिश्रं तुरीयमाख्यातं मुनिपुंगवकोटिभिः ।
तत्रादौ दैविकस्वप्ने मन्त्रसाधनमुच्यते ।।४।।

स्वप्न चार प्रकार के कहे गये है -- (१) दैविक स्वप्न जो कार्यसूचक होता है (२) शुभ स्वप्न (३) अशुभस्वप्न तथा (४) मिश्र स्वप्न यानी शुभाशुभ स्वप्न । ऐसा अनेक प्राचीन श्रेष्ठ मुनियों का मत है ।

प्रथम दैविक स्वप्न के लिये मन्त्रो के साधन भूत उपायों को प्रदर्शित किया जा रहा है ।

तदादौ काल-यामानां विचारं कुर्महे वयम् ।
तत्र च प्रथमे यामे स्वप्नं वर्षेण सिध्यति ।।५।।

प्रथमतया स्वप्न फल विचार हेतु स्वप्न-काल का विचार करते है ।प्रथम याम में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष में फलीभूत होता है । दिवा-रात्रि मे कुल ८ याम होते है । तीन घन्टे का एक याम होता है । रात्रि के प्रथम याम मे देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष बीतते-बीतते अपना फल देता है ।

द्वितीये मासषट्केन षड्भिः पक्षैस्तृतीयके ।
चतुर्थे त्वैकमासेन प्रत्यूषे तद्दिनेन च ।।६।।

रात्रि के द्वितीय याम में देखा हुआ स्वप्न छः मास के अन्दर अपना फल देता है और तृतीय याम में देखा हुआ स्वप्न तीन मास के अन्दर फलीभूत होता है । रात्रि के चतुर्थ प्रहर में देखा हुआ स्वप्न एक मास के अन्दर प्रत्यक्ष फल देता है । ब्राह्ममुहूर्त का दृष्ट स्वप्न उसी दिन अपना फल दिखाता है ।

गोरेणूच्छुरणे चाथ तत्कालं जायते फलम् ।
स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ।।७।।

गौवों के चरने जाते समय (सूर्योदय से तत्काल पूर्व) देखा हुआ स्वप्न तत्काल फल देता है । रात्रि में देखे हुए स्वप्न को प्रातः काल अपने गुरु से शुभाशुभ ज्ञान हेतु कहना चाहिए।

तमन्तरेण मन्त्रज्ञः स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ।
यानि कृत्यानि भावीनि ज्ञानगम्यानि तानि तु ।।८।।

यदि गुरु (स्वप्नवेत्ता) न हो तो स्वयं मंत्रज्ञ व्यक्ति को स्वप्न फल का विचार करना चाहिए। भविष्य में घटने वाली घटनायें ज्ञान द्वारा जानी जाती है ।

आत्मज्ञानाप्तये तस्माद् यतितव्यं नरोत्तमैः ।
कर्मभिर्देवसेवाभिः कामाद्यरिगणक्षयात् ।।९।।

अतः आत्मज्ञान के लिये श्रेष्ठ व्यक्ति को अनवरत प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह आत्मज्ञान कर्म, देव सेवा और कामादि शत्रुओं के समूह के दमन से प्राप्त होता है ।

नैष्ठिक कर्म (नित्यनैमित्तिकसन्ध्यावन्दनादि), देव सेवा (पूजा, यजन, तपस्या, व्रतोपवास, श्रुतिपरायणता) में वृद्धि से और कामादि (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, द्वेष) के नाश से मनुष्य शुद्धचित्त होता है । तत्पश्चात् शनैः शनैः ध्यान, धारणा तथा आत्म चिंतन से आत्मोपलब्धि करता है ।

चिकीर्षु देवतोपास्तिमादौ भावि विचिन्तयेत् ।
स्नानदानादिकं कृत्वा स्मृत्वा हरिपदाम्बुजम् ।।१०।।
शयीत कुशशय्यायां प्रार्थयेद् वृषभध्वजम् ।

देवता की उपासना करके दैविकस्वप्न का भावी फल विचारना चाहिए । स्नानादि कृत्य सम्पन्न करके भगवान् विष्णु के पदारविन्द का चिन्तन करते हुए कुशशय्या पर शयन करें तथा भगवान् शिव की प्रार्थना करें और उनके स्वप्नफलनिर्देश के मन्त्र का १०८ बार जप करें ।

स्वप्नप्रदः शिवमंत्रः -

'ॐ हिलि हिलि शूलपाणये स्वाहा'

(इमं मंत्रमष्टोत्तरशतवारं जपित्वा कृताञ्जलिः संप्रार्थयेत् ।)

शिव का स्वप्नफल दर्शक मन्त्र इस प्रकार है – 'ॐ हिलि हिलि शूलपाणये स्वाहा।'
इसका जप करके अञ्जलि में पुष्पों को लेकर पुष्पाञ्जलि अर्पित करें तथा निम्नलिखित मन्त्रों से शिव की प्रार्थना करें ।

प्रार्थना मंत्र –

ॐ भगवन् देवदेवेश शूलभृद् वृषभध्वज ।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शश्वत ।।११।।
नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ।।१२।।

भगवान् देवाधिदेव! शूलधारी! वृष चिह्न युक्त ध्वजावाले! शाश्वत! शयन अवस्था में स्वप्न में इष्ट अनिष्ट फल कहें । अज (कभी न उत्पन्न होने वाले) को प्रणाम है । त्रिनेत्र, पिंगल, महात्मा, वाम, विश्वरूप, स्वप्नाधिपति आदि नाम से युक्त प्रभु आपको प्रणाम है ।

स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ।
क्रियासिद्धि विधास्यामि-त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।।१३।।

स्वप्न में मुझसे सभी कार्योके अशेष तथ्यों को कहें । मै आपकी कृपा से क्रियासिद्धि प्राप्त करूँगा ।

ॐ नमः सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।
विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ।।१४।।

प्रणवस्वरूप समग्रविश्वरूप विष्णु (पालनकर्ता) प्रभविष्णु,

व्यापक, व्यापकस्वरूप स्वप्न के अधिपति आपको प्रणाम है ।

इति मन्त्रान् सकृज्जपित्वा नत्वा च प्राक्शिराः स्वपेत् ।
दक्षिणं पार्श्वमानम्य स्वप्नं चाथ परीक्षयेत् ।।१५।।

इस मंत्र को एक बार जप करके और विष्णु स्वरूप भगवान को प्रणाम कर पूर्व की ओर सिर कर शयन करें तथा दाहिने करवट सोते हुए स्वप्न की परीक्षा करें ।

अथापरः स्वप्नप्रदः श्रीरूद्रमन्त्रः --

ॐ नमो भगवते रूद्राय मम कर्णरन्ध्रे प्रविश्य अतीतानागतवर्तमानं सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥

प्रणवस्वरूप भगवान् रुद्र मेरे कानों में प्रविष्ट होकर भूत भविष्य और वर्तमान को सत्य-सत्य उद्घाटित कीजिए, आपको हवि प्रदान करता हूँ ।

इमं मन्त्रं समुच्चार्यायुतवारं दशांशतः ।
तिलान् हुत्वा सिद्धमन्त्रो रात्रौ दर्भासने शुचिः ।।१६।।

इस मंत्र को दस हजार बार जप कर इसके दशांश से तिल से हवन कर मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिये तथा कुशा के आसन पर पवित्र होकर शयन करना चाहिए ।

जप्त्वा वामं पार्श्वमधः कृत्वा धृतमनोरथः ।
शयीत स्वप्न आगत्य देवः सर्वं ब्रवीति तम् ।।१७।।

ऊपर कहे मन्त्र को जप कर बाये करवट लेटें तथा अपने मनोवांछित को मन में रखकर शयन करें । ऐसा करने से भगवान् रुद्र स्वप्न में सबकुछ बताते है ।

अथापरः स्वप्नप्रदो गणपतिमन्त्रः --

ॐ त्रिजट लम्बोदर कथय कथय हुँ फट् स्वाहा ।

हे त्रिजटाधारी, लम्बोदर (गणेश) स्वप्न से सम्बन्धित तथ्यों को मुझसे कहिए । 'हुंकार' और 'फट्' तत्त्वस्वरूप को हवि अर्पित है ।

कार्यं विचिन्त्य प्रजपादष्टोत्तरशतं नरः ।
शयीत पश्चादशुभं शुभं कथयेद् विभुः ।।१८।।

स्वप्न संम्बन्धी कार्य को सोचकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जपकर शयन करे ।

भगवान् गणेश शुभ या अशुभ फल को स्वप्न में संकेत कर देते है ।

अथापरः स्वप्नप्रदो विष्णुमन्त्रः --

कार्पण्येतिमन्त्रस्यार्जुन ऋषिः, दण्डकं छन्दः, श्रीकृष्णो देवता (अमुक) कार्याकार्यविवेकस्वप्नपरीक्षार्थे जपे विनियोगः ।

मन्त्रः-- ॐ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ।
उक्त्वा मन्त्रपदान्यङ्गपंचके विन्यसेद् बुधः ।
ध्यानं च कुर्याद् विधिवद् एकाग्रेणैव चेतसा ।।१९।।

अब स्वप्नफल बताने वाला दूसरा विष्णु मन्त्र बतलाते है -- 'कार्पण्येति' मंत्र के ऋषि अर्जुन है । दण्डक छन्द है । श्रीकृष्ण देवता है । अमुक विशेष कार्याकार्य विवेक स्वप्न परीक्षा के लिए निम्नलिखित मन्त्र का विनियोग कर रहा हूँ । ऐसा कहकर भूमि पर जल छोड़ें । मंत्र है --कार्पण्यदोष के कारण नष्ट स्वभाव, धर्मविषयक ज्ञान में मूढ़ धी मै आपसे श्रेय (कल्याण) को पूछता हूँ । तुम्हारा शिष्य हूँ, शरणागत हूँ, कल्याणमार्ग को निश्चित तौर पर मुझसे कहे । मेरा शासन करें (शिक्षा दें) ।

इस मंत्र के पदों का अंगन्यास कर, करन्यास कर, एकाग्र चित्त हो ध्यान करें (जपें) ।

सेनयोरुभयोर्मध्ये श्रीकृष्णं प्रति फाल्गुनः ।
शस्त्रास्त्राणि करान्न्यस्याप्राक्षीद्वै प्रपदग्रतः ।।२०।।
इति ध्यात्वा च तुलसीमूले पंचोपचारकैः ।
शालग्रामं सुसंपूज्य मलयागरूधूपकैः ।।२१।।
प्रज्वाल्यं घृतदीपं च ताम्बूलादिभिरुत्तमैः ।
ततः कुशासने स्थित्वा मन्त्रमष्टोत्तरंशतम् ।।२२।।
जपित्वा प्रस्वपेत् स्वस्थः सुमना दक्षपार्श्वके ।
स्वप्ने कृष्णः समागत्य ब्रूयात् तस्य शुभाशुभम् ।२३।।

दोनों सेनाओं के बीच श्रीकृष्ण के प्रति अर्जुन ने इसे कहा और शस्त्र-अस्त्र का परित्याग कर उनके सम्मुख हो विनयपूर्वक पूछा । इस आशय का ध्यान कर तुलसी के मूल में पंचोपचार से शालिग्राम (विष्णु) की विधिपूर्वक पूजा मलय, अगरू और धूपादि से करें । घी का दीपक जला कर ताम्बूलादि अर्पित कर कुश के आसन (शय्या) पर बैठकर मन्त्र (कार्पण्यदोष...)का १०८ बार जप करें । जप के पश्चात् स्वस्थ मन से दाहिने पार्श्व के बल सोयें । स्वप्न में भगवान् कृष्ण आकर उस स्वप्न का शुभ-अशुभ फल बतलाते है ।

अथापरः स्वप्नप्रदः स्वप्नवाराहीमन्त्र :-

"ॐ नमो भगवति कुमारवाराह्हि गुग्गुलगन्धप्रिये सत्यवादिनि लोकाचारप्रचाररहस्यवाक्यानि मम स्वप्ने वद वद सत्यं ब्रूहि-ब्रूहि आगच्छ आगच्छ ह्रीं वौषट् ॥ " एतन्मन्त्रस्य सहस्रजपात्सिद्धिः॥२४॥

पूर्वोक्त मंत्रों के पश्चात् स्वप्नफल सूचित करने वाले स्वप्नवाराही मंत्र का आख्यान किया जा रहा है । 'ॐ नमो भगवति....' मंत्र के एक हजार जप से सिद्धि होती है । (इस मंत्र का अर्थ है--हे भगवती कुमार वाराही, गुग्गुल के गन्ध को प्रिय मानने वाली, सत्यवादिनि, लोक व्यवहार के गूढ़ रहस्यों को मुझे स्वप्न में कहो..., सत्य बोलो...,आओ-आओ इत्यादि!)

विधि :-

शुक्रवारे शुचिर्भूत्वा निशीथे कलशं शुभम् ।
संस्थाप्यो तदुपरि नागवल्लीदलं न्यसेत् ।।२५।।
हरिद्रापिण्डरचितां देवीं तस्योपरि न्यसेत् ।
वाराही मम [illegible] ।।२६।।

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाथोन्मत्तद्रव्यं निवेदयेत् ।
सांगपूजां विधायाथ मन्त्रमष्टोत्तरं शतम् ।।२७।।
जपित्वैकमना देव्या अग्रे कृत्वा च मस्तकम् ।
शयीत तस्य सा देवी प्रब्रवीति शुभाशुभम् ।।२८।।

शुक्रवार को पवित्र होकर अर्धरात्रि में कलश की सुस्थापना करके उसके ऊपर पान के पत्तों को सजायें । भगवती वाराही की हरिद्रामूर्ति बनाकर उस कलश के ऊपर स्थापित कर --'वाराह्यै नमः' इस मंत्र से भक्ति पूर्वक प्रणाम करते हुए प्राणप्रतिष्ठा करके उन्मत्त पूजाद्रव्यों से भगवती की पूजा करें । अंग पूजा करके ऊपरलिखित मंत्र का १०८ बार जप करें । एकाग्र मन से जप करके भगवती के आगे (पास) सिर कर सोने से रात्रि में भगवती उसे स्वप्नों का शुभाशुभ फल बतलाती है ।

अथापरः स्वप्नप्रदः पुलिन्दिनी मन्त्र :-

विनियोगः-- नमो भगवतीति मन्त्रस्य शंकर ऋषिः, जगतीछन्दः, श्री पुलिन्दिनी देवता, ई बीजम्, स्वाहा शक्तिः, पुलिन्दिनी प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।.। (आचमनीय से पृथ्वी पर जल छोड़ें ।)

ॐ इत्यादि करषडंगन्यासौ विधाय ध्यानं कुर्यात् ।

ध्यानम्--

बर्हापीडकुचाभिरामचिकुरां विम्बोज्वलच्चन्दिकां
गुञ्जाहारलतांशुजालविलसद्ग्रीवामधोरेक्षणाम् ।
आकल्पद्रुमपल्लवारुणपदां कुन्देन्दुविम्वाननां
देवीं सर्वमयीं प्रसन्नहृदयां ध्यायेत् किरातीमिमाम् ।।

इति ध्यात्वा ई ॐ नमो भगवति श्रीशारदादेवि अत्यन्तातुले भोज्यं देहि देहि एहि एहि आगच्छ आगच्छ आगन्तुकहृदिस्थं (अमुकं) कार्यं सत्यं ब्रूहि ब्रूहि पुलिन्दिनी ई ॐ स्वाहा ।।

अस्य मन्त्रस्य पञ्चसहस्रजपात् सिद्धिः । तद् दशांशतः तिलानां हवनं कार्यम् ।।

कार्याकार्यविवेकार्थ रात्रावष्टोत्तरं शतम् ।
जप्त्वा शयीत तस्याशु देवी स्वप्नेऽखिलं वदेत् ।।२९।।
साधकस्तद्वचः श्रुत्वा तदैवान्वाहमाचरेत् ।
नास्ति तस्य भयं क्वापि सर्वकालं सुखी भवेत् ।।३०।।

उपरोक्त स्वप्न मन्त्र के बाद पुलिन्दिनी देवी का स्वप्न मन्त्र दिया जा रहा है । इस मन्त्र का विनियोग इस प्रकार है -- इस मन्त्र के ऋषि शंकर भगवान्

है, जगती छन्द, पुलिन्दिनी देवता, ईम् बीज तथा स्वाहा शक्ति है। करन्यास-ईम् ॐ नमो भगवति श्रीशारदायै अंगुष्ठाभ्यां नमः, अत्यन्तातुले भोज्यं देहि देहि – तर्जनीभ्याम् नमः, एहि एहि मध्यमाभ्यां नमः, आगच्छ आगच्छ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ईम् ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इसी प्रकार से हृदयादिन्यास भी करना चाहिये । हृदयाय नमः, शिरसे स्वाहा, शिखायै वषट्, नेत्रत्रयाय वौषट्, कवचाय हुम्, अस्त्राय फट् । इन छः स्थानों पर करन्यास वाले मन्त्रों का अध्याहार करें । तत्पश्चात् 'ईम् ॐ भगवति श्री शारदादेवि' आदि मंत्र का पाँच हजार बार जप करें । तिल से दशांश हवन करें । ऐसा करने से मंत्र सिद्ध होता है । जव कार्य या अकार्य के ज्ञान हेतु आवश्यकता पड़े तो रात्रि में १०८ बार जप करके सोने से पुलिन्दिनी देवी स्वप्नफल बतलाती है । इस मंत्र की साधना से स्वप्नभय नष्ट हो जाता है । व्यक्ति सुखी रहता है ।

अथापरः स्वप्नप्रदः स्वप्नेश्वरी मन्त्र :-

ॐ अस्य श्रीस्वप्नेश्वरीमंत्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहतीछन्दः, स्वप्नेश्वरी देवता, स्वप्ने कार्याकार्यपरिज्ञानाय जपे विनियोगः । (आचमनीय से एक बार पृथ्वी पर जल छोड़ें ।)

अस्य मंत्रस्य द्व्यक्षरचतुरक्षरद्व्यक्षरैकाक्षर चतुराक्षरद्व्यक्षरतः करन्यासांगन्यासौ कृत्वा ध्यानं कुर्यात् ।

ध्यानम् :-

वराभये पद्मयुगं दधानां करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम् ।
सिताम्बरां शारदचन्द्रकान्तिं स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम् ।।

मंत्र :- *ॐ क्लीं स्वप्नेश्वरी कार्यं मे वद वद स्वाहा ।।*

एतन्मन्त्रस्य लक्षजपं कृत्वा तद् दशांशतो बिल्वदलैर्हवनात् सिद्धिः ।

पूर्वोदिते यजेत् पीठे षडंगत्रिदशायुधैः ।
रात्रौ संपूज्य दवेशीमयुतं पुरतो जपेत् ।।३२।।
शयीत ब्रह्मचर्येण भूमौ दर्भासने शुभे ।
देव्यै निवेद्य स्वं कार्यं सा स्वप्ने वदति ध्रुवम् ।।३३।।

इसके बाद स्वप्नफल बताने वाले स्वप्नेश्वरी मंत्र को बतला रहे हैं । इस स्वप्नेश्वरी मंत्र के उपमन्यु ऋषि है, छन्द बृहती और देवता स्वप्नेश्वरी है । इन्हीं विधियों से विनियोग करें । करन्यास इस प्रकार होगा --

ॐ क्लीम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, स्वप्नेश्वरी तर्जनीभ्यां नमः कार्यं मध्यमाभ्यां नमः, मे अनामिकाभ्यां नमः, वद वद कनिष्ठिकाभ्यां नमः, स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

ठीक इसी प्रकार से अङ्गन्यास (हृदय, शिर, शिखा, नेत्रत्रय, कवच और अस्त्राय फट्) भी करे । 'वरदाभये' मंत्र से ध्यान करें। 'ॐ क्लीम्...' आदि मंत्र का एक लाख जप करके इसके दशांश (दशहजार) से बिल्वपत्र से हवन करने से सिद्धि मिलती है । ध्यान मंत्र का अर्थ इस प्रकार है -- वर, मुद्रा, अभय मुद्रा, तथा कमलद्वय को चार हाथों से धारण कर स्वर्ण के आसन पर विराजमान, श्वेतवस्त्रधारिणी, शरच्चन्द्र की तरह कान्तिमती, आभूषणों से युक्त भगवती स्वप्नेश्वरी को प्रणाम करता हूँ । रात्रि में जप करें तथा सूर्य के उदित होने पर पीठस्थ देवी का आयुधों के साथ तथा अंग देवताओं सहित नमन करें । देवी के समक्ष दशहजार मंत्र का जप करें । रात्रि में ब्रह्मचर्य धारण करें तथा भूमि पर कुशा के आसन पर शयन करें । देवी से अपने कार्य का निवेदन करें । वे स्वप्न में फल बतलाती है ।

अथापरः स्वप्नप्रदः सिद्धिलोचनामंत्रः-

"ॐ स्वप्नविलोकि सिद्धिलोचने स्वप्ने मे शुभाशुभं कथय स्वाहा ।।'

इमं मन्त्रमयुतं जपित्वा मन्त्रसिद्धिः ।

कार्याकार्यविवेकार्थं रात्रावष्टोत्तरं शतम् ।
जप्त्वा शयीत स्वप्ने सर्वं देवी ब्रवीति तम् ।।३३।।

इसके बाद स्वप्नफल बतलाने वाला सिद्धिलोचना देवी का मन्त्र कहा जा रहा है--"ॐ स्वप्नविलोकि" आदि मंत्र का दशहजार आवृत्ति (जप) कर मन्त्रसिद्ध कर लें । कार्य अकार्य के विवेक के लिए पुनः रात्रि में १०८ बार जप करके शयन करने से स्वप्न मे देवी सबकुछ बतलाती है ।

अथापरः स्वप्नचक्रेश्वरी मन्त्र :-

"ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ चक्रेश्वरि चक्रधारिणि शङ्खचक्रगदाधारिणि मम स्वप्नं प्रदर्शय प्रदर्शय स्वाहा ।।" एतन्मन्त्रस्याष्टोत्तरशताधिकैकसहस्त्रजपात्सिद्धिः।

रात्रावष्टोत्तरं जप्त्वा शतं स्वापो विधीयताम् ।
स्वप्नेश्वरी समागत्य ब्रूयात्स्वप्ने शुभाशुभम् ।।३४।।

इसके बाद स्वप्नफल बतलाने वाला स्वप्नचक्रेश्वरीमन्त्र का आख्यान किया जा रहा है --*"ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ चक्रेश्वरि चक्रधारिणि शङ्खचक्रगदाधारिणि मम स्वप्नं प्रदर्शय प्रदर्शय स्वाहा"* का ११०८ बार जप करने से सिद्धि होती है । रात्रि में प्रयोग करने हेतु १०८ बार जप करके सोने पर स्वप्नचक्रेश्वरी देवी स्वप्न मे आकर स्वप्न के शुभ अशुभ फल को बतलाती है ।

अथापरः स्वप्नप्रदो घण्टाकर्णमन्त्रः-

"ॐ नमो यक्षिणि आकर्षिणि घण्टाकर्णि महापिशाचिनि मम स्वप्नं देहि देहि स्वाहा ।।" इमं मंत्रं शयनसमये रात्रावेकविंशतिवाराञ्जपित्वा शयीत जपकालमारभ्य प्रातःकालपर्यन्तं किञ्चिदपि न वदेत् । प्रातःकाले उत्थानसमये पुनरेकविंशतिवाराञ्जपेत्। ततो मौनंविर्सजयेत् । एवं प्रकारेणैकविंशतिदिनपर्यन्तमविच्छिन्नं साधयेत् । यदि मध्य एव धृतस्यास्य व्रतस्य विच्छेदः स्यात्तदा पुनरप्युक्तप्रकारेणैवैकविंशतिदिनपर्यन्तं साधयेत् ।।

कार्यं विचिन्त्य निपुणो रात्रौ जप्त्वैकविंशतिम् ।
शयीत स्वप्नमध्ये तु स पश्येदशुभं शुभम् ।।३५।।

इसके बाद स्वप्नफल बतलाने वाला घण्टाकर्णी मन्त्र बतलाया जा रहा है । 'ॐ नमो यक्षिणि' आदि मंत्र को रात्रि में सोते समय २१ बार जपें । मंत्र जप काल से लेकर प्रातः काल तक मौन रहें । इस प्रकार इक्कीस दिनों तक अविच्छिन्न क्रम से साधना चलनी चाहिए । बीच में व्रत खण्डित हो जाता है तो फिर नये सिरे से व्रतारम्भ और साधनाक्रम जारी करना चाहिए । यानि २१ दिन जप और मौन सतत चलना चाहिए । इक्कीस दिन का अनुष्ठान पूरा होने के पश्चात् रात्रि में इक्कीस बार जप कर शयन करने पर स्वप्न में घण्टाकर्णी शुभ या अशुभ फल को स्वप्न में निर्देशित करती है ।

अथापरः स्वप्नप्रदो विद्यामंत्र :-

"ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नं सुविचार्य विद्ये वद् वद् स्वाहा ।।

शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्त्वा जप्त्वायुतं मनुम् ।
संध्यायां भारतीपूजां कृत्वा स्वापो विधीयताम् ।।३६।।
महाविद्या समागत्य स्वप्ने ब्रूयात् शुभाशुभम् ।।३७।।

अब दूसरे प्रकार का स्वप्नफल बतलाने वाला विद्यामंत्र कहा जा रहा है --

'ॐ ह्रीं मानसे' आदि मंत्र की सिद्धि हेतु अत्यन्त पवित्र होकर खीर खाकर दश हजार जप करके संध्यवेला मे सरस्वती की पूजा कर रात में शयन करना चाहिए । रात मे स्वप्न में महाविद्या आकर शुभ अशुभ का संकेत देती है । किसी-किसी के मत से इसे चौदह (मनु) दिन सिद्ध करना चाहिए ।

अथापरं मन्त्रवरं ब्रह्मवैवर्तभाषितम् ।
ब्रवीमि सद्यः फलदमनुभावकरं परम् ।।३८।।

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पूर्वदुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा ।।"

कल्पवृक्षो हि भूतानां मन्त्रः सप्तदशाक्षरः ।
शुचिश्च दशधा जप्त्वा दुष्टस्वप्नं न पश्यति ।।३९।।
शतलक्षजपेनैव मन्त्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ।
सिद्धमन्त्रश्च लभते सर्वसिद्धिं च वाञ्छिताम् ।।४०।।

अब अन्य प्रकार का श्रेष्ठ मंत्र बतलाया जा रहा है जिसे ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है । यह सद्यः फलदायक और अनुभवसिद्ध यानी प्रतीतिकारक है । 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं, आदि मंत्र है । पवित्र होकर मात्र दस बार जप करने से दुष्ट स्वप्न नहीं दिखते । सौ लाख (एक करोड़) जप करने से मनुष्यों को यह मंत्र सिद्ध हो जाता है । जिसको यह मंत्र सिद्ध हो जाता है वह सभी वांछित कार्यों को सिद्ध कर लेता है ।

अथापरः स्वप्नप्रदो मृत्युञ्जयमन्त्र :-

"ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा ।।" इमं मन्त्रं दशलक्षं जपित्वा मन्त्रसिद्धिः ।

दृष्ट्वा च मरणं स्वप्ने शतायुश्च भवेन्नरः ।
पूर्वोत्तरमुखो भूत्वा स्वप्नं प्राज्ञे प्रकाशयेत् ।।४१।।
इति नानामन्त्रशास्त्राण्यालोड्य स्वप्नमन्त्रकम् ।
कृत्वैकत्र कृतो ग्रन्थो लोकानां हितकाम्यया ।।४२।।
'कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तं' महर्षीणामिदं वचः ।
स्मृत्वा नरस्तथा कुर्याद् विश्वस्तः फलकर्मणि ।।४३।।
नाविश्वस्तस्य सिद्धिः स्यादित्यृषीणां मतं मतम् ।।४४।।

स्वप्नफल को कहने वाले दूसरे मन्त्र मृत्युञ्जयमन्त्र को कह रहे है --

'ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा' मन्त्र का दशलाख जप करने से सिद्धि होती है । स्वप्न में अपनी मृत्यु को देखकर व्यक्ति शतायु होता है ।पूर्व और उत्तर (ईशान) मुख होकर स्वप्न का निवेदन बुद्धिमान् से करना चाहिए । यह नाना प्रकार के मन्त्र शास्त्रों का आलोडन कर मन्त्रों को प्रकाशित करने वाला लोक कल्याण हेतु ग्रन्थ लिखा गया है । कलियुग में कथित जप संख्या का चतुर्गुणित अधिक जप करने से सिद्धि होती है ऐसा महर्षियों का कहना है । अतः इसका विश्वास कर मन्त्रसिद्धि करने से फल मिलता है ।अविश्वासी को मन्त्रसिद्धि होती ही नहीं--शंसयात्मा विनश्यति । ऐसा ऋषियों का निश्चित मत है । इस प्रथम कल्लोल में स्वप्नफल विधायक तेरह मंत्र दिये गये है ।

इति ज्योतिर्विच्छ्रीधरसंगृहीतस्वप्नकमलाकरे ।
दैविकस्वप्नप्रकरणकथनं नाम प्रथमः कल्लोलः ।।१।।

*****
***
**
*

द्वितीयः कल्लोलः

{ स्वप्न कमलाकर के प्रथम कल्लोल में स्वप्नसिद्धि के विविध मंत्र और उनकी प्रक्रिया का प्रति-पादन किया गया है । इन मंत्रों के माध्यम से भूत-भावि-वर्तमान तीनों प्रकार के स्वप्नों का रहस्य जाना जा सकता है । द्वितीय कल्लोल में स्वप्न की प्रकृति और उसका कारण वर्णित है । इस कल्लोल में मात्र शुभस्वप्नों का ही फल कहा गया है ।}

स्वप्नफलद्रष्टुर्योग्यता :-

अथ नानाविधान् ग्रन्थान् समालोच्यावलोड्य च ।
अस्मिन् द्वितीये कल्लोले शुभस्वप्नफलं ब्रुवे ।।१।।
यस्य चित्तं स्थिरीभूतं समाधातुश्च यो नरः ।
तत्प्रार्थितं च बहुशः स्वप्ने कार्यं प्रदृश्यते ।।२।।

अब क्रम प्राप्त द्वितीय कल्लोल में अनेक प्रकार के ग्रन्थों की समीक्षा कर तथा उनका आलोडन कर शुभस्वप्नों के शुभफल को कह रहा हूँ । जिस मनुष्य का चित्त स्थिर है तथा जिस मनुष्य का शरीर समधातु (वात-कफ-पित्त और कफ रूप त्रिधातु) यानी वात-पित्त और कफ की मात्रा संतुलित है । (स्वस्थ्य व्यक्ति में धातु सम होता है ।) उसके द्वारा इच्छित या प्रार्थित स्वप्न प्रायशः कार्य की सूचना दे देता है। आशय यह है कि स्वप्न में दैवी आदेश उसी व्यक्ति को मिलता है जिसकी चित्तवृत्ति और शरीर दोनों ही स्वस्थ हों ।

स्वप्नकारणम् :-

स्वप्नप्रदा नव भुवि भावाः पुंसां भवन्ति हि ।
श्रुतं तथानुभूतं च दृष्टं तत्सदृशं तथा ।।३।।
चिन्ता च प्रकृतिश्चैव विकृतिश्च तथा भवेत् ।
देवाः पुण्यानि पापानीत्येवं जगतीतले ।।४।।

मनुष्य के फल को प्रदर्शित करने वाले नौ भाव पृथ्वी पर प्रसिद्ध है, जैसे--(१) श्रुत (सुना हुआ)२. अनुभूत (अनुभव किया हुआ) ३. दृष्ट (देखा हुआ) ४. चिन्ता (मानसिक द्वन्द्व से उभरी हुई) ५. प्रकृति (स्वभाव के कारण उत्पन्न) ६. विकृति (जो मूल का विलोम हो) ७. देव (देवता से प्रेरित या दृष्ट) ८.पुण्य (जप, तप, धर्मादि से दृष्ट) ९. पाप (हत्या, षड्यन्त्र एवं अपराध के कारण दृष्ट)। इन्हीं नौ भावों के अनुरूप किसी भी मनुष्य को [illegible] दिखलाई पड़ते हैं ।

तन्मध्य आद्यं षट्कं तु शिवं वाशिवमप्यथ ।
अन्त्यं त्रिकं तथा नृणामचिरात्फलदर्शकम् ।।५।।
प्राज्ञेन पुरूषेणेहावश्यं ज्ञेयः स्वचेतसि ।
स्वप्नो विचार्यस्तस्यार्थस्तथा चैकाग्रचेतसा ।।६।।

इनमें से प्रारम्भ के ६ः संख्या तक के स्वप्नभाव शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के फल देते है । अंतिम तीन स्वप्नभाव मनुष्यों के लिए यथाशीघ्र फलदायक होते है । बुद्धिमान् मनुष्य को एकाग्र चित्त होकर अपने मन में दृष्ट स्वप्न और उसके भविष्यत् अर्थ को गंभीरतापूर्वक अवश्य विचारना चाहिए ।

व्यर्थस्वप्नः--

रतेर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः ।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत् ।।७।।

रति (मैथुन), हास्य, शोक, भय, मल-मूत्र और प्रणष्ट (चोरी गयी वस्तु की चिन्ता से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ चला जाता है ; अर्थात् उस समय स्वप्न का कोई तात्विक अर्थ नहीं रहता ।

धातुक्षोभजनितस्वप्नफलम् :-

कफप्लुतशरीरस्तु पश्येद् बहुजलाशयान् ।
नद्यः प्रभूतसलिला नलिनानि सरांसि च ।।८।।

जिस शरीर में कफ की अधिकता हो वह स्वप्न में जलाशयों को देखता है । प्रभूत (अधिक) जल वाली नदियों तथा कमल से युक्त सरोवरों को देखता है ।

स्फटिकै रचितं सौधं तथा श्वेतं च गह्वरम् ।
तारागणं च चन्द्रं च तोयदानां च मण्डलम् ।।९।।
रसांश्च मधुरान् दिव्यान् फलानि विविधानि च ।
आज्यं यज्ञोपकरणं यज्ञमण्डपमुत्तमम् ।।१०।।

कफाधिक्य से युक्त शरीर को स्फटिक के बने भव्य भवन, उज्ज्वल गुफायें, तारागण, चन्द्रमा और मेघों की पंक्तियों दिखलाई देती हैं । अनेक प्रकार के मधुर रस, दिव्य विविध प्रकार के फल, घृत, यज्ञ की सामग्री तथा उत्तम यज्ञमण्डप दिखलाई पड़ता है ।

शुभलङ्कारशालिन्यः पृथुलस्तनमण्डलाः ।
सुलोचनाः पीनशक्थिपरिशोभितमध्यमाः ।।११।।
श्वेतवस्त्रैः श्वेतामाल्यैर्विकासन्त्यश्च योषितः ।
[illegible] प्रपश्यति ।।१२।।

(कफ प्रकृति वाले पुरूष को शुभ अलंकारों से युक्त गृहिणियाँ दिखती है; जिनके स्तनमण्डल प्रशस्त होते है । वे सुन्दर आँखों वाली होतीं है और उनके भरपूर मांसल जंघे होते है एवं सुन्दर कटिभाग से जो सुशोभित हो रही हों (वे दिखलाई देतीं है ।) अपने श्वेत वस्त्रों और श्वेत मालाओं से प्रकाश फैलाती महिलायें दिखलाई पड़ती है । पित्त प्रकृति वाला शरीर (व्यक्ति) प्रज्वलित अग्नि देखता है ।

विद्युल्लतायाश्च तेजस्तथा पीतां वसुन्धराम् ।
निशितानि च शस्त्राणि दिशो दावानलार्दिताः ।।१३।।
फुल्लास्त्वशोकतरवो गांगेयं चापि निर्मलम् ।
किञ्च प्ररूढकोपः संघातपातादिकाः क्रियाः ।।१४।।

विद्युल्लता (आकाशीय तथा कृत्रिम) का तेज तथा पीली पृथ्वी, अत्यन्त तीक्ष्ण शस्त्र, दवानल से व्याप्त दिशायें (पित्त प्रकृति वाले को) दिखलाई पड़ती है। प्रफुल्ल अशोक के वृक्ष, गङ्गा से सम्बन्धित निर्मल भूमि, तयदि अथवा क्रोध से आविष्ट तथा संघात (चोट चपेट) के कारण स्वयं को ऊँचाई से गिरना दिखलाई देता है; पित्त प्रधान व्यक्ति को ।

करोत्यात्मैवेति पश्येज्जलं चापि पिबेद् बहु ।
वातप्रकृतिको यश्च स पश्येत्तुङ्गरोहणम् ।।१५।।
तुङ्गद्रुमांश्च विविधान् पवनेन प्रकम्पितान् ।
वेगगामितुरङ्गांश्च पक्षिभिर्गमनं स्वयम् ।।१६।।

बहुत मात्रा में जल का.पीना, जल देखना, पित्त प्रकृति वाला व्यक्ति स्वप्न मे देखता है । जो वात प्रकृति वाला व्यक्ति होता है वह स्वयं को ऊँचे स्थल पर चढ़ता हुआ देखता है । उच्च विविध वृक्षों को हवा से प्रकम्पित होता देखता है । वेगशाली घोड़ो को देखता है तथा पक्षियों के साथ स्वयं का गमन (उड़ना) देखता है ।

उच्चसौधान् विवादं च कलहं च तथात्मनः ।
आरोहणं च डयनमिति प्रकृतितो भवेत् ।।१७।।
स्वप्नमिष्टं च दृष्ट्वा यः पुनः स्वपिति मानवः ।
तदुत्पन्नं शुभफलं स नाप्नोतीति निश्चितम् ।।१८।।

स्वप्न मे ऊँचा भवन, कलह,अपने से सम्बन्धित विवाद, (शिखरों पर) चढ़ना, उड़ना आदि पित्त प्रकृति के कारण दिखलाई देता है । अभीष्ट स्वप्न को देखकर जो व्यक्ति पुनः सो जाता है तो दृष्ट स्वप्न का फल उसे प्राप्त नहीं होता । ऐसा निश्चित मत है ।

अतो दृष्ट्वा शुभस्वप्नं सुधिया मानवेन वै ।
सूर्यसंस्तवनैर्नेयावशिष्टा रजनी पुनः ।।१९।।
देवानां च गुरूणां च पूजनानि विधाय सः ।
शंभोर्नमस्क्रियां कुर्यात् प्रार्थयेच्च शुभं प्रति ।।२०।।

अतः बुद्धिमान् मनुष्य को निश्चित रूप से शुभस्वप्न देखने के बाद शेष रात्रि जागरण पूर्वक तथा सूर्य संस्तवन पूर्वक व्यतीत करनी चाहिए । शुभस्वप्न देखने के पश्चात् उस व्यक्ति को देवताओं तथा गुरूजनों की पूजा करनी चाहिए। भगवान् शिव को विधिवत् प्रणाम कर शुभ फल की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करनी चाहिए।

ततस्तु स्थविराग्रे वै कथयेत् स्वप्नमुत्तमम् ।
दृष्ट्वा पूर्वमनिष्टं तु पश्चाच्च शुभमेव चेत् ।।२१।।
यः पश्येत् स पुमांस्तस्मात् शुभस्वप्नफलं भजेत् ।
अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात्स स्वपेत्पुमान् ।।२२।।

इसके बाद उत्तम स्वप्नों को वृद्ध व्यक्तियों के सामने निवेदित करे । पहले अनिष्टकारी स्वप्न को देखकर बाद में शुभस्वप्न को यदि देखता है तो वह व्यक्ति शुभस्वप्न के ही फल को प्राप्त करता है; अशुभ का नहीं । यदि अनिष्ट स्वप्न पहले दिखलाई पड़े तो व्यक्ति को दुबारा सो जाना चाहिए ।

रात्रौ वा कथयेदन्यं ततो नाप्नोति तत्फलम् ।
अथवा प्रातरुत्थाय नमस्कृत्य महेश्वरम् ।।२३।।
तुलस्या अग्रतः प्रेच्य प्रप्नुयात् न हि तत्फलम् ।
देवानां च गुरूणां च स्मृतिर्दुःस्वप्ननाशिनी ।।२४।।

अथवा अशुभ स्वप्न को रात्रि में ही किसी दूसरे व्यक्ति से कह देना चाहिये । ऐसा करने के बाद उसका अशुभ फल नहीं मिलता । तुलसी के पौधे के आगे स्वप्न को कहने से अशुभ फल नहीं मिलता।देवताओं और गुरुओं का स्मरण दुःस्वप्न का नाशक होता है ।

तस्माद्रात्रौ स्वापकाले विष्णुं कृष्णं रमापतिम् ।
अगस्तिं माधवं चैव मुचुकुन्दं महामुनिम् ।।२५।।
कपिलं चास्तिकमुनिं स्मृत्वा स्वस्थः सुधीर्जनः।
शयीत तेन दुःस्वप्नं न कदाचित्प्रपश्यति ।।२६।।

इसीलिए रात्रि में सोते समय भगवान् विष्णु, कृष्ण; लक्ष्मीपति, अगस्त ऋषि, माधव, महामुनि मुचुकुन्द, कपिल मुनि, आस्तिक मुनि प्रभृति का स्मरण करना चाहिए । इनका स्मरण कर स्वस्थ बुद्धिमान् व्यक्ति

शयन करे तो इसके प्रभाव से कभी भी दुःस्वप्न नहीं देखता ।

शुभस्वप्नफलम् :-

स्वप्नमध्ये पुमान् यश्च सिंहाश्वगजधेनुजैः ।
युक्तं रथं समारोहेत् स भवेत् पृथवीपतिः ।।२७।।
श्वेतेन दक्षिणकरे फणिना दृष्यते च यः ।
पंचरात्रे भवेत्तस्य धनं दशसहस्रकम् ।।२८।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने को सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल से युक्त रथ पर चढ़ा हुआ देखता है वह राजत्व को प्राप्त करता है । जिस व्यक्ति के दक्षिण हाथ में सर्प काटता है वह पाँच रात के अन्दर दश हजार धन प्राप्त करता है । { यहाँ दशसहस्रकम् उपलक्षण है जिसका अर्थ है विपुल धन }

मस्तकं यस्य वै स्वप्ने यश्च स्वप्नेऽथ मानवः ।
स च राज्यं समाप्नोति च्छिद्यते वा छिनत्ति वा ।।२९।।
लिङ्गच्छेदे च पुरूषो योषिद्धनमवाप्नुयात् ।
योनिच्छेदे कामिनी च पुरूषाद्धनमाप्नुयात् ।।३०।।

जो मनुष्य स्वप्न में मस्तक काटे या जिसका मस्तक काटा जाय वे दोनों ही राज्य प्राप्त करते है ।स्वप्न मे यदि पुरूष लिङ्ग को कटता देखे तो वह स्त्रीधन प्राप्त करता है । यदि स्त्री योनि भंग देखे तो पुरूष धन (या पुरूष से धन) प्राप्त करती है ।

छिन्ना भवेदस्य जिह्वा स्वप्ने स पुरूषोऽचिरात् ।
क्षत्रियः सार्वभौमत्वमितरो मण्डलेशताम् ।।३१।।
श्वेतदन्तिनमारूह्य नदीतीरे च यः पुमान् ।
शाल्योदनं प्रभुङ्क्ते वै स भुङ्क्ते निखिलां महीम् ।।३२।।

जिस व्यक्ति की स्वप्न मे जिह्वा कट जाये तो वह पुरूष (यदि) क्षत्रिय है शीघ्र ही सार्वभौमराजत्व को प्रप्त करता है । क्षत्रिय से इतर वर्ण का व्यक्ति मण्डलेश बनता है (छिन्नजिह्वा के दर्शन से) । उजले हाथी पर चढ़कर जो व्यक्ति नदीतट पर दूध भात खाता है वह सम्प्र पृथ्वी का भोग करता है अर्थात् राजत्व प्रप्त करता है ।

सूर्याचन्द्रमसोर्विम्बं समग्रं ग्रसते च यः ।
स प्रसह्य प्रभुङ्क्ते वै सकलां सार्णवां महीम् ।।३३।।
यः स्वदेहोत्थितं मांसं परदेहोत्थितं च वा ।
स्वप्ने प्रभुङ्क्ते मनुजः स साम्राज्यं समश्नुते ।।३४।।

जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा का संपूर्ण विम्ब ग्रस लेता है वह बल पूर्वक समुद्र सहित समग्र पृथ्वी का भोग करता है । जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर का मांस अथवा दूसरे के शरीर का मांस खाता है वह साम्राज्य को संप्राप्त करता है ।

प्रासाद शृङ्गमासाद्यास्वाद्य चान्नं स्वलंकृतम् ।
अगाधेऽम्भसि यस्तीर्यात्स भवेत् पृथिवीपतिः ।।३५।।
छर्दिं पुरीषमथवा यः स्वदेन्न विमानयेत् ।
राज्यं प्राप्नोति स पुमानत्र नास्त्येव संशयः ।।३६।।

राजभवन के उच्च शृंग (चोटी) पर चढ़ कर जो व्यक्ति उत्तम पक्वान्न को खाता है अथवा जो व्यक्ति स्वप्न में अगाध जल में तैरता दिखलाई देता है वह पृथिवीपति यानि राजा होता है, स्वप्न में जो व्यक्ति वमन और विष्ठा को स्वाद लेकर खाता है, उसकी अभक्ष्य मानकर अवज्ञा नहीं करता वह व्यक्ति राज्य को प्राप्त करता है । इसमें संदेह का अवसर नहीं है ।

मूत्रं रेतः शोणितं च स्वप्ने खादति यो नरः ।
तैरङ्गाभ्यञ्जनं यश्च कुरुते धनवान् हि सः ।।३७।।
नलिनीदलशय्यायां निषण्णः पायसाशनम् ।
यः करोति नरः सोऽत्र प्राज्यं राज्यं समश्नुते ।।३८।।

जो व्यक्ति स्वप्न में मूत्र, रेत (वीर्य या रज) एवं रक्त को खाता है तथा शरीर के अंगों में उबटन या तेल लगाता है वह धनवान् होता है । कमल के पत्रों पर बैठकर जो व्यक्ति खीर को खाता है वह प्रकृष्ट एवं विशाल राज्य को प्राप्त करता है ।

फलानि च प्रसूनानि यः खादति च पश्यति ।
स्वप्ने तस्याङ्गणे लक्ष्मीर्लुठत्येव न संशयः ।।३९।।
यः स्वप्ने चापसंयोगः बाणस्य कुरुते सुधीः ।
सर्वं शत्रुबलं हन्यात्तस्य राज्यमकण्टकम् ।।४०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति फलों और फूलों को खाता है या देखता है उसके आँगन में लक्ष्मी लोटती हैं ।इसमें संदेह नही करना चहिए । स्वप्न में जो व्यक्ति धनुष की डोरी पर बाण का संधान करता है वह अपने शत्रुओं को मारकर निष्कंटक राज्य प्राप्त करता है ।

स्वप्ने परस्य योऽसूयां वधं बन्धनमेव च ।
यः करोति पुमान् लोके धनवान् जायते तु सः ।।४१।।
स्वप्ने यस्य जयो वै स्याद्रिपूणां च पराजयः ।

स चक्रवर्ती राजा स्यादत्र नास्त्येव संशयः ।।४२।।

जो दूसरे से द्वेष करता है, बध या बन्धन करता है वह धनवान् होता है । स्वप्न में जीत हो व शत्रु की हार तो निश्चय ही व्यक्ति चक्रवर्ती राजा बनता है ।

रौप्ये वा काञ्चने पात्रे पायसं यः स्वदेन्नरः ।
तस्य स्यात् पार्थिवपदं वृक्षे शैलेऽथवा स्थिरः ।।४३।।
शैलग्रामवनैर्युक्तां भुजाभ्यां यो महीं तरेत् ।
अचिरेणैव कालेन स स्याद्राजेति निश्चितम् ।।४४।।

चाँदी या सोने के पात्र में जो व्यक्ति खीर का आस्वाद लेता है वह राज्यत्व को प्राप्त करता है। ठीक यही फल (राज्यत्व) वृक्ष या पर्वत पर स्वप्न मे चढ़ने का होता है । पर्वत-जंगल से युक्त पृथ्वी को अपनी भुजाओं से तैरकर जो व्यक्ति पार करता है वह शीघ्र ही राज्यत्व को प्राप्त करता है ।

यः शैलशृङ्गमारूह्योत्तरति श्रममन्तरा ।
स सर्वकृतकृत्यः सन् पुनरायाति वेश्मनि ।।४५।।
विषं पीत्वा मृतिं गच्छेत् स्वप्ने यः पुरुषोत्तमः ।
स भोगैर्बहुभिर्युक्तः क्लेशाद् रोगाद् विमुच्यते ।।४६।।

जो व्यक्ति पर्वत के शिखरों पर चढ़कर बिना परिश्रम के उतर आता है वह सभी कार्यों को सम्पन्न कर सकुशल घर लौट आता है । स्वप्न में जो व्यक्ति विष पीकर मर जाता है वह उत्तम पुरुष अनेक प्रकार के भौतिक सुखों से युक्त तथा क्लेश और रोग से मुक्त होता है ।

यः कुंकुमेनरक्ताङ्गः स्वप्ने सोद्वाहमीक्षते ।
जगन्मध्ये धनैर्धान्यैर्युक्तः सुखमवाप्नुयात् ।।४७।।
यः शोणितस्य नद्यां वै स्नायाद्रक्तं पिबेच्च वा ।
यस्याङ्गाद्रुधिरस्रावो धनवान् स भवेद् ध्रुवम् ।।४८।।

स्वप्न में जो व्यक्ति कुंकुम (रोली) से शरीर रंग कर अपना विवाह देखता है वह संसार मे धनधान्य से परिपूर्ण होकर सुख प्राप्त करता है । जो व्यक्ति स्वप्न में खून की नदी में स्नान करता है या खून पीता है, अथवा जिसके अंग से खून बहता है वह निश्चित ही धनी होता है ।

यः स्वप्नेऽन्यशिरश्छिन्द्याद्यस्य वाछिद्यते शिरः ।
स सहस्रधनं प्राप्य विविधं सुखमश्नुते ।।४९।।
जिह्वायां यस्य वै स्वप्ने यश्च वान्यस्य लेखयेत् ।
विद्या तस्य प्रसन्ना स्याद्राजा भवति धार्मिकः ।।५०।।

जो व्यक्ति स्वप्न में दूसरे का सिर काट देता है अथवा उसका सिर कोई दूसरा काटता है वह एक हजार स्वर्ण मुद्रायें प्राप्त कर सुख पूर्वक रहता है । स्वप्न

में जिसकी जिह्वा पर कोई लिखे या स्वयं वह व्यक्ति किसी की जिह्वा पर लिखे उसके ऊपर सरस्वती प्रसन्न होती है तथा वह धार्मिक राजा बनता है ।

नारी या पौरुषं रूपं नरः स्त्रीरूपमप्यथ ।
पश्येत्स्वस्यैव चेत्स्वप्ने द्वयोः स्यात्प्रीतिरुत्तमा ।।५१।।
आरूह्योन्मत्तकरिणं पुरुषं वा प्रजागृयात् ।
बिभीयान्न च यः स्वप्नेऽतुलं तस्य भवेद्धनम् ।।५२।।

यदि कोई व्यक्ति स्वप्न में अपना ही स्वरूप स्त्री रूप में देखे या कोई स्त्री अपने को पुरुष रूप में देखे तो उन दोनो में परस्पर उत्तम प्रेम बढ़ता है । यदि कोई पुरुष अपने को उन्मत्त हाथी पर स्वप्न में चढ़ा हुआ देखे और जाग जाए साथ ही वह डरे नहीं तो उसके पास अतुल सम्पत्ति होती है ।

अश्वारूढः क्षीरपानं जलपानमथापि वा ।
स्वप्ने कुर्यात् यः पुमांश्च स राजा भवति ध्रुवम् ।।५३।।
स्वप्ने राजा भवेद्यश्च यश्च चौरो भवेत्पुनः ।
पुनः स्वामी भवेत् यश्च स राजा स्यादसंशयः ।।५४।।

जो पुरुष स्वप्न में घोड़े पर चढ़कर दूध पिये या घोड़े पर चढ़ा हुआ जलपान करे वह सुनिश्चित ही राजा होता है । जो पुरुष स्वप्न में पहले राजा बने पुनः चोर बने, बाद में चोर हो कर स्वामी बन जाय वह निश्चय ही राजा या राजतुल्य होता है ।

मूत्रैः पुरीषैर्लिप्ताङ्गः श्मशाननिलयो नरः ।
खादेन्मूत्रं पुरीषं च स भवेत्पृथिवीपतिः ।।५५।।
गौरानडत्समायुक्तं यानमारूह्य यो नरः ।
उदीचीमथवा प्राचीं दिशं गच्छेत्स भूपतिः ।।५६।।

जो पुरुष स्वप्न में अपने अङ्गों में मूत्र या विष्ठा लिपटा हुआ देखता है अथवा श्मशान में अपना घर देखता है या मूत्र और विष्ठा को पीता-खाता देखे तो वह राजा होता है । सफेद बैल से जुते हुए यान (गाड़ी) पर चढ़ कर जो पुरुष उत्तर दिशा या पूर्व दिशा की ओर जाता है वह राजा बनता है ।

स्वप्नमध्ये यस्य देहः केशैर्विरहितो भवेत् ।
तमथो नरशार्दूलं लक्ष्मीरायाति दासीवत् ।। ५७।।
स्वप्नमध्ये स्वस्य गेहं पातयित्वा पुनर्नवम् ।
[illegible]

जो पुरूष स्वप्न के बीच में अपने शरीर को बाल रहित देखता है उस पुरूष व्याघ्र को निश्चित ही दासी की तरह लक्ष्मी घर में आती है । स्वप्न के बीच में जो व्यक्ति अपना पुराना घर ढहाकर नया घर बनाता है उस पुरूष के सारे व्यसन (रोग) नष्ट हो जाते है ।

स्वप्ने यो नीलवर्णां गां धनुर्वा पादरक्षणम् ।
प्राप्नुयात्स प्रवासाद्वै सत्वरं स्वगृहं विशेत् ।।५९।।
अपानद्वारतो यश्च जलपानं करोति वै ।
स्वप्ने तस्य धनंधान्यं विपुलं जायते ध्रुवम् ।।६0।।

जो व्यक्ति स्वप्न में नीले रंग की गाय अथवा धनुष या जूता प्राप्त करता है वह विदेश जाकर शीघ्र घर लौट आता है । जो पुरूष स्वप्न में अपानमार्ग (गुदामार्ग) से जलपान करता है उसको निश्चित विपुल धन धान्य की प्राप्ति होती है।

अपादमस्तकं यश्च निगडैर्बध्यते नरः ।
पुत्ररत्नं प्रपश्येत्स ध्रुवं तत्र न संशयः ।।६१।।
यो ग्रामं नगरं वापि स्वप्ने यो वेष्टयेन्नरः ।
मंडलाधिपतिः स स्याद्ग्राममुख्योऽथवा भवेत् ।।६२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति पैर से मस्तक तक बेड़ियो में बांधा जाता है वह निश्चित रूप से पुत्ररत्न को प्राप्त करता है । इसमें सन्देह नहीं है । जो व्यक्ति स्वप्न मे गाँव या नगर को घेरता (आक्रमण करता) है वह मण्डलाधिपति या ग्राम प्रमुख होता है ।

निम्नायामथ भूम्यां यः पतित्वा पुनरुत्पतेत् ।
बुद्धिस्तस्य प्रसन्ना स्याद्धनं धान्यं समश्नुते ।।६३।।
यस्योत्सङ्गः फलैर्धान्यैः प्रसूनैर्वापि पूर्यते ।
तस्य लक्ष्मीः प्रतिदिनं वृद्धिमेव समाप्नुयात् ।।६४।।

जो व्यक्ति स्वप्न में खाई में गिर कर पुनः उठ खड़ा होता है उसकी बुद्धि निर्मल होती है और धन धान्य को प्राप्त करता है । स्वप्न में जिसकी गोद फल या फूल से भर जाती है उसकी लक्ष्मी प्रतिदिन वृद्धि को ही प्राप्त करती है ।

स्वप्ने यं मक्षिका दंशा मशकाश्चापि मत्कुणाः।
खादन्ति वा वेष्टयन्ति स स्त्रीमाप्नोत्यनुत्तमाम् ।।६५।।
यः स्वप्ने शोकसंतप्तः सरितः कमलानि च ।
आरामान्पर्वतांश्चैव पश्येच्छोकात् स मुच्यते ।।६६।।

स्वप्न में जिस पुरूष को मक्खी, मच्छर या खटमल काटते है या चारों तरफ से घेर लेते है वह व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न पत्नी को प्राप्त करता है । जो व्यक्ति स्वप्न में शोक से ग्रस्त होकर नदी, कमल, उद्यान या पर्वत को देखता है वह शोक से मुक्त हो जााता है ।

फलं पीतं तथा पुष्पं रक्तं वा यस्य दीयते ।
सुवर्णलाभस्तस्य स्यात्पद्मरागं च वा लभेत् ।।६७।।
स्वप्ने यः कमलामूर्तिं शुद्धवस्त्रां प्रपश्यति ।
लक्ष्मीः सरस्वती वाथ प्रसन्ना तस्य जायते ।।६८।।

जो पुरूष स्वप्न मे पीलाफल, लालफूल, जिसको देता है उसको सुवर्ण लाभ होता है अथवा पद्मरागमणि को पाता है, जो स्वप्न में श्वेत वस्त्र धारिणी लक्ष्मी को देखता है उसके ऊपर लक्ष्मी या सरस्वती प्रसन्न होती है ।

शुभ्रांगरागवसनैः परिभूषितविग्रहा।
आलिङ्गति च यं नारी तस्य श्रीविश्वतोमुखी ।।६९।।
श्रोत्रयोः कुण्डलयुगं मुक्ताहारो गले तथा ।
मस्तके मुकुटो यस्य स राजा भवति ध्रुवम् ।।७०।।

शुभ्र लेप एवं वस्त्र से सुसज्जित विग्रह वाली नारी जिसका आलिंगन करती है उसकी लक्ष्मी विश्वतोमुखी होती है यानि वह विश्व के धनिकों में गिना जाता है । जो स्वप्न में दोनो कानों में कुण्डल तथा गले में मोती की माला एवं मस्तक पर मुकुट देखता है वह निश्चय ही राजा बनता है ।

स्वप्ने यस्य भवेच्छोको परिदेवयते च यः ।
रोदिति म्रियते यश्च तस्य स्यात्सर्वतः सुखम् ।।७१।।
गृहांगणे यस्य पुंसः कुमुदानि करांजलौ ।
गृहीत्वोपद्धतिं कुर्यात्तस्य स्याद्राज्यमुत्तमम् ।।७२।।

स्वप्न में जो शोक को, परिताप को प्राप्त करता है अथवा स्वप्न में मृत्यु एवं रूदन देखता है वह चर्तुदिक् सुखों से घिर जाता है । जिस व्यक्ति के घर के आँगन में अंजली में कमलिनी फूल कोई एकत्र करे वह उत्तम राज्य प्राप्त करता है ।

रत्नयुक्तं च पर्यङ्के शयनं यः करोति वै ।
सिंहासनेऽथवा तिष्ठेत्तस्य राज्यमकण्टकम् ।।७३।।
सुवेषधारिभिः पुंभिः पूज्यते यः पुमानिह ।
धनैर्धान्यैः समायुक्तः स भवेन्मानवो भुवि ।।७४।।

रत्न जटित शैय्या पर जो शयन करता है अथवा सिंहासन पर बैठता है वह अकण्टक राज्य को प्राप्त करता है। जो स्वप्न में सुन्दर वेषधारी पुरूषों के द्वारा पूजा जाता है वह धनधान्य से युक्त होकर पृथ्वी पर श्रेष्ठ मानव बनता है।

पाणौ वीणां समादाय जागृयाद्यो नरोत्तमः ।
कन्यां कुलीनां मान्यां च लभते नात्र संशयः ।।७५।।
स्वदेहवसितं वस्त्रं शयनं सौध एव च ।
यस्य स्वप्नेऽग्निना दग्धं तस्यश्रीः सर्वतोमुखी ।।७६।।

जो पुरूष स्वप्न में हाथ में वीणा लेकर जागता है वह कुलीन एवं मान्य स्त्री को प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है। अपने शरीर पर धारण किया हुआ वस्त्र, शयन स्थान, भव्य मकान आदि स्वप्न में अग्नि से भस्म हो जाय तो उस व्यक्ति को सर्वतोमुखी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

घनवस्त्रैर्वेष्टितो यः शुभ्रैर्दह्येत चाग्निना ।
स श्रेयो भाजनं लोके भवत्येव न संशयः ।।७७।।
ऋतुकालोद्भवं पुष्पं फलं वा भक्षयेच्च यः ।
विपत्तौ तस्य लक्ष्मीः स्यात्प्रसन्ना नात्र संशयः ।।७८।।

उज्ज्वल सान्द्र वस्त्र से घिरा हुआ व्यक्ति यदि अग्नि से जल जाये तो संसार में वह निःसन्देह श्रेय (कल्याण) का पात्र होता है। ऋतुकाल में उत्पन्न फूल एवं फल को जो स्वप्न में खाता है विपत्ति में भी उसके ऊपर लक्ष्मी हमेशा प्रसन्न रहती है। इसमें सन्देह नहीं है।

बहुवृष्टिनिपातं यः पश्येत्स्वप्ने समाहितः ।
ज्वलन्तमनलं वापि तस्य लक्ष्मीर्वशंगता ।।७९।।
पशुं वा पक्षिणं वापि हस्तेनास्पृश्य यो नरः ।
विबुध्येत सुकन्या तं वृणुयान्नात्र संशयः ।।८०।।

जो पुरूष स्वप्न में एकाग्रचित्त होकर सघन वर्षा को देखता है अथवा प्रज्वलित अग्नि को देखता है तो भी लक्ष्मी उसके वश में होती है। स्वप्न में जो व्यक्ति पशु या पक्षी को अपने हाथ से छूकर जागता है उसे सुंदर कंन्या मिलती है। इसमें सन्देह नही है।

गोवृषं मानुषं सौधं पक्षिणं कुञ्जरं गिरिम् ।
समारुह्य पिबेत्तोयनिधिं स नृपतिर्भवेत् ।।८१।।
स्वमस्तकोपरितनं गृहं यस्य प्रपश्यतः ।
[illegible] स साम्राज्यमवाप्नुयात् ।।८२।।

गाय, बैल, मनुष्य, महल, पक्षी, हाथी या पर्वत पर चढ़कर स्वप्न में जो समुद्र के जल का पान करता है वह राजा बनता है । अपने मस्तक के ऊपर का गृह भाग जिसके देखते देखते जल उठता है वह सात रात्रि के अन्दर साम्राज्य प्राप्त करता है ।

स्वप्ने पितॄन् यः प्रपश्येतस्य गोत्रं प्रवर्धते ।
हिरण्यं च प्रसादश्च नृपतेर्नास्ति संशयः ।।८३।।
शीते पयसि यः स्नानं जलक्रीडामथापि वा।
कुरुते तस्य सौभाग्यं वर्धते हि दिने दिने ।।८४।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अपने पितरों को देखता है उसका गोत्र बढ़ता है यानि पुत्र प्राप्ति होती है, स्वर्ण एवं राजा की कृपा प्राप्ति होती है । इसमें सन्देह नहीं है । जो स्वप्न में ठण्डे जल में स्नान या जलक्रीड़ा करता है उसका सौभाग्य निश्चित ही दिन प्रतिदिन अभिवृद्ध होता है ।

मातरं-पितरं देवान्साधून्भक्त्या प्रपश्यति ।
तस्य रोगः प्रणष्टः स्यादन्यथा रोगभाग्भवेत् ।।८५।।
श्वेतं विहंगं तुरगं मातंगं सदनं च वा ।
अधिरोहेत्प्रपश्येद्वा साम्राज्यं स समश्नुते ।।८६।।

माता-पिता, देवता तथा साधुगण को जो भक्ति पूर्वक स्वप्न मे देखता है उसके रोग नष्ट हो जाते है । जो भक्ति पूर्वक नहीं देखता है उसे रोग प्राप्त होता है । उज्ज्वल पक्षी, उज्ज्वल घोड़ा, हाथी या मकान को जो स्वप्न में देखता है या उस पर चढ़ता है वह साम्राज्य का भोग करता है ।

धान्यराशिं गिरेः शृङ्गं फलितं वा वनस्पतिम् ।
अधिरुह्य च यः स्वप्ने जागृयात्तस्य सम्पदः ।।८७।।
स्वप्ने क्षीरमयं वृक्षं समारुह्य प्रजागृयात् ।
धनधान्य-समृद्धिर्हि तस्य स्यान्नात्र संशयः ।।८८।।

धान्य राशि के ऊपर, शिखर पर अथवा फले हुए वृक्षों पर चढ़कर स्वप्न में जो जाग जाता है उसको सम्पत्ति मिलती है । स्वप्न में दुग्धवाले वृक्ष पर चढ़कर जो जाग जाता है उसकी धन धान्य समृद्धि निश्चित ही बढ़ती है ।

इन्द्रायुधं सूर्यरथं मंदिरं शंकरस्य च ।
यः प्रपश्येत्स्वप्नमध्ये धनं तस्य समृध्नुयात् ।।८९।।
प्राकारं तोरणं श्वेतच्छत्रं यः स्वप्न ईक्षते ।
धनं धान्यं संततिश्च तस्य वृद्धिमवाप्नुयात् ।।९०।।

जो व्यक्ति स्वप्न के बीच मे इन्द्रधनुष, सूर्यरथ तथा भगवान् शंकर के मंदिर को देखता है उसका धन अभिवृद्ध होता है । जो व्यक्ति स्वप्न मे परकोटा, ध्वजा तथा छत्र को देखता है उसका धन-धान्य तथा संतति अभिवृद्ध होती है ।

स्वप्ने यस्य भवेत्स्पर्श उल्कानां भगणस्य च ।
तडितां तोयदानां च शुभं तस्य भवेद्ध्रुवम् ।।९१।।
जलधीनां नदीनां च यानमापूपपाचनम् ।
स्वप्ने यः कुरुते तस्य धनं वृद्धिमवाप्नुयात् ।।९२।।

स्वप्न में जिसका स्पर्श धूमकेतु अथवा नक्षत्र से होता है या विद्युत व मेघो से होता है उसका निश्चित ही शुभ होता है । समुद्र या नदी को जो यान द्वारा तैरता है अथवा अपूप (मालपुआ, मिष्ठान्न) को खाता है उसका धन वृद्धि को प्राप्त होता है ।

स्वप्ने मृण्मयभाण्डानां धेनूनां वा चतुष्पदाम् ।
भूमण्डले च साम्राज्यं राज्यं तस्य भवेद् ध्रुवम् ।।९३।।
स्वप्ने यस्य मुखे दोहो धेनोः स्याच्छत्रुनाशनम्।
वीणां च वादयेद्यो वै धनं तस्य समृध्नुयात् ।।९४।।

स्वप्न में मिट्टी के भाण्डों को, गायों या चौपायों को जो देखता है उसका भूमण्डल पर विशाल साम्राज्य खड़ा होता है । स्वप्न में जिसके मुख में उष्णगो-दूध की धारा गिरती है उसके शत्रुओं का नाश होता है । स्वप्न में जो वीणा बजाता है उसके धन की वृद्धि होती है ।

कृष्णागरु च कर्पूरकस्तूरी चंदनांबुदाः ।
यस्य दृष्टिपथं यान्ति लिप्यन्ते वा स मानभाक् ।।९५।।
मित्राणामथ बन्धूनामलंकृतशरीरिणाम् ।
बधूनां कमलानां च दर्शनं शुभदायकम् ।।९६।।

स्वप्न में काला अगर, कर्पूर, कस्तूरी, चन्दन या मेघ जिसकी दृष्टिपथ में आते है या शरीर में लिपटते है वह सम्मान का पात्र होता हं यानि उसे शीघ्रसम्मान मिलता है । स्वप्न में मित्रों का, भाइयों का, सुसज्जित व्यक्तियों का, बन्धुओं का या कमल पुष्पों का दर्शन शुभदायक होता है ।

कलविंकं नीलकण्ठं चापं सारसमेव च ।
दृष्ट्वा स्वप्ने जागृयाद्यः स भार्यां लभते ध्रुवम् ।।९७।।
धेनोर्दोहनभाण्डे यः सफेनं क्षीरमुत्तमम् ।
स्थितं पिबति यः स्वप्ने सोमपस्तस्य मङ्गलम् ।।९८।।

जो कलविंक (धब्बादार पक्षी), नीलकण्ठ, खंजन एवं सारस को स्वप्न में देखकर जाग जाता है वह निश्चित ही पत्नी को प्राप्त करता है । जो पुरूष गो दोहन वाले पात्र में फेन युक्त उत्तम दुग्ध को पीता है तथा जो स्वप्न में सोमरस (आसव) पान करता है उसका मंगल होता है ।

गोधूमानां यस्य लाभो दर्शनं वा भवेद्यदि ।
यवानां सर्षपाणां च तस्य विद्यागमो भवेत् ।।९९।।
राजानो ब्राह्मणा गावो देवाश्च पितरस्तथा ।
स्वप्ने ब्रूयुर्यच्च यस्य तत्तत्स्यान्नैव संशयः ।।१००।।

जिसे स्वप्न में गेहूँ का दर्शन या लाभ होता है अथवा जौ या सरसो का दर्शन या लाभ होता है उसको विद्या की प्राप्ति होती है । राजागण, ब्राह्मणों, गौवों, देवों तथा पितरों का स्वप्न में दिया हुआ आदेश उसी रूप में फलीभूत होता है इसमें सन्देह नही है ।

यो भुजायांध्वजं पश्येन्नाभौ वल्लीं तरुं तथा ।
स्याल्लक्ष्मीस्तस्य वै दासी तिलमात्रं न संशयः ।।१०१।।
य आत्मानं स्वप्नमध्ये पिबन्तं धूममीक्षते ।
तस्य लक्ष्मीः प्रसन्ना स्यादत्र नास्त्येव संशयः ।।१०२।।

जो स्वप्न में अपनी बांह में ध्वजा को, नाभि में लता को उत्पन्न देखता है लक्ष्मी उसकी दासी बनती है । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है । जो स्वप्न में अपने को धुआँ पीते देखता है उसके ऊपर लक्ष्मी प्रसन्न होती है । इसमें किसी प्रकार का सन्देह नही है ।

धूमज्वाला विरहितं वह्निं यो गाहते नरः ।
ग्रसते वा स्वप्नमध्ये तस्य लक्ष्मीर्भवेद्दृढा ।।१०३।।
अगम्य योषिति गतावभक्ष्यस्य च भक्षणे ।
शंकाविरहितं पुंसां भवन्ति शतशो रमाः ।।१०४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति धूम से या लपट से अग्नि स्नान करता है या ऐसी अग्नि को खाता है उसकी लक्ष्मी सदा स्थिर होकर निवास करती है । स्वप्न में अगम्य (जिससे शारीरिक सम्बन्ध किसी कारण विशेष से वर्ज्य हो) स्त्री के पास जाकर अभक्ष्य (अखाद्य) पदार्थ में शंका बुद्धि न रखकर भक्षण करे उसे सैकड़ों स्त्रियाँ प्राप्त होती है।

स्वप्ने विहङ्गहरिणशङ्खमीनाब्धिशुक्तयः ।
करे भवन्ति यस्यासौ धनाढ्यः प्रार्थितोभवेत् ।।१०५।।
वसुन्धराया ग्रसनं सेतोर्वा बन्धनं च यः ।
स्वप्ने यः कुरुते धीमांस्तस्य संपत्समृध्नुयात् ।।१०६।।

स्वप्न मे जो व्यक्ति पंक्षी, हरिण, शंख, मछली और सीपियों को हाथ मे लेता है वह धनवान् और सुप्रसिद्ध होता है, जो व्यक्ति स्वप्न मे पृथ्वी को ग्रसता है अथवा पुल को बंधता है वह बुद्धिमान् पुरुष सम्पत्ति को प्राप्त करता है ।

चतुरंगबलं पश्येदात्मानं वा मृतं तथा ।
कदापि तस्य सम्पत्तेर्न नाशः स्यादिति स्मृतिः ।।१०७।।
मुक्ताफलं विद्रुमं वा वल्लीं चाथ कपर्दिकाम् ।
यः प्राप्नोति प्रपश्येद्वा न चिरेण धनं लभेत् ।।१०८।।

जो व्यक्ति स्वप्न में चतुरंगिणी सेना देखता है अथवा अपने को मरा हुआ देखता है उसकी संपत्ति का नाश कभी नही होता । ऐसा स्मृति कहती है । जो व्यक्ति स्वप्न मे मोती, मूँगा या कपर्दिका (कौड़ी) प्राप्त करता है उसको शीघ्र धनलाभ होता है ।

केयूरहारमुकुट -- ग्रैवेयकझषाङ्गदम् ।
स्वप्ने प्राप्नोति वा पश्येत्तस्य लक्ष्मीर्निरन्तरम् ।।१०९।।
कर्णाभरणलालाटभूषणं -- पत्रवल्लरीम् ।
स्वप्न यः प्रेक्षते धन्यस्तस्य वित्तं प्रपूर्यते ।।११०।।

केयूर (बाजूबन्द), हार, मुकुट, गले का अर्धचन्द्र या मत्स्याकृति आभूषण जो स्वप्न में प्राप्त करता है या देखता है उसको निरन्तर लक्ष्मी प्राप्त होती रहती है । कर्णाभरण (कर्णफूल), ललाट आभूषण (टीका) और स्वर्ण पत्रलता जैसा आभूषण जो देखता है वह धन्य व्यक्ति धन से भर जाता है ।

नन्द्यावर्तः स्वस्तिकश्च दूर्वामाङ्गल्यदोरकः ।
स्वप्ने दृष्टिपथं यायाद्यस्य स स्यान्नृपाग्रणीः ।।१११।।
व्यजनांकुशवज्राणि भाजनध्वजतोरणान् ।
स्वप्ने यः पश्यति पुमान्स्पृशेद्वा स प्रवर्धते ।।११२।।

नदी की भँवर (या नन्दीवर्त शंख), स्वस्तिक चिह्न, दूर्वा और मौली (नारा) जिसको स्वप्न में दिखे वह राजाओं में अग्रणी होता है । पंखा, अंकुश, वज्र, पात्र (वर्तन) ध्वज एवं तोरण पताका को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है या छूता है वह अभिवृद्ध होता है ।

विलासिनी कुचाभोगपरिमर्दनचाटुभिः ।
क्रीडाभी रमते यश्च स स्त्रीधनमवाप्नुयात् ।।११३।।
खड्गपट्टिशशार्ङ्गासिपुत्रीचक्रगदाः शिताः ।
स्वप्ने पश्यति [illegible] स लभते महीम् ।।११४।।

स्वप्न में सुन्दर स्त्री के स्तनमण्डल का मर्दन करने वाला, विविध चाटूक्ति से रंजन करने वाला व्यक्ति (यथार्थ में) स्त्रीधन प्राप्त करता है । स्वप्न में समुज्जवल तलवार, पट्टिश (चौड़े फाल का अस्त्र विशेष) धनुष, छुरिका, चक्र और गदा देखने वाला व्यक्ति यदि पाञ्चजन्य शंख को देखे तो पृथ्वी को प्राप्त करता है यानि राजा बनता है ।

शातकौम्भविदूरेजवज्र -- भूषितमेदिनीम् ।
स्वप्ने यः पश्यति पुमान्स स्याच्छुभशतैर्युतः ।।११५।।
तुलाया तोलनं पश्ययेद्धान्यशस्त्रादिर्वस्तुनः ।
शुभ-लाभोभवेत्तस्य दर्शनं वा करोति यः ।।११६।।

जो व्यक्ति स्वप्न मे स्वर्ण की भूमि को हीरो से विभूषित देखता है वह सैकड़ो शुभ से युक्त होता है । जो व्यक्ति स्वप्न में तराजू से धान्य पदार्थ और शस्त्र (हथियार) को तोलते हुए देखता है उसको शुभलाभ होता है ।

शालितन्दुलमुद्गानां कणान्पश्यत्यथ स्वयम् ।
आदत्ते करमध्ये वा भुङ्क्ते वा स भवेद्धनी ।।११७।।
वैकुण्ठपीठनिलयं चतुर्भुजधुरंधरम् ।
श्रीहरिं वीक्षयेत्स्वप्ने स स्याद्योगिवरोनरः ।।११८।।

शालि के चावल (फलाहार वाला धान्य), मुद्गल (किन्नी) कणों को जो स्वयं देखता है अथवा हाथ में लेता है या खाता है वह धनी होता है । वैकुण्ठ पीठ के आवास के आधारभूत स्वामी चतुर्भुज भगवान विष्णु को स्वप्न में जो व्यक्ति देखता है वह श्रेष्ठ योगी या योगियों में श्रेष्ठ पुरुष बनता है ।

लक्ष्मीं सरस्वतीं सूर्यबिम्बं गोत्रस्य देवताम् ।
स्वप्ने दृष्ट्वा जागृयाद्यः स धन्यो मान्य एव च ।।११९।।
सरोवरं सागरं च प्रपूरितजलैर्युतम् ।
मित्रनाशं च यः पश्येदनिमित्तं धनं लभेत् ।।१२०।।

जो भगवती लक्ष्मी, भगवती सरस्वती, सूर्य का विम्ब तथा गोत्र के देवता का स्वप्न मे दर्शन कर जागता है वह धन्य और सर्वमान्य होता ही है । पूर्णजल सरोवर (तालाब), समुद्र एवं मित्र के नाश को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह विना किसी कारण के (अचानक,अकारण) धन को प्राप्त करता है ।

स्वप्नमध्ये देवताभिर्दत्तं पीयूषमास्वदेत् ।
यः स स्यात्पृथिवीपालो नृपाणां विदुषां च वा ।।१२१।।
सुगन्धपुष्पप्रालम्बं वीक्षते लभते च यः ।
कण्ठमध्ये क्षिपति च स नृपालो भवेद्ध्रुवम् ।।१२२।।

स्वप्न के बीच में (कुछ न कुछ देखते हुए स्वप्न के बीच) देवताओं द्वारा दिया गया अमृत जो व्यक्ति चखता है वह राजाओं का पालक राजा या विद्वानों का पालक राजा होता है । जिस पुरुष को स्वप्न में सुगन्धित फूलों की माला दिखलाई पड़े या प्राप्त हो या कण्ठ में आकर गिर पड़े वह निश्चितरूप से राजा होता है । इसमें सन्देह नहीं है ।

आसमुद्रक्षितीशो यः स्वप्नमध्ये भवेन्नरः ।
क्षीरान्नभुग्भवेद्वापि सलभेत्सुखमुत्तमम् ।।१२३।।
गानवेदगजानां च सिंहसैन्धवयोरपि ।
ध्वनिं यः शृणुयान्मर्त्यः प्राप्नोति स धनं बहु ।।१२४।।

जो पुरुष स्वप्न में समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा बनता है अथवा दूध और अन्न का भोग करता हो वह उत्तम सुख को प्राप्त करता है । जो व्यक्ति स्वप्न मे संगीत, वेद ध्वनि, हाथी, सिंह और घोड़े की आवाज सुनता है वह विपुल धन को प्राप्त करता है ।

मेरोरधित्यकायां वा कल्पपादपशेखरे ।
अधिरूह्य प्रपश्येद्यो नीलं तृणमयं धनी ।।१२५।।
गगने तारकाकामधेनुपंक्तिं प्रपश्यति ।
शुभ्राणि चाभ्रखण्डानि लभते स धनं बहु ।।१२६।।

मेरू (पर्वत) की अधित्यका (ऊपरी घाटी) अथवा कल्पवृक्ष के शिखर पर चढ़ कर जो व्यक्ति (स्वप्न में) धान्यपूर्ण नीली पृथ्वी को देखता है वह धनी होता है । आकाश में ताराओं, कामधेनु गायों की पंक्ति और शुभ्र (उज्जवल) बादलों के खण्डों को जो देखते है वे बहुत धन प्राप्त करते है ।

पुन्नागचंपकतिलनागकेसरमालतीः ।
शिरीषं च प्रपश्येद्यः स्वप्ने तस्य शुभं भवेत् ।।१२७।।
कदलीं दाडिमंचाथ नारिंगं मातुलुंगकम् ।
यदि पश्येद्भक्षयेद्वा शुभं स लभते ध्रुवम् ।।१२८।।

जो व्यक्ति स्वप्न में पुन्नाग (नागकेशर), चमेली, तिल और नागकेशर की लता तथा शिरीष पुष्प को देखता है वह शुभता को प्राप्त करता है । केला, अनार, संतरे का पेड़, बिजौरा नीबू को जो व्यक्ति स्वप्न मे देखता है या खाता है वह निश्चित ही शुभ फल को प्राप्त करता है ।

कदली प्रभृतीनां च प्रसूनैः संयुता द्रुमाः ।
यदि दृष्टिपथं याता नाशुभं स्यात्कदाचन ।।१२९।।
द्राक्षाराजादनी - पूगनालिकेरफलानि यः ।
स्वप्ने प्रपश्यति नरःस आप्नोत्युत्तमां श्रियम् ।।१३०।।

यदि (स्वप्न में) केला आदि के फूल से लदे वृक्ष दिखें तो उस व्यक्ति का कभी भी अशुभ नहीं हो सकता । अंगूर, अखरोट, खिरनी, सुपारी, नारियल आदि फलों को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह उत्तम सम्पत्ति को प्राप्त करता है ।

अशोकं चंपकं स्वर्णं चन्दनं च कुरंटकम् ।
स्वप्ने यः पश्यति पुमान्स स्याल्लक्ष्मीसमन्वितः ।।१३१।।
एलालवंग - कर्पूर - फलानि सुरभीणि च ।
जातीफलं च खादेद्वा पश्येद्वा स भवेद्धनी ।।१३२।।

अशोक, चम्पा, स्वर्ण (रक्तकटसरैया या गुलाबांस), चन्दन को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह लक्ष्मी तथा धन-धान्य से युक्त होता है । इलायची, लवङ्ग, कर्पूर एवं सुगन्धित फलों को तथा जायफर को जो व्यक्ति स्वप्न में खाता है या देखता है वह धनी होता है ।

कुन्दस्य मल्लिकायाश्च प्रसूनं यो नरोत्तमः ।
स्वप्नमध्ये च लभते पश्येद्वा स भवेद्धनी ।।१३३।।
केतकीं बकुलं चापि पाटलं पुष्पमेव च ।
स्वप्नमध्ये प्रपश्येद्यः स भवेद्धनधान्यवान् ।।१३४।।

जो श्रेष्ठ व्यक्ति कुमुदिनी या मल्लिका के फूल को स्वप्न में प्राप्त करता है या देखता है वह धनी होता है । केतकी, बकुल (मौलश्री) तथा गुलाब के फूल को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह धन-धान्य से युक्त होता है ।

इक्षुवल्लीं नागवल्लीं यः स्वप्ने भक्षयेन्नरः ।
लुंठेद्धस्ते तस्यधनं तिंतिणीफलवीजवत् ।।१३५।।
स्वप्नमध्ये यस्य पुरो धातूनां चोपहारणम् ।
सीसत्रप्वारकूटानां स्थाप्यते स सुखी भवेत् ।।१३६।।

ईख तथा पान की लता (पान) को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है उसके अपने हाथ में इमली के बीज की तरह धन गिरता है । स्वप्न के बीच में जिसके सामने धातुओं का समूह (ढेर) यानि सीसा, रांगा, पीतल आदि लाकर दिया जाता है वह सुखी होता है ।

लौकिकव्यवहारे ये पदार्थाः प्रायशः शुभाः ।
सर्वथैव शुभास्ते स्युरिति नैव विनिश्चयः ।।१३७।।

परन्तु ते शतपथः शुभं दद्युः फलं सदा ।
अशुभा अपि ये केचित्तेऽपि सत्फलदायिनः ।।१३८।।

लौकिक व्यवहार में जो पदार्थ प्रायशः शुभ माने गये है वे जरूरी नहीं कि स्वप्न में भी शुभ फल ही दे लेकिन ये शुभ पदार्थ शतपथ (साधना, यज्ञादि) में शुभ फल ही देते है । लोक व्यवहार में कई अशुभ पदार्थ स्वप्न में शुभ फल देते हैं ।

भवन्ति मनुजानां वै नात्र किंचिद्विरोधनम् ।
यतो लौकिक-भवेनाशुभत्वं तत्र धिष्ठितम् ।।१३९।।
तथापि ते शुभं भावमावहन्ति निदर्शनात् ।
एषा नारायणस्यैव क्लृप्तिरित्येव निश्चयः ।।१४०।।

अशुभ पदार्थो का स्वप्न में दर्शन मनुष्य के लिये विरोधी नहीं है, क्योंकि लोक में जो अशुभ है वह स्वप्न में अशुभ नहीं होता । नारायण की रचना होने के कारण अशुभ पदार्थ स्वप्न में दिखने पर शुभभाव को ही प्रकट करते है ।

इति ज्योतिर्विच्छ्रीधरसंगृहीतस्वप्नकमलाकरे
शुभस्वप्नप्रकरणकथनं नाम द्वितीयः कल्लोलः ।।२।।

*****
***
**
*

तृतीयः कल्लोलः

अशुभस्वप्नफलम्

अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वप्नानां फलमन्यथा ।
यतो ज्ञास्यन्ति भूलोकेऽशुभं यत्स्वल्पबुद्धयः ।।१।।
आयुधानां भूषणानां मणीनां विद्रूमस्य च ।
कनकानां च कुप्यानां हरणं हानिकारकम् ।।२।।

शुभ स्वप्न प्रकरण के पश्चात् स्वप्न के अन्यथा फल को कहूँगा जिसे जानकर अल्पबुद्धि वाले मनुष्य पृथ्वी लोक में अशुभ फल को जान सकेंगे । स्वप्न मे हथियारों, आभूषणों, मणियों, मूँगा, स्वर्ण तथा ताम्बे का हरण या चोरी अशुभ फल (हानि) को देता है ।

हास्ययुक्तं नृत्यशीलं वित्रस्तं केशवर्जितम् ।
स्वप्ने यः पश्यति नरं स जीवेन्मासयुग्मकम् ।।३।।
कर्णनासाकरादीनां छेदनं पङ्कमज्जनम् ।
पतनं दन्तकेशानां बहुमांसस्य भक्षणम् ।।४।।

हँसता हुआ, नृत्य करता हुआ, लम्बे चौड़े तथा बालरहित मनुष्य को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह दो मास तक जीवित रहता है । कान, नाक, भुजाओं का कट जाना, कीचड़ में डूबना, दाँतों और बालों का गिरना, अत्यधिक मांस खाना--

गृहप्रसाद--भेदं च स्वप्नमध्ये प्रपश्यति ।
यस्तस्य रोगबाहुल्यं मरणं चेति निश्चयः ।।५।।
अश्वानां वारणानां च वसनानां च वेश्मनाम् ।
स्वप्ने यो हरणं पश्येत्तस्य राजभयं भवेत् ।।६।।

मकान (घर) का, राजमहल का फट जाना जो व्यक्ति स्वप्न के बीच देखता है वह अनेक रोगों से घिर जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है । ऐसा निश्चित समझना चाहिए । घोड़ों का, हाथियों का, वस्त्रों का तथा भवन स्थान आदि का हरण (लूटपाट) जो व्यक्ति स्वप्न मे देखता है उसको राजभय उत्पन्न होता है।

स्वस्यवपत्न्यभिहारे च लक्ष्मीनाशो भवेद् ध्रुवम् ।
स्वस्यापमाने संक्लेशो गोत्रस्त्रीणां च विग्रहः ।।७।।
स्वप्नमध्ये यस्य पुंसो ह्रियते पादरक्षणम् ।
पत्नी च म्रियते यस्य स स्याद्देहेन पीडितः ।।८।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी पत्नी का हरण देखता है उसका धन निश्चित नाश को प्राप्त करता है । अपना (स्वयं का) अपमान देखना क्लेश उत्पन्न करता है तथा सगोत्रा महिलाओं से कलह कराता है । जो स्वप्न में अपने जूता की चोरी देखता है अथवा पत्नी की मृत्यु (स्वप्न में) देखता है उसका शरीर रोग से पीड़ित हो जाता है यानि वह व्यक्ति शरीर कष्ट को प्राप्त करता है ।

स्वप्ने हस्तद्वयच्छेदः यस्य स्यात्स नरो भुवि ।
माता-पितृ-विहीनः स्याद् गवां वृन्दैश्च मुच्यते ।।९।।
दन्तपाते द्रव्यनाशः नासाकर्णप्रकर्तने ।
फलं तदेव व्याख्यातमत्र नास्त्येव संशयः।।१०।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के दोनों हाथ कट जाते है वह पृथ्वी पर माता-पिता से हीन हो जाता है। साथ ही उसका गायों का समूह भी नष्ट हो जाता है । यदि स्वप्न में दाँत गिरे तो धन नाश होता है, नाक-कान कटने पर भी धननाश समझना चाहिए । इस स्वप्न के फल में तनिक भी सन्देह नहीं करना चाहिए ।

चक्रवातं च यः पश्येदङ्गो वातं च यः स्पृशेत् ।
शिखा चोत्पाट्यते यस्य स म्रियेताचिराद्ध्रुवम् ।।११।।
स्वप्नमध्ये यस्य कर्णे गोमीगोधाभुजङ्गमाः ।
प्रविशन्ति पुंसां कर्णे रोगेण स विनश्यति ।।१२।।

जो व्यक्ति स्वप्न में आँधी तूफान देखे अथवा अपने शरीर में हवा स्पर्श महसूस करे, जिसकी शिखा उखाड़ दी जाये वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है । यह ध्रुव सत्य है । स्वप्न के बीच में जिस द्रष्टा के कान में गोमी, गोध या सर्प (सरीसृप) घुसते हैं वह रोग से विनाश को प्राप्त करता है ।

सूर्याचन्द्रमसोः स्वप्ने ग्रहणं यः प्रपश्यति ।
पञ्चरात्रेण पञ्चत्वं स प्राप्नोति न संशयः ।।१३।।
नेत्ररोगं दीपनाशं तारापातं तथैव च ।
स्वप्ने यः पश्यति पुमानङ्गरोगी स जायते ।।१४।।

सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह पाँच रात के अन्दर पंचत्व (मृत्यु) को प्राप्त करता है । इसमें सन्देह नहीं है । आँखों में रोग, दीप का बुझना, ताराओं (उल्काओं) का टूटना जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह पुरुष अंग रोगी होता है यानि उसके किसी विशेष अंग में विशेष कष्ट होता है ।

द्वारस्य परिघस्याथ ग्रहस्योपानहस्तथा ।
स्वप्ने भग्नं प्रपश्येच्चेत्तस्य गोत्रं प्रणश्यति ।।१५।।
हरिणच्छागकरभरासभानां च दर्शनम् ।
स्वप्नमध्येऽनिष्टकं [illegible] ।।१६।।

दरवाजे का, परिघ (अस्त्र विशेष) का, ग्रह का, जूते का स्वप्न में जो व्यक्ति टूटना देखता है उसका गोत्र (वंश) नष्ट हो जाता है । हरिण, मेष, हाथी का बच्चा एवं गदहों को जो स्वप्न मे देखता है उसका अनिष्ट होता है, इसमें सन्देह नहीं है ।

अहिं च नकुलं कोलं जम्बुकं च तरक्षकम् ।
स्वप्ने वीक्ष्य नृणां द्वेषकारकाः प्रभवन्ति हि ।।१७।।
चित्रकं च चमूरुं च गण्डकं योऽवलोकयेत् ।
स्वप्नमध्ये नरस्यास्य भवेत्सौभाग्यसंक्षयः ।।१८।।

सर्प, नेवला, वराह (सूअर), गीदड़ और तेन्दुआ (तरक्षक, बाघ की प्रजाति) को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है उससे द्वेष करने वाले बढ़ जाते है यानि ये दृष्य द्वेषकारक है । चीता, हरिण, गैडा को जो व्यक्ति स्वप्न मे देखता है उसके सौभाग्य का क्षय हो जाता है ।

कलविङ्कं वायसं च कौशिकं खञ्जनं किरिम् ।
दृष्ट्वा स्वप्ने जागृयाद्यः स धनैर्वर्जितो भवेत् ।।१९।।
जलकुक्कुटा दात्यूहकुररी कुक्कुट्य यदि ।
स्वप्ने दृष्टिपथं याता विनाशं कुर्वते खलु ।।२०।।

चिड़िया, कौआ, उल्लू, खंजन, सूअर (वराह) को स्वप्न मे देखकर जो जागता है वह धन से रहित हो जाता है यानि निर्धन हो जाता है । जलकुक्कुट (वनमुर्गी), चातक या जल कौआ, कुररी (जल मुर्गी) को यदि स्वप्न में कोई देखे तो ये उसका विनाश करते हैं यानि ये दृश्य मनुष्य के विनाश को सूचित करते है ।

पाकस्थाने सूतिगृहे प्रसूनविपिनेऽपि च ।
प्रविशेद्यः स पुरुषो मृत्युमाप्नोत्यसंशयम् ।।२१।।
कूपे गर्ते कन्दरायां स्वप्ने यः प्रविशेत्पुमान् ।
आपदामास्पदं स स्याद्विपदां च पतिर्भवेत् ।।२२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति भोजनालय , प्रसूतिगृह या फूलों के जंगल में प्रवेश करता है वह व्यक्ति निःसन्देह मृत्यु को प्राप्त करता है । कुंआ, गढ़ा (खाई), गुफा में जो व्यक्ति प्रवेश करता है वह आपत्तियों का पात्र होता है तथा विपत्तियों का स्वामी होता है ।

पक्वमांसं भक्षयेद्यः प्रेक्षयेद्वा लभेत वा ।
क्रयविक्रयतस्तस्य द्रव्यनाशो भवेद्ध्रुवम् ।।२३।।
शष्कुल्याः पौलिकायाश्चापूपस्य वरणस्य च ।
भक्षणं कुरुते स्वप्ने शोकार्तो स प्रपीड्यते ।।२४।।

जो व्यक्ति स्वप्न में पका हुआ मांस खाता है या देखता है या प्राप्त करता है उसका धन क्रय-विक्रय के कारण सुनिश्चित नष्ट हो जाता है । पूड़ी, अधपका अन्न, मालपुआ एवं वृक्ष को जो व्यक्ति स्वप्न में खाता है वह शोकादि कारणों से पीड़ित हो जाता है ।

स्वप्नमध्ये सरोमध्ये कमलानि प्रपश्यति ।
उद्भवन्ति नरो यश्च स रोगैर्नश्यति ध्रुवम् ।।२५।।
स्वप्नमध्ये पिशाचाद्यैः सुरापानं करोति यः ।
दारूणैर्व्याधिभिर्व्याप्तो मरणं स प्रपद्यते ।।२६।।

जो व्यक्ति स्वप्न में विकसित कमलों को तालाबों में देखता है वह अनेक रोगों से निश्चित नाश प्राप्त करता है । स्वप्न में जो व्यक्ति पिशाचादिकों से शराब पीता है वह दारूण रोगों से व्याप्त होकर मृत्यु को प्राप्त करता है ।

चाण्डालैः सह यस्तैलं स्वप्ने पिबति पूरुषः ।
प्रमेहव्याधिभिर्युक्तो मरणं स प्रपद्यते ।।२७।।
कृशरां भक्षयति यः क्षयरोगी स जायते ।
नारीस्तनपयः पायी पुनर्जन्म लभेत च ।।२८।।

जो व्यक्ति स्वप्न में चाण्डालादिकों के साथ तेल पीता है वह प्रमेह (डाइबिटीज) रोग से युक्त होकर मृत्यु को प्राप्त करता है अथवा कृशरा (खिचड़ी) खाने से क्षयरोगी होता है और महिला स्तन का पान करने वाला व्यक्ति पुनर्जन्म को प्राप्त करता है ।

अतितप्तं च पानीयं गोमयेन युतं पिबेत् ।
कटुतैलं चौषधेनातिसारेण विपद्यते ।।२९।।
जतुकुङ्कुमसिन्दूरधातुपातो गृहोपरि ।
आकाशाद्यस्य भवति तद्गृहं दह्यतेऽग्निना ।।३०।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अत्यन्त गरम पानी-जिसमें गोबर मिला हो या गोबर के साथ-पीता है या औषध के साथ कड़वा तेल पीता है वह अतिसार रोग से विपत्तिग्रस्त होता है । लाख (लाक्षा), कुंकुम, सिन्दूर और धातु का पात (वर्षा) जिस घर के ऊपर आकाश से होता है वह घर अग्नि से जल जाता है ।

तालकीचकखर्जूरः -- रोहिताख्यद्रुमाङ्कुरः ।
कण्टकैश्च परीतः सन्रोहेत्स म्रियते खलु ।।३१।।
दर्भास्तृणानि गुल्माश्च वामलूरास्तथैव च ।
उत्पद्यन्ते यस्य देहे व्याधिभिः स म्रियेत वै ।।३२।।

जो व्यक्ति स्वप्न में ताड़ वृक्ष, वंश, खर्जूर और रोहित वृक्ष जो अंकुरित हो और काँटों से घिरा हो के ऊपर चढ़ता है वह निःसन्देह मृत्यु को प्राप्त करता है । कुशा, तृण, गुल्म, ठूँठ और बाँबी को अपने शरीर से उत्पन्न हुआ जो देखता है वह रोगों से मृत्यु को प्राप्त करता है ।

श्यामं हयं समारूढः श्यामद्रव्यानुलेपनः ।
श्यामं पटं परिवसेत्स्वप्ने यस्तस्य संक्षयः ।।३३।।
अशोकं किंशुकं पारिभद्रवृक्षं च यो नरः ।
स्वप्नमध्ये समारोहेदाधिभिः संयुतो भवेत् ।।३४।।

श्याम घोड़े पर चढ़ना, श्याम द्रव्य का लेपन कर, श्यामवर्ण का कपड़ा पहनना व्यक्ति यदि स्वप्न में अपने को इस स्थिति में देखे तो उसका नाश होता है । स्वप्न में समारोह में अशोक, किंशुक (टेसू) और निम्ब वृक्ष पर जो व्यक्ति चढ़ता है वह रोगो से ग्रस्त हो जाता है ।

वराहपृष्ठमासीना नारी यं परिकृष्यति ।
सा रात्रिश्चरमा तस्य वनवास्यथवा भवेत् ।।३५।।
यः पुना रथमारूढः प्रेतसर्पसमायुत्ः ।
पुरीं संयमिनीं गच्छेत्सोऽचिरान्म्रियते नरः ।।३६।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को वराह (सूअर) पर बैठी स्त्री खीचती है वह मात्र उसी रात को घर में बीताता है यानि वह वनवासी हो जाता है । इस स्वप्न को देखने के बाद यदि कोई प्रेत एवं सर्प से घिरे रथ पर चढ़कर यमपुरी में जाए तो वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है ।

हसते शोचति मुहुर्नृत्यं चारभते पुनः ।
वधो बन्धश्च तस्य स्यादत्र नास्त्येव संशयः ।।३७।।
स्वप्नमध्ये मूत्रयते हदते वा च यो नरः ।
लोहितं तस्य बहुशो धनं धान्यं च नश्यति ।।३८।।

जो स्वप्न में हँसता, सोचता है और वार-बार नृत्य करता है । उसका बध या बन्धन होता है यानि वह मृत्यु या कारागार पाता है । इसमें सन्देह नही है । जो स्वप्न में खून का पेशाव करता है या खून का मल त्याग करता है उसका व्यापक स्तर पर धन धान्य नष्ट हो जाता है ।

सिंहो गजोऽथ सर्पश्च पुरुषो मकरस्तथा ।
यं कर्षति भवेन्मुक्तो बद्धोऽन्यो बन्धितो भवेत् ।।३९।।
पितृतर्पणवैवाहसांवत्सरिककर्मसु ।
[illegible] भोजनं स्वप्ने यः स [illegible] ।।४०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति सिंह, हाथी, सर्प, पुरुष या मकर (घड़ियाल) द्वारा खींचा या घसीटा जाता है वह मुक्त होकर बन्धन को प्राप्त करता है । अन्य व्यक्ति जो मुक्त न हों वह भी बन्धित हो जाते है । जो व्यक्ति पितरो के तर्पण, विवाह या वार्षिक कर्म में भोजन करता है वह शीघ्र ही विनाश को प्राप्त करता है ।

स्वप्ने यः शैलभृङ्गाग्रे श्मशाने चापि पूरुषः ।
अधिष्ठाय पिबेन्मद्यं मद्यतः स म्रियेत वै ।।४१।।
यस्य स्वप्ने रक्तं पुष्पं सूत्रं रक्तं तथैव च ।
बध्यते वेष्ट्यते चाङ्गो स शुष्को भवति ध्रुवम् ।।४२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति पर्वताकार शिखर के अग्रभाग पर या श्मशान में बैठकर मद्य पीता है वह मद्य से मृत्यु को प्राप्त करता है । जिस व्यक्ति को स्वप्न में लालफूल या धागा (रक्षासूत्र) से बाँधा या लपेटा जाए वह शुष्क (सूखा) रोग से निश्चित ग्रस्त हो जाता है ।

पाण्डुरोगपरीताङ्गं स्वप्ने दृष्ट्वान्यपूरुषम् ।
रूधिरेण विहीनः स्यात्तस्य देहो न संशयः ।।४३।।
जटिलं रुक्षमलिनं विकृताङ्गं मलीमसम् ।
स्वप्ने दृष्ट्वान्य पुरुषं मानहानिः प्रजायते ।।४४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति किसी दूसरे को पीलियाग्रस्त आदमी को देखता है उसका शरीर रक्त हीन हो जाता है । इसमें सन्देह नहीं है । स्वप्न में अन्य जटाधारी, रूक्ष, गंदा, टेढ़े अंग वाले, गंदे (निंदारत) पुरुष को देखने से (स्वप्न द्रष्टा की) मानहानि होती है ।

शत्रुभिः कलहे वादे युद्धे यस्य पराजयः ।
स्वप्नमध्ये भवेत्तस्य वधो बन्धोऽथवा भवेत् ।।४५।।
यस्य गेहेऽङ्गणे वाथ विशन्ति मधुमक्षिकाः।
स्वप्ने स मृत्युं लभते वा शुभेन विमुच्यते ।।४६।।

जिस व्यक्ति का स्वप्न के बीच में शत्रु के द्वारा कलह, वाद या युद्ध मे पराजय हो जाए वह वध या बन्धन को प्राप्त करता है । स्वप्न में जिसके घर मे या आंगन में मधुमक्खियाँ प्रवेश करतीं है वह मृत्यु को प्राप्त करता है या शुभ से विरहित हो जाता है ।

कुड्येऽथवा भित्तितले चित्राकारविलेखितम् ।
राहुयुक्तं चन्द्रबिम्बं स्वप्ने दृष्ट्वा विनश्यति ।।४७।।
स्वप्ने य इष्टप्रतिमां स्फुटितां चलितामपि ।
प्रपश्यति नरस्तस्य मृत्युर्दोषारिको भवेत् ।।४८।।

जो व्यक्ति स्वप्न मे झोपड़ी पर या दीवार पर चित्र में रचित चन्द्रबिम्ब-राहुयुक्त देखता है वह विनाश को प्राप्त करता है । स्वप्न में जो अपनी इष्टमूर्ति को टूटी-फूटी या चलती हुई देखता है तो समझें कि उसके दरवाजे पर मृत्यु खड़ी हुई है ।

स्वप्ने यःकुलदैवत्यं चोर्यमाणं प्रपश्यति ।
चौरैर्यमभटैस्तस्य चोर्यन्ते प्राणवायवः ।।४९।।
आराममध्ये वृक्षाग्रात्पतितो मार्गमन्तिके ।
न पश्यति नरस्तस्य मरणं स्यान्न संशयः।।५०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति कुलदेवता की चोरी होते हुए देखता है उसकी प्राणवायु चोरों या यमदूतों के द्वारा चोरित हो जाती है यानि चोर या यम उसको मार डालते है । बगीचा या उपवन के बीच में वृक्ष की ऊँचाई से जो व्यक्ति अपने को गिरता हुआ देखता है और समीप के मार्ग को अपनी आँखों से नही देख पाता तो उस स्वप्नद्रष्टा की मृत्यु हो जाती है । इसमें सन्देह की कोई बात नही है ।

कृतक्षौरः पटहकं स्वप्ने यो वादयेन्नरः ।
यमस्य नगरीं जेतुं जयध्वनिरुदीर्यते ।।५१।।
रक्ताङ्गा रागक्लृप्ताङ्गी शुष्कमाला विभूषणा ।
आलिङ्गति दृढं नारी यं स आशु म्रियेत वै ।।५२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति क्षौरकर्म (दाढ़ी बाल बनवा) कर नगाड़ा बजाता है वह यमपुरी (यम की नगरी) को जीतने के लिये जयघोष करता है । यानि वह यमपुरी में रहने का उद्घोष करता है । स्वप्न में जो व्यक्ति ललछौंहा वर्ण वाली नारी जिसके अङ्गों में राग (महावर, अलक्तक या प्रसाधन रंग) लगा हुआ हो को मजबूती से अंकपाश में कस लेता है वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

मुक्तकेशा कृष्णगन्धपरिचर्चितगात्रिका ।
नार्यालिङ्गति यं स्वप्ने स आशु म्रियते नरः ।।५३।।
भयङ्करारुणापाङ्गी पीताम्बर-परीवृता ।
नार्यालिङ्गति यं स्वप्ने स आशु म्रियते नरः ।।५५।।

स्वप्न मे खुले बाल वाली स्त्री जिसके शरीर में काली वस्तु जनित गन्ध व्याप्त हो--को आलिंगित करने वाला व्यक्ति जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त करता है । जिसकी आँखें भयंकर एवं लाल हो तथा पीला वस्त्र पहनी हो ऐसी स्त्री का स्वप्न में आलिंगन करने वाला व्यक्ति शीघ्र ही मरता है ।

कृशोदरी पिङ्गनेत्री नग्ना दीर्घनखा तथा ।
नार्यालिङ्गति यं स्वप्ने स आशु म्रियते नरः ।।५६।।
कृष्णवर्णा विकृताङ्गी नग्ना कुञ्चितकुन्तला ।
स्वप्ने नारी यमाकृष्य रमते स म्रियेत वै ।।५७।।

दुबले पेट वाली, पिंगल नेत्र वाली, जिसके नख बढ़े हुए हों और वह नग्न हो ऐसी स्त्री को स्वप्न में आलिंगन करने वाला व्यक्ति शीघ्र मर जाता है। काले रंग की विकृत अंग वाली टेढ़े-मेढ़े बालों वाली नग्न स्त्री जिसको स्वप्न में खींच कर रमण करती है वह व्यक्ति मर जाता है ।

कज्जलेन च तैलेन लिप्तांगो रासभोपरि ।
समारूढो यमदिशं यो यायात्स म्रियेत वै ।।५७।।
खरक्रमेलकयुतं समारुह्य च वाहनम् ।
जागृयात्स्वप्नमध्याद्यो मृत्युस्तस्य ध्रुवं भवेत् ।।५८।।

काजल एवं तेल पुता हुआ व्यक्ति गदहे पर चढ़कर दक्षिण की ओर प्रयाण करे तो उसकी मृत्यु हो जाती है । गदहा, ऊँट दोनों से बने हुए वाहन पर चढ़ने वाला व्यक्ति यदि स्वप्न के बीच में ही जाग जाय तो उसकी सुनिश्चित ही मृत्यु होती है ।

यः पङ्किलेऽम्भसि स्वप्ने उन्मज्जति निमज्जति ।
निर्गच्छति च कृच्छ्रेण भूतेन म्रियते च सः ।।५९।।
नृत्यन्मत्तश्च यो मर्त्यो यमस्य नगरीमुखम् ।
प्रेक्षते वा प्रविशति स प्राणैर्विरही भवेत् ।।६०।।

जो व्यक्ति स्वप्न में कीचड़ युक्त जल में डूबता एवं निकलता है, वह कृच्छ्र (घोर) पीड़ा से मरता है (प्रेतबाधा की भी सम्भावना होती है)। जो व्यक्ति स्वप्न में पागलों की तरह नाचता हुआ यमपुरी देखता है या उसमें प्रवेश करता है वह मर जाता है ।

रक्ताङ्गरागवसन-भूषणैरति-भूषिताम् ।
नारीं विचुम्ब्य सुरतं यः करोति म्रियेत सः ।।६१।।
स्वप्ने क्रूरं च पुरुषं यः पश्यति निरन्तरम् ।
वर्षमध्येऽसवस्तस्य यमस्यातिथयः किल ।।६२।।

स्वप्न में लाल वस्त्र एवं अल्पना आभूषणों से सुशोभित स्त्री को चूमता हुआ जो रमण करता है, वह मर जाता है । स्वप्न में क्रूर पुरुष को जो हमेशा देखता है एक वर्ष के अन्तराल में उस व्यक्ति के प्राण यम के अतिथि बन जाते हैं यानि वह मर जाता है ।

हर्षोत्कर्षः स्वप्नमध्ये विवाहो वापि जायते ।
यस्य सोऽपि विजानीयान्मृत्युमागतमन्तिके ।।६३।।
स्वप्ने नारी खर्परेषु निधायान्नं च यं नरम् ।
यत्राभिसरेत्सोऽपि न चिरेण विनश्यति ।।६४।।

स्वप्न में जो अपने सम्बन्ध में हर्ष का वातावरण देखता है तथा अपना विवाह सम्पन्न होते देखता है उसकी मृत्यु नजदीक आ गयी है ऐसा समझना चाहिए। स्वप्न में यदि कोई नारी खप्पर में अन्न लेकर जिस व्यक्ति के पास अभिसरण के लिए जाए वह व्यक्ति शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है ।

पिशाचश्वपचप्रेत - प्रकृतिं प्रमदां गतः ।
कन्यां च कामी यो गच्छेत्स आशु म्रियते नरः ।।६५।।
व्यालैश्च नखिभिश्चौरैर्बीभत्सैः क्रोष्टुभिस्तथा ।
वित्रासनं भवेद्यस्य स्वप्ने सोऽपि विनश्यति ।।६६।।

पिशाच, चाण्डाल या प्रेत प्रकृति वाली नारी को सम्प्राप्त कर जो व्यक्ति स्वप्न में उससे रमण करता है वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है । सर्पों, नाखून धारियों, चोरों, वीभत्स आकृति वालों एवं गीदड़ों से जो व्यक्ति स्वप्न में भयग्रस्त होता है वह भी विनाश को प्राप्त करता है ।

काकैः कङ्कैः शकुनिभिर्गृहीत्वा क्षिप्यते त्वधः ।
स्वप्ने यः पुरुषस्तस्य निर्दिष्टं मरणं ध्रुवम् ।।६७।।
शयनादासनाद्वृक्षात्प्राकाराद्देववेश्मनः ।
तुरगाद्वाहनाच्चापि पतनं मरणप्रदम् ।।६८।।

स्वप्न में कौओं, गिद्धों या अन्य पंछियों के द्वारा जो व्यक्ति उठाकर नीचे फेंका जाता है वह निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त करता है । शय्या, आसन, महल, देवमंदिर, घोड़ा एवं वाहन से स्वप्न में गिरना मृत्युप्रद होता है ।

स्वप्नमध्ये धूलियुक्ते भूतले यो निरन्तरम् ।
उपाविशेद्वियति वा गच्छेत् स मरणं व्रजेत् ।।६९।।
वराहकपिमार्जारव्याघ्रजम्बुककुक्कुटैः ।
स्वप्ने आकृष्यते यश्च म्रियते सोऽचिरान्नरः।।७०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति धूलि भरी भूमि पर निरन्तर बैठता है अथवा निरन्तर आकाश में जाता है वह मृत्यु को प्राप्त करता है । सूअर, बन्दर, बिल्ली, व्याघ्र, गीदड़ एवं कुक्कुट (मुर्गा) आदि जिसको स्वप्न में खींचते है वह व्यक्ति शीघ्र ही मर जाता है ।

गृध्रध्वांक्षपतत्रीणां मूर्ध्नि स्यात्पतनं यदि ।
यस्य सोऽपि कृतान्तस्य भक्ष्यतामेति मानवः ।।७१।।
विकराला पिङ्गलाक्षी स्वप्ने यं मर्कटी नरम् ।
आलिंगति [illegible] ।।७२।।

गृध्र, कौआ आदि का यदि सिर के ऊपर पतन हो जाये यानि ये सिर के ऊपर गिर पड़े तो समझना चाहिए कि वह व्यक्ति यमराज का भक्ष्य हो गया है । यदि स्वप्न में विकराल; पिंगलनेत्र वाली बन्दरिया किसी मनुष्य का आलिंगन करे तो वह व्यक्ति शीघ्र ही बहुत दुःख प्राप्त करता है ।

वानरेण मृगेणाथ मेषेण महिषेण च ।
युक्तं रथं समारोहेद्बहुक्लेशैः स पीड्यते ।।७३।।
स्ववंशसंभवैः पुंभिर्मृतैराहूयते च यः ।
स्वप्नमध्ये पुमांस्तस्य मरणं जायतेऽचिरात्।।७४।।

बन्दर, मृग, मेष (छाग) या महिष (भैंस) से युक्त रथ में जो व्यक्ति चढ़ता है वह अनेक क्लेश से पीड़ित होता है । स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने कुल में उत्पन्न ऐसे व्यक्ति से बुलाया जाए जो मर चुका हो तो समझना चाहिए कि उस व्यक्ति की मृत्यु नजदीक आ गयी है ।

स्वप्नमध्ये च संन्यासग्रहणं कुरुते यदि ।
कलहं वा भवेत्सोऽपिक्लेशाभाङ्नात्र संशयः ।।७५।।
धान्यराशेर्धूलि-मिश्रीकरणं यदि पश्यति ।
अथवा तैलसंयुक्तं पाचनं दुर्गतिर्हि सः ।।७६।।

जो व्यक्ति स्वप्न में संन्यास ग्रहण करता है या कलह करता है वह भी क्लेश पाता है इसमें संदेह नहीं है । स्वप्न में जो व्यक्ति धान्यराशि को धूलि में मिला देखतां है अथवा तैल में पकता हुआ अन्न देखता है तो उसकी दुर्गति अवश्य होती है ।

नग्नस्य मुण्डितस्याथ दक्षिणस्यां दिशि ध्रुवम् ।
पिशाचैः श्वपचैश्चाथ नयनं प्राणसंकटम् ।।७७।।
यस्योपरि स्वप्नमध्ये पिता माता च बान्धवाः ।
कुपिताः स्युस्तस्य नाशो झटित्येव भवेद्ध्रुवम् ।।७८।।

स्वप्न में नंगे तथा सिर मुड़ाये व्यक्ति को पिशाच एवं चाण्डालादि यदि दक्षिण दिशा में ले जा रहे हों तो स्वप्नद्रष्टा के ऊपर प्राणसंकट आता है । स्वप्न देखने के क्रम में जिसके ऊपर माता, पिता तथा बन्धु बान्धव नाराज होते है उसका शीघ्र नाश होता है । यह निश्चित स्वप्नफल है ।

काषायवस्त्रसंवीतं दिशावल्कलधारणम् ।
स्वप्ने यः पुरुषः कुर्यात् स यायाद्यमसंनिधौ ।।७९।।
स्वप्ने योऽकालजलदघनच्छायां प्रपश्यति ।
अथवा वातसंमिश्रां वृष्टिं स क्लेशभाग्भवेत् ।।८०।।

काषाय (गेरुआ) वस्त्र से सज्जित होता हुआ या दिशाओं को वल्कल रूप मे धारण करता हुआ यानि नग्न होता हुआ व्यक्ति यम के नजदीक जाता है । अर्थात् मृत्यु को प्राप्त करता है । बिना मौसम ही जो व्यक्ति स्वप्न में बादलों की छाया को देखता है अथवा हवा के साथ वृष्टि देखता है वह क्लेश को प्राप्त करता है ।

दिनमस्तं गतादित्यं रात्रिं चन्द्रमसा विना ।
नक्षत्रैश्च विनाकाशं दृष्ट्वा गच्छेद्यमालयम् ।।८१।।
तैलिकैः कुम्भकारैश्च सह यस्य पलायनम् ।
स्वप्ने भवति तस्य स्याच्चित्तखेदो दिवानिशम् ।।८२।।

यदि स्वप्न में दिन को सूर्य के बिना, और रात को चन्द्रमा के बिना तथा आकाश को नक्षत्रों के बिना कोई देखता है तो वह यम के यहाँ प्रयाण करता है अर्थात् मृत्यु को प्राप्त करता है । स्वप्न में तैलिक एवं कुम्भकार के साथ जो पलायन करता है वह दिन रात (अहर्निश) खेद खिन्न रहता है ।

स्वप्नमध्ये च यो निद्रां क्षुते क्षौद्रेऽथवोषरे।
कुर्यात्तस्य भवेद्भूरि दूरदेशप्रवासनम् ।।८३।।
वामलूरं चावकारं कण्टकप्रवरं द्रुमम् ।
शेतेऽथवा भालयति स विपत्तिं प्रपश्यति ।।८४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति मधुमक्खियों के छत्ते में अथवा ऊषर भूमि में छींके या सोये तो उसका अनेक बार दूर देश में प्रवास होता है । वामलूर यानि बाँबी (जिसमें दीमक रहते हैं), धूल-कूड़ा और तीक्ष्ण काँटे वाले वृक्षों पर जो सोता है अथवा देखता है वह विपत्ति को प्राप्त करता है ।

करीषतुषकंकालकाष्ठलोष्ठेषु यः पुमान् ।
स्वप्ने तिष्ठति वा शेते स महादुःखमश्नुते ।।८५।।
खट्वायां मृतशय्यायां शिलायां चाथ संविशेत् ।
यो नरस्तस्य सुलभं कृतान्तनिलयं भवेत् ।।८६।।

स्वप्न में जो व्यक्ति उपला (गोवर का बना गोयठा), भूसी, कंकाल (केवल हड्डी), काष्ठ (सूखी लकड़ी) और ढेला (लौदा) में सोता है अथवा ठहरता है वह महान् दुःख को पाता है । खाट, मृत्युशय्या अथवा पत्थर पर जो स्वप्न में बैठता है वह यमराज के घर सुलभता से पहुँच जाता है यानि मर जाता है ।

गोमयं कर्दमं रक्षां धूलिं यश्च विमर्दयेत् ।
स्वप्नमध्ये शरीरं स्वं सत्वरं स मृतो भवेत् ।।८७।।
गोरोचनानि शाल्मलीकज्जलैर्गात्रलेपनम् ।

जायते यस्य वै स्वप्ने स स्याच्छीघ्रं यमातिथिः ।।८८।।

गोबर, कीचड़, भस्म (रक्षा) या धूलि को जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर में पोतता है वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है । स्वप्न में गोरोचन (मंगलद्रव्य), हरिद्रा, नील कज्जलादि को जो शरीर में मलता है वह शीघ्र यमराज का अतिथि बन जाता है यानि उसकी मृत्यु हो जाती है ।

मेदो दुर्गन्धियुक्तान्नं यः खादति नरो भुवि ।
स्वप्नमध्ये च तस्य स्यादवश्यं मरणं रुजः ।।८९।।
काञ्जिकक्षौद्रतक्राणां तैलस्य च घृतस्य च ।
स्वप्नमध्ये भवेद्यस्याङ्गाभ्यङ्गः स म्रियेत वै ।।९०।।

स्वप्न के बीच में जो व्यक्ति चर्वी, सड़े दुर्गन्धित अन्न को खाता है वह निश्चित तौर से रोगों के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है । कांजी, शहद, तक्र (मट्ठा या छाछ), तेल या घी से जो व्यक्ति स्वप्न में आभ्यङ्ग (उबटन) करता है वह निश्चित मृत्यु को प्राप्त करता है ।

कुविन्दसूचिकाकारतक्षायस्कारचर्मिकाः ।
धीवराः शवराः स्वप्ने यं स्पृशन्ति स दुःखभाक् ।।९१।।
विकलाङ्गाः पङ्गवश्च वैद्याः खर्वाश्च नर्तकाः ।
चेटाश्च द्यूतकाराश्च यं स्पृशन्ति स दुःखभाक् ।।९२।।

जिस व्यक्ति को स्वप्न में जुलाहा, दर्जी, बढ़ई, लुहार, चमार, धीवर (मल्लाह), शवर (पहाड़ी-जाति) आदि स्पर्श करते है वह बहुत दुःख को प्राप्त करता है । स्वप्न में विकलांग, लंगड़ा, वैद्य, खरवार जाति, नट, चेट (दास) एवं जुआरी जिसको छूते है वह व्यक्ति बहुत दुःख को प्राप्त करता है ।

कुरंटकः करञ्जश्च कुटजः सप्तपल्लवः ।
एतेषां दर्शनं नाशकरं जग्धिस्तु किं ततः ।।९३।।
कर्णिकारः शिंशपा च धवः खदिर एव च ।
बदरी च शमी चैषां दर्शनं नाशकारकम् ।।९४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति कुरंटक (सदाबहार पुष्प), करंज (करौदा), कुटज पुष्प विशेष तथा सप्तछद (छितवन) आदि वृक्ष विशेषों का दर्शन करता है वह नाश को प्राप्त करता है । इन्हें खाने पर फिर कुशल कैसे संभव है ? कर्णिकार पुष्प, शिशमवृक्ष, धव वृक्ष, खैर वृक्ष, वेर वृक्ष, शमी वृक्ष आदि का स्वप्न में दर्शन नाशकारक होता है ।

कुशकाशाङ्कुरतृणीकपाकमदनद्रुमाः ।
स्वप्ने दृष्टिपथं याता महादुःखकरा ध्रुवम् ।।९५।।
जपाचम्पकपुष्पाणि रक्तानि यदि पश्यति ।
स [illegible] यमपदैः स्वयं नेनीयते नरः ।।९६।।

स्वप्न में कुशा, काश का अंकुर, तृण, कर्पाश, कपित्थ वृक्ष को देखकर व्यक्ति महान् दुःख को प्राप्त करता है । जो व्यक्ति स्वप्न में अड़हुल, चम्पा आदि लाल फूलों को देखता है वह यमराज के दूतों द्वारा खींचा जाता है और नष्ट हो जाता है ।

जम्बीरतुम्बीकालिङ्गतुण्डीकर्कटिकाश्च यः ।
प्रेक्षते खादति स्वप्ने म्रियते सोऽचिरान्नरः ।।९७।।
नीवारान् कोरदूषांश्च व्रीहीन् मुद्गान्यवांस्तिलान्।
कुलत्थान्यो भक्षयति वीक्षते वा स दुःखभाक् ।।९८।।

जम्बीर (निंबू), तुम्बी (रामतरोई), कलिंगसाक, बिम्बाफल (तुण्डी), एवं ककड़ी को स्वप्न में देखने या खाने वाला व्यक्ति शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है । नीवार (धान्यविशेष), कोदों (कदन्न), जौ, मूँग, तिल एवं कुलत्थ (कुलथी) को स्वप्न में देखने एवं खाने वाला व्यक्ति बहुत दुःख को भोगता है ।

अम्लतिक्तकटुक्षारकषायाः स्वादिता यदि ।
स्वप्ने तस्य भवेद् हानिः सर्वतोऽपि न संशयः ।।९९।।
शरीरमांसमन्त्राणि नखान्त्राणि च यो नरः ।
स्वप्ने खादति तस्याङ्गनाशः सद्यः प्रजायते ।।१००।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अम्ल (खट्टा), तिक्त (तीता), कटु (कड़वा), क्षार (खारा) एवं कषाय (कसैला) स्वाद को लेता है उसकी सभी ओर से हानि ही हानि होती है । इसमें सन्देह नहीं है । जो व्यक्ति स्वप्न में शरीर के मांस को, आंतों को, नखों से मिश्रित आंतों को खाता है उसके अंगों का शीघ्र ही नाश हो जाता है ।

खर्जूरीगुडहिंगुद्रुनिर्यासान्यश्च खादति ।
स्वप्ने स यमराजस्य दूतैर्नेनीयते द्रुतम् ।।१०१।।
शैवाललिप्तं स्वं देहं मासमात्रं प्रपश्यति ।
यः स्वप्ने स क्षयीभूत्वा मृत्युभूयाय कल्पते ।।१०२।।

जो व्यक्ति स्वप्न में खर्जूर, गुड़, हींग, गोंद आदि को खाता है वह यमराज के दूतों द्वारा शीघ्र ही बलात् खींचा जाता है । शैवाल (काई) से लिपटा अपना शरीर एक मास तक स्वप्न में जो बार-बार देखता है वह क्षयरोग से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त करता है ।

कांस्यारकूटकथिलताम्रलोहत्रपूणि यः ।
लभते प्रेक्षते वाथ निर्धनत्वमियाद्धि सः ।।१०३।।
करवालं कुठारं च कुद्दालं फलकुन्तलौ ।
मुद्गरं करपत्रं च यः पश्यति स नश्यति ।।१०४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति, कांसा, आरकूट (पीतल), कथिल, ताम्बा, लोहा, रांगा को प्राप्त करता है या देखता है वह निर्धन हो जाता है । तलवार, कुल्हाड़ी, कुदाल (फावड़ा), हल का फाल, कुन्तल (बर्छी), मुद्गर और करपत्र (लकड़ी चीरने वाला आरा) को देखने पर विनाश उपस्थित होता है ।

संमार्जनी घट्टिका च स्थली मुसलमेव च ।
स्वप्ने दृष्टिपथं यायात् यस्य तस्य भवेन्मृतिः ।।१०५।।
इन्धनं धूममुल्मूकंसधूमाग्निं च यः पुमान् ।
स्वप्ने पश्यति तस्य स्याद् धनधान्यक्षयो भृशम् ।।१०६।।

झाड़ू, घट्टिका (बटलोई, खाना बनाने का बर्तन), थाली, मुसल, को स्वप्न मे देखने वाला व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त करता है । ईंधन, धुआँ, कोयला धुआँ सहित, धूमयुक्त आग को जो व्यक्ति स्वप्न मे देखता है उसके धनधान्य का अत्यन्त नाश होता है ।

मन्थानदण्डं शूर्पं च लाङ्गलं पाशदोरकौ ।
पश्यति स्पृशति स्वप्ने यस्तस्य स्याद् धनक्षयः ।।१०७।।
स्वप्ने वयोविकारं यो नरः पश्येद्यदि स्वतः ।
मङ्गलानां विनाशः स्यात्तस्य नास्त्यत्र संशयः ।।१०८।।

स्वप्न मे जो व्यक्ति मंथनदण्ड, शूर्प, हल, पाश और धागा को देखता है अथवा स्पर्श करता है उसके धन का नाश हो जाता है । स्वप्न में जो व्यक्ति स्वयं की आयु का विकार देखे यानि आयु परिवर्तन देखे तो उसके मंगल का विनाश हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है ।

प्रासादकोटच्छत्राणां ध्वजस्य कलशस्य च ।
भङ्गे दृष्टे राज्यनाशोऽथवा तस्य मृतिर्भवेत् ।।१०९।।
देवमंदिरभङ्गोऽथ ग्रामभङ्गोऽथवा यदि ।
स्वप्नमध्ये दृष्टिपथमायातो नाशकृद्भवेत् ।।११०।।

स्वप्न में राजमहल, किला, छत्र, ध्वज और कलश का टूटना देखना राज्य नाश का द्योतक होता है अथवा स्वप्नद्रष्टा व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है । देवमंदिर का टूटना या गाँव का नष्ट होना स्वप्न मे देखने पर स्वप्नद्रष्टा का विनाश होता है ।

देहभङ्गे देहभङ्गश्चक्षुर्भङ्गेऽन्धता भवेत् ।
कर्णभङ्गे च बाधिर्यं भवेदत्र न संशयः ।।१११।।
क्षेत्रे जलमयः पूरो भवेत्स्वप्ने यदीशितुः ।
तस्मिन् वर्षे तस्य धनं धान्यं चापि क्षयं व्रजेत् ।।११२।।

स्वप्न में देह का विनाश देखने पर देहनाश, नेत्रभंग देखने पर अंधापन, कर्णभंग देखने पर बधिरता होती है, यानि जिस अंग का भंग देखते है उससे सम्बन्धित अंगविकार उत्पन्न होता है । स्वप्न द्रष्टा यदि अपने खेत में झाग युक्त पानी भरा देखता है उस वर्ष उसका धनधान्य विनष्ट हो जाता है ।

स्थलभूमिमकस्माद्यः स्वप्ने पश्येज्जलाप्लुताम् ।
तस्य व्याधिग्लानिधनहानिः स्यान्नात्र संशयः ।।११३।।
अन्त्यजस्त्री यदि स्पृष्टा द्यूते वा मैथुनेऽपि वा ।
स्वप्नमध्ये येन पुंसा स स्नानान्नहि दुःखभाक् ।।११४।।

स्थलभूमि को अकस्मात् जल से लबालब देखने वाला व्यक्ति व्याधि, ग्लानि एवं धनहानि को प्राप्त करता है । इसमें सन्देह नही है । स्वप्न में व्यक्ति किसी अन्त्यज्य स्त्री का स्पर्श मैथुन के समय या द्यूत क्रीड़ा के समय करता है यानि उत्कंठित होकर अन्त्यज स्त्री का स्पर्श करता है तो प्रातः जागकर स्नान कर लेने से स्वप्न का अशुभ फल कट जाता है और वह दुःख का भागी नही होता है।

मया समारब्ध महाप्रयत्नेन दिवानिशम् ।
मानग्रन्थप्रमाणानि संञ्चित्य विपुलीकृतः ।।११५।।
ग्रन्थः सज्जनसन्तत्यै सततानन्दनन्दनः ।
भूयात् कार्यकरश्चापि जगदीशकृपावशात् ।।११६।।

रात दिन महान् प्रयत्न करके मै (श्रीधर दैवज्ञ) ने मानक ग्रन्थों के प्रमाणिक वचनों का संचयन कर इस ग्रन्थ को विपुल कलेवर वाला बनाया है । यह सज्जनों की शृंखला को सतत आनन्द देने वाला सिद्ध हो । साथ ही यह ग्रन्थ कार्यसिद्धि भी करे ऐसी जगदीश्वर की कृपा हेतु प्रार्थना है ।

इति श्रीमज्ज्योतिर्विच्छ्रीधरेण संग्रहपूर्वकविरचिते स्वप्नकमलाकरेऽशुभस्वप्नप्रकरणकथनं नाम तृतीयः कल्लोलः ।।३।।



चतुर्थः कल्लोलः

मृत्युकालपरीक्षणम्--

अथ प्रसङ्गतो वक्ष्ये मृत्युकालपरीक्षणम् ।
यस्य ज्ञानान्नरो मृत्युं निजं जानाति योगवित् ।।१।।
आकाशं शुक्रतारां च पावकं च ध्रुवं रविम् ।
दृष्ट्वैकादशमासोर्ध्वं स पुमान्नैव जीवति ।।२।।

शुभ, अशुभ एवं मिश्रित स्वप्नों का फल कहा जा चुका है । अब प्रसंग के अनुरूप मृत्युकाल का परीक्षण कहा जा रहा है जिसके ज्ञान से योगी मनुष्य अपनी मृत्यु को जान लेता है । स्वप्न में आकाश, अग्नि, ध्रुवनक्षत्र तथा सूर्य को देखकर व्यक्ति ग्यारह मास से ज्यादा जीवित नहीं रहता ।

मेहयेत्स्वप्नमध्ये यो हदेताप्यथ चेन्नरः ।
हिरण्यं रजतं वापि स जीवेद्दशमासिकम् ।।३।।
दृष्ट्वा भूतपिशाचांश्च गन्धर्वाणां पुराणि च ।
सौवर्णानथ वृक्षांश्च नव मासान्स जीवति ।।४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति स्वर्ण या चांदी का पेशाब या मल त्याग करता है वह दश मास तक जीवित रहता है । भूत पिशाच एवं गन्धर्वों को स्वप्न में देखने वाला मनुष्य अथवा स्वर्ण के वृक्षों को देखने वाला नौ मास तक जीवित रहता है।

पीवा कृशः कृशः पीवा योऽकस्मादेव जायते ।
स्वभावाच्च परावृत्तः जीवेदष्टमासिकम् ।।५।।
स्वप्ने यस्य भवेद्गुल्फात्पादखण्डनमेव च ।
पश्येत्तस्य भवेदायुर्यावत्सप्तममासिकम् ।।६।।

अचानक स्थूल (मोटा) व्यक्ति दुबला हो जाय तथा दुबला व्यक्ति मोटा हो जाय अथवा जिसका समग्र स्वभाव ही बदल जाय वह आठ मास तक जीवित रहता है । स्वप्न में जो व्यक्ति किसी गाँठ से अपने पैर को टूटता देखे उसकी आयु सात मास तक ही रहती है ।

कपोतगृध्रौ काकोल वायसावपि मूर्धनि ।
क्रव्यादो वा खलो लीनः षण्मासान्स च जीवति ।।७।।
हन्यते काकचाण्डालैः पांशुवर्षेण वा नरः ।
स्वां छायां अन्यथा दृष्ट्वा चतुर्मासान्स जीवति ।।८।।

जिसके माथे पर कबूतर, गृद्ध, कौआ, पहाड़ी कौआ, राक्षस या दुष्ट आत्मा बैठ जाय या गिरे वह छः मास तक जीवित रहता है । स्वप्न में जो व्यक्ति कौआ, चाण्डाल या धूलि वर्षा से अपने को मृत देखे अथवा अपनी छाया को और तरह का देखे वह चार महीने जीवित रहता है ।

सौदामिन्यभ्ररहितां दृष्ट्वा यामीं दिशं तथा ।
उत्तरां च धनुः श्लिष्टां जीवितं द्वित्रिमासिकम् ।।९।।
घृते तैलेऽथवाऽऽदर्शे तोये वा स्वशरीरकम् ।
यः पश्येदशिरस्कं स मासादूर्ध्वं न जीवति ।।१०।।

बादल रहित बिजली को दक्षिण दिशा में देखे और उत्तर दिशा को धनुष (इन्द्रधनुष) से व्याप्त देखे वह दो या तीन महीने जीवित रहता है । घी, तेल, दर्पण या जल में जो व्यक्ति अपना शरीर सिर रहित देखता है वह एक मास से ज्यादा जीवित नहीं रहता ।

यस्यदेहे छाग समो मृतदेह-समोऽपि वा ।
गन्धो भवेत्पुमान् सोऽपि पक्षपूर्तिं न जीवति ।।११।।
यस्य वै स्नातमात्रस्य हृत्पादमवशुष्यति ।
स्वप्ने वा जागरे वापि स जीवेद्दशवासरम् ।।१२।।

जिसके शरीर मे छाग (बकरी या मेष) के समान गन्ध उठे वह पन्द्रहदिन से ज्यादा जीवित नहीं रहता । जो मनुष्य स्वप्न में या जाग्रत अवस्था में स्नान करने मात्र से अपने हृदय या पैरों को सूखा हुआ देखता है वह दश दिन जीवित रहता है ।

निम्नः सन्मारुतो यस्य मर्मस्थानानि कृन्तति ।
न हृषत्यम्बु संस्पर्शात्तस्य मृत्युरुपस्थितः ।।१३।।
शाखा मृगर्क्षयानस्थो गायंश्चेद्दक्षिणां दिशम् ।
स्वप्ने प्रयाति तस्यापि मृत्युः कालमपेक्षते ।।१४।।

सामान्य हवा भी जिसके मर्म स्थान को काटती प्रतीत होती है जो जल छूकर प्रसन्न नहीं होता उसकी मृत्यु सन्निकट समझनी चाहिए । बन्दर और भालू की सवारी में बैठकर गाता हुआ स्वप्न में दक्षिण दिशा को जाने वाला व्यक्ति मृत्यु की अपेक्षा रखता है ।

रक्तकृष्णाम्बरधरा गायन्ती हसती च यम् ।
दक्षिणाशां नयेन्नारी स्वप्ने सोऽपि न जीवति ।।१५।।
नग्नं च क्षपणं स्वप्ने हसमानं प्रहृष्य वै ।
एवं [illegible] वीक्षते [illegible] विद्यान्मृत्युमुपस्थितम् ।।१६।।

लाल एवं काला वस्त्र को पहनी हुई स्त्री हसती एवं गाती हुई स्थिति में जिस व्यक्ति को दक्षिण दिशा में खींच ले जाती है वह जीवित नहीं रहता । स्वप्न में नग्न संन्यासी को हँसते हुए, उछलते कूदते, प्रसन्न हो बात करते हुए देखकर अपनी मृत्यु नजदीक समझना चाहिए ।

आमस्तकतलाद्यस्तु निमग्नं पङ्कसागरे ।
स्वप्ने पश्येत्तथात्मानं नरः सद्यो म्रियेत सः ।।१७।।
केशाङ्गारांस्तथा भस्मं वक्रगां निर्जलां नदीम् ।
विपरीतं परीतं वा सद्यो मृत्युं समेति सः ।।१८।।

जो स्वप्न में पैर से मस्तक पर्यन्त कीचड़ में अपने को फंसा देखता है वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है ।बाल, अंगारे, भस्म टेढ़ी-मेढ़ी नदी को सीधा या उल्टा देखकर मनुष्य शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है ।

यस्य वै भुक्तमात्रेऽपि हृदयं पीड्यते क्षुधा ।
जायते दन्तघर्षश्च स गतासुरसंशयम् ।।१९।।
धूपादिगन्धं नोवेत्ति स्वपित्यह्नि तथा निशि ।
नात्मानं परनेत्रस्थं वीक्षते न स जीवति ।।२०।।

जो व्यक्ति भोजन करने के शीघ्र बाद भूख से पीड़ित हृदय होने लगे तथा जिसके दांतों में टकराहट होने लगे वह निश्चित ही प्राणरहित हो जाता है । धूपादि गन्धों को जो नही सूंघ पाता (जिसके गन्ध को नहीं जान पाता), दिन-रात सोते रहता है, जो दूसरों की आँखों में अपनी छाया नहीं देख पाता वह जीवित नहीं रहता ।

शक्रायुधं निशीथे च तथा ग्रहगणं दिवा ।
दृष्ट्वा मन्येत संक्षीणमात्मजीवितमात्मदृक् ।।२१।।
नाधिकां वक्रतामेति कर्णयोर्नयनोन्नती ।
नेत्रं वामं च स्रवति तस्यायुरुदितं लघु ।।२२।।

रात्रि में इन्द्रधनुष तथा दिन में नक्षत्रगण को देखने वाला व्यक्ति अपनी आयु को क्षीण समझे । जिसकी आँखों और कानों की उन्नति अधिक टेढ़ी हो तथा वायीं आँख से अश्रुधारा गिरती हो उसकी आयु थोड़ी होती है ।

आरक्ततामेति मुखं जिह्वा चास्य सिता यदा ।
तदा प्राप्तं विजानीयान्मृत्युं मासेन चात्मनः ।।२३।।
उष्ट्ररासभयानेन यः स्वप्ने दक्षिणां दिशम् ।
प्रयाति तं विजानीयात्सद्यो मृत्युं [illegible] ।।२४।।

जिसका मुख लाल हो जाय तथा जिसकी जिह्वा उजली हो जाय तो एक मास के अन्दर उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है । ऊँट और गदहे की गाड़ी से स्वप्न में जो व्यक्ति दक्षिण दिशा में जाता है उसकी आयु को शीघ्र ही विनष्ट समझना चाहिए ।

पिधाय कर्णौ निर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम् ।
नश्यते चक्षुषो ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति ॥२५॥
पतितो यश्च वै गर्ते स्वप्ने निष्कास्यते न हि ।
न चोत्तिष्ठति यस्तस्मात्तदन्तं तस्य जीवितम् ॥२६॥

दोनो कानों को बन्द करके अपने अन्दर के नाद को नहीं सुन पाता तथा जिसकी आँखों की ज्योति नष्ट हो गयी हो वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहता। स्वप्न में जो व्यक्ति खाईं में गिर जाय तथा न निकल सके, न बैठ सके वह शीघ्र ही जीवन के अन्त को प्राप्त करता है ।

स्वप्नेऽग्निं प्रविशेद्यस्तु न च निष्क्रामते पुनः ।
जलप्रवेशादपि वा तदन्तं तस्य जीवितम् ॥२७॥

ऊर्ध्वा च दृष्टिर्न च संप्रविष्टा
रक्ता पुनः संप्रति वर्तमाना ।
मुखस्य चोष्मा विवरं च नाभेः
शंसंति पुंसामपरं शरीरम् ॥२८॥

स्वप्न में जो अग्नि में प्रवेश करता है पर निकल नहीं पाता अथवा जल मे प्रवेश करता है पर निकल नही पाता उसके जीवन का अन्त निकट समझना चाहिए। जिसकी दृष्टि ऊपर को उठ जाए पर नीचे न हो अथवा नीचे हो तो लाल हो जाए, मुख में गरमी तथा नाभि में छेद महसूस हो तो उस व्यक्ति को दूसरा शरीर मिलता है यानि वह मर जाता है ।

यश्चापि हन्यते दुष्टैर्भूतै रात्रावथो दिवा ।
स मृत्युं सप्तरात्रे तु पुमानाप्नोत्यसंशयम् ॥२९॥
स्ववस्त्रममलं शुक्लं रक्तं पश्यत्यथासितम् ।
यः पुमान् मृत्युरापन्नस्तस्येत्येव विनिर्दिशेत् ॥३०॥

जो व्यक्ति स्वप्न में दुष्टों से या भूतों से रात या दिन में मारा जाता हो वह सात रात में निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त करता है । जो व्यक्ति अपने निर्मल धवल वस्त्र को लाल या काला देखता है उसकी मृत्यु सन्निकट है ऐसा निर्देश करना चाहिए ।

स्वभाववैपरीत्यं तु प्रकृतेस्तु विपर्ययः ।
कथयन्ती मनुष्याणां षण्मासं जीवितावधिः ।।३१।। लिङ्गपुराणे ।
अप्सु वा यदि वाऽऽदर्शे यो ह्यात्मानं न पश्यति ।
अशिरस्कं तथात्मानं मासादूर्ध्वं न जीवति ।।३२।।

स्वभाव में विपरीतता का आना या स्वभाव का पूरी तरह बदल जाना मनुष्य के छः मास की जीवित अवधि को निर्देशित करता है । ऐसा लिङ्ग पुराण में कहा गया है । जल में या दर्पण में जो अपने को देख नहीं पाता, अपने को सिर रहित देखता है वह एक मास से ऊपर नहीं जीवित रहता । ऐसा नारद ऋषि का मत है ।

आत्मनस्तु शिरश्छायां नैव पश्येत् कर्हिचित् ।
उत्पातमीदृशं दृष्ट्वा मासमेकं स जीवति ।।३३।। स्वरशास्त्रे।
हस्ते न्यस्ते शिरसि यदि न च्छिन्नदण्डोऽस्य दृष्टः
षण्मासान्तर्न मरणभयं सम्पुटे हस्तयोस्तु ।
न्यस्ते शीर्षे यदि च कदलीकोरकाभं तदन्त-
र्दृष्टं नौभिस्तरति सलिले चेत्स्वशेफो न मृत्युः ।।३४।।

स्वरशास्त्र में कहा गया है कि अपने सिर की छाया जो नहीं देख पाता इस प्रकार उत्पात होने पर वह एक मास जीवित रहता है । सिर पर रखे हाथ की छाया यदि खण्डित न दिखे तो छः मास तक उसकी मृत्यु नहीं होती । सम्पुटित हाथ सिर पर रखने पर यदि केले के अग्र भाग की तरह उसमें दूरी (अवकाश) दिखे या तैरती नौका में अपना लिंग तैरता देखे तो उसकी मृत्यु नहीं होती ।

इत्युक्तं बहुशः स्वप्नग्रन्थेषु लिखितं मया ।
संगृह्य विदुषां तोषहेतवेऽतिप्रयत्नतः ।।३५।।
नामूलमत्र लिखितं दृष्ट्वा ग्रन्थाननेकशः ।
छन्दो विपरिणामेन स एवार्थो मयोदितः ।।३६।।

विद्वानों की तुष्टि हेतु अनेक स्वप्नग्रन्थों से संग्रह करके इस ग्रन्थ को अत्यन्त प्रयत्न पूर्वक लिखा है । इस ग्रन्थ मे आधार रहित कोई भी बात नही लिखी गयी है । मात्र छंद बदलकर वही अर्थ लिखा गया है जो प्राचीन स्वप्न ग्रन्थों मे कहे गये है ।

इति श्री पण्डितज्योतिर्विच्छ्रीधरेण संग्रहपूर्वकविरचितस्वप्नकमलाकरे प्रकीर्णकप्रकरणं कथनं नाम चतुर्थः कल्लोलःसमाप्तः ।।४।।



महाभारत से पूर्व कर्ण द्वारा देखे गये स्वप्न

महाभारत से पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने भेद नीति का प्रयोग करते हुए कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में लाना चाहा था, पर कर्ण ने यह कहते हुए मना कर दिया कि-- मैंने स्वप्न में देखा है कि युद्ध भीषणतम हो रहा है और कौरव पक्ष के सभी योद्धा मारे जा चुके है । अतः आप मुझे क्यों व्यामोहित कर मित्रघात एवं अपकीर्ति हेतु प्रेरित कर रहे है --

जानन् मां किं महाबाहो सम्मोहयितुमिच्छसि ।
योऽयं पृथिव्याः कात्स्र्येन विनाशः समुपस्थितः ।।

यहाँ पर कर्ण द्वारा देखे गये स्वप्नों को प्रस्तुत किया जा रहा है । उद्योगपर्व के 143 वें अध्याय में सविस्तार इन स्वप्नों का वर्णन उल्लिखित है --

स्वप्ना हि वहवो घोरा दृश्यन्ते मधुसूदन ।
निमित्तानि च घोराणि तथोत्पाताः सुदारुणाः ।।६।।
पराजयं धार्तराष्ट्रे विजयं च युधिष्ठिरे ।
शंसन्त इव वार्ष्णेय विविधा रोमहर्षणाः ।।७।।

हे मधुसूदन ! मुझे वहुत से घोर भयकारी स्वप्न एवं निमित्त (अपशकुन) दिखलाई दे रहे है । दारुण उत्पात भी दिखलाई दे रहे है । हे वार्ष्णेय ! अनेक लोमहर्षक उत्पात युधिष्ठिर की जीत तथा दुर्योधन की पराजय को सूचित कर रहे है ।

सहस्रपादं प्रासादं स्वप्नान्ते स्म युधिष्ठिरः ।
अधिरोहन् मया दृष्टः सः भ्रातृभिरच्युत ।।३०।।

हे अच्युत! मै ने स्वप्न के अन्तिम भाग में एक हजार खम्भों वाले राजप्रासाद पर भाइयों के साथ युधिष्ठिर को चढ़ते हुए देखा ।

श्वेतोष्णीषाश्च दृष्यन्ते सर्वे वै शुक्लवाससः ।
आसनानि च शुभ्राणि सर्वेषामुपलक्षये ।।३१।।

सभी भाई श्वेत पगड़ी पहने हुए श्वेत आसन पर दिखलाई दिए ।

तव चापि मया कृष्ण स्वप्नान्ते रुधिराविला ।
अन्त्रेण पृथिवी दृष्टा परिक्षिप्ता जनार्दन ।।३२।।

हे जनार्दन! मै ने स्वप्न के अन्तिम भाग मे आपकी इस पृथ्वी को रुधिर सनी तथा आंतों से लिपटी देखा ।

अस्थिसंचयमारूढश्चामितौजा युधिष्ठिरः ।

सुवर्णपात्र्यां संहृष्टो भुक्तवान् घृतपायसम् ।।३३।।

मैं ने स्वप्न मे देखा - हड्डियों की ढेर पर बैठे अमित वीर्यशाली युधिष्ठिर स्वर्ण पात्र मे प्रसन्न होकर घी और खीर का मिश्रित पक्वान्न खा रहे हैं ।

युधिष्ठिरो मया दृष्टो ग्रसमानो वसुन्धराम् ।
त्वया दत्तामिमां व्यक्तं भोक्ष्यते हि वसुन्धराम् ।।३४।।

मैं ने स्वप्न में देखा - युधिष्ठिर पृथ्वी को ग्रास बना रहे हैं अर्थात् पृथ्वी का निगरण कर रहे है । फलतः प्रत्यक्ष में वे ही आपकी इस पृथ्वी का भोग करेंगे, क्योंकि आपने पृथ्वी उन्हीं को दी है ।

उच्चं पर्वतमारूढो भीमकर्मा वृकोदरः ।
गदापाणिर्नरव्याघ्रो ग्रसन्निव महीमिमाम् ।।३५।।

मैं ने स्वप्न मे देखा - ऊँचे पर्वत पर चढ़े हुए भीषणकर्म करने वाले वृकोदर भीम हाथ में गदा लिए हुए पुरुष सिंह की तरह इस पृथ्वी को ग्रास बना रहे हैं।

पाण्डुरं गजमारूढो गाण्डीवी स धनञ्जयः ।
त्वया सार्धं हृषीकेश श्रिया परमया ज्वलन् ।।३६।।

मैं ने स्वप्न में देखा - आपके साथ गाण्डीवधारी अर्जुन श्वेत गजराज पर चढ़कर अद्‌भुत शोभा एवं दिव्य कांति से सुशोभित हो रहे है ।

नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महारथः ।
शुक्लकेयूरकण्ठस्त्राः शुक्लमाल्याम्बरावृताः ।।३९।।
अधिरूढा नरव्याघ्रा नरवाहनमुत्तमम् ।
त्रय एते मया दृष्टाः पाण्डुरच्छत्रवाससः ।।४०।।

मैं ने स्वप्न मे देखा - नकुल, सहदेव एवं सात्यकि महारथी उज्ज्वल कण्ठहार धारण किए हुए है तथा उज्ज्वल मालाओं से आवृत है । ये तीनो महारथी मनुष्यों के वाहन पर आरूढ़ है तथा श्वेतछत्र एवं वस्त्र धारण किए हुए है ।

श्वेतोष्णीषाश्च दृष्यन्ते त्रय एते जनार्दन ।
धार्तराष्ट्रेषु तान् विजानीह केशव ।।४१।।
अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ।
रक्तोष्णीषाश्च दृश्यन्ते सर्वे माधव पार्थिवाः ।।४२।।

हे जनार्दन! ये तीनों सफ़ेद पगड़ी धारण किए हुए है तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों की सेना मे अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा एवं राजा गण लाल पगड़ी धारण किए हुए है । ऐसा हमने स्वप्न मे देखा ।

उष्ट्रप्रयुक्तमारूढौ भीष्मद्रोणमहारथौ ।
मया सार्धं महाबाहो धार्तराष्ट्रेण वा विभो ।।४३।।
अगस्त्यशाक्त्यां च दिशं प्रयाताः स्म जनार्दन ।
अचिरेणैव कालेन प्राप्स्यामो यमसादनम् ।।४४।।

हे विभु! मै ने स्वप्न में देखा - भीष्म, द्रोण, मै स्वयं (कर्ण) तथा धृतराष्ट्र के अन्य पुत्र ऊँट के वाहन पर बैठकर अगस्त ऋषि की दिशा (दक्षिण दिशा) की ओर जा रहे है । अतः शीघ्र ही हम सभी लोग यमराज के घर पहुँच जायेंगे ।

दुःस्वप्ननाशनमंत्राः

'धर्मसिन्धु' ग्रन्थ में लिखा है कि ऋग्वेदोक्त 'यो मे राजन्' आदि मंत्र से लेकर 'सुऊतयो व ऊतयः' मंत्र तक पाठ करने से दुःस्वप्न का नाश होता है । भूत प्रेतादि बाधा जनित दुःस्वप्न से लेकर ग्रह एवं रोगोत्पन्न कारणों से आने वाले दुःस्वप्न भी इन मंत्रों के पाठ से ठीक हो जाते हैं । अतः इन मंत्रों को यहाँ दिया जा रहा है --

योमे राजन्युज्योवा सखावा स्वप्ने भयंभीरवे मह्यमाह ।
स्तेनोवा यो दिप्सतिनो वृको वा त्वं तस्माद्वरूण पाह्यस्मान् ।।१।।
अजैष्माद्यासनामचाभूमानागसोवयम् ।
जाग्रत्स्वप्नसङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु योनोद्वेष्टितमच्छतु।।२।।
यच्चगोपु दुःष्वप्न्यं यच्चास्मेदुहितर्दिवः ।
चितायतद्विभावर्याप्त्यायपरावहानेह सोवऊतयः सुऊतयोवऊतयः ।।३।।
निष्कं वा घा कृणवतेस्रजंवादुहितर्दिवः ।
चिते दुःष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये परिदह्मस्यनेहसोव ऊतयः सुऊतयोव ऊतयः ।।४।।
तदन्नाय तदपसे तंभागमुपसेदुषे ।
चिताय च द्वितायचोषो दुःष्वप्न्यं वहा नेहसो व ऊतयः सुऊतयोव ऊतयः ।।५।।
अजैष्माद्यासनामचाभूमानागसोवयम् ।
उषोयस्माद्दुष्वप्न्यादभैष्मापतदुच्छत्वनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।।६।।

श्री दशरथ जी की मृत्यु से पूर्व भरत द्वारा देखे गए स्वप्न

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के अयोध्या काण्ड के ६९ वें सर्ग में उन भयंकर दुःस्वप्नों का वर्णन है जिन्हें भरत ने अपने पिता दशरथ की मृत्यु से पूर्व की रात्रि में देखा था । उन स्वप्नों को यहाँ दिया जा रहा है --

यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति स्म तां पुरीम् ।
भरतेनापि तां रात्रिं स्वप्नो दृष्टोऽयमप्रियः ।।१।।

जिस रात्रि में अयोध्या के दूतों ने कैकय के राजगृह नगर में प्रवेश किया उससे पूर्व की रात्रि में भरत ने भी एक अप्रिय स्वप्न देखा था ।

व्युष्टामेव तु तां रात्रिं दृष्ट्वा स्वप्नमप्रियम् ।
पुत्रो राजाधिराजस्य सुभृशं पर्यतप्यत ।।२।।

भोर में उस अप्रिय स्वप्न को देखकर राजाधिराज दशरथ के पुत्र भरत मन में बहुत संतप्त हुए ।

तप्यमानं तमाज्ञाय वयस्याः प्रियवादिनः ।
आयासं विनयिष्यन्तः सभायां चक्रिरे कथा ।।३।।

उन्हें चिन्तित देखकर अनेक प्रियवादी मित्रों ने उनके मानसिक क्लेश को दूर करने के लिए गोष्ठी का आयोजन किया तथा वे अनेक प्रकार की बातें करने लगे ।

वादयन्ति तदा शान्तिं लासयन्त्यपि चापरे ।
नाटकान्यपरे स्माहुर्हास्यानि विविधानि च ।।४।।

कुछ लोग वीणा बजाने लगे तो कुछ लोग नृत्य करने लगे । अन्य लोगों ने हास्य प्रधान नाटकों का आयोजन किया ।

स तैर्महात्मा भरतः सखिभिः प्रियवादिभिः ।
गोष्ठी हास्यानि कुर्वद्भिर्न प्राहृष्यत राघवः ।।५।।

परन्तु उन प्रिय मित्रों के द्वारा आचरित गोष्ठी एवं हास्य से महात्मा भरत प्रसन्न नहीं हुए ।

तमब्रवीत् प्रियसखो भरतं सखिभिर्वृतम् ।
सुहृद्भिः पर्युपासीनः किं सखे नानुमोदसे ।।६।।

मित्रों से घिरे हुए भरत से एक प्रिय मित्र ने पूछा -- मित्र तुम आज प्रसन्न क्यों नहीं हो रहे हो ।

एवं ब्रुवाणं सुहृदं भरतः प्रत्युवाच ह ।
शृणु त्वं यन्निमित्तं मे दैन्यमेतदुपागतम् ।।७।।

इस प्रकार मित्र द्वारा पूछे जाने पर भरत ने प्रत्युत्तर दिया -- सखे! मेरे मन में जिस कारण से दैन्य भाव आया है उसे सुनो ।

स्वप्ने पितरमद्राक्षं मलिनं मुक्तमूर्धजम् ।
पतन्तमद्रिशिखरात् कलुषे गोमये ह्रदे ।।८।।

मैंने स्वप्न में अपने पिताजी को देखा वे मलिन मुख तथा खुले बाल थे। पर्वत की चोटी से वे कलुषित गड्ढे में गिर पड़े जिसमें गोबर भरा था ।

प्लवमानश्च मे दृष्टः स तस्मिन् गोमये ह्रदे ।
पिबन्नञ्जलिना तैलं हसन्निव मुहुर्मुहुः ।।९।।

मैंने उन्हें गोबर के कुण्ड में तैरते हुए देखा था वे अंजलि में तेल लेकर पी रहे थे और बार-बार हँसते हुए से लग रहे थे ।

ततस्तिलोदनं भुक्त्वा पुनः पुनरधःशिराः ।
तैलेनाभ्यक्तसर्वाङ्गस्तैलमेवान्वगाहत् ।।१०।।

इसके बाद उन्होंने तिल भात खाया, अपने सारे शरीर में तेल लगाकर सिर को नीचे किए हुए तेल में ही डुबकी लगाने लगे ।

स्वप्नेऽपि सागरं शुष्कं चन्द्रं च पतितं भुवि ।
उपरुद्धां च जगतीं तमसेव समावृताम् ।।११।।

स्वप्न में मैंने समुद्र को भी सूखा देखा । चन्द्रमा पृथ्वी पर गिर पड़ा है तथा सारी पृथ्वी उपद्रव से ग्रस्त एवं अन्धकार से लिप्त हो गई है ऐसा दृश्य दिखलाई पड़ा ।

औपवाह्यस्य नागस्य विषाय शकलीकृतम् ।
सहसा चापि संशान्ता ज्वलिता जातवेदसः ।।१२।।

सवारी में जुतने वाले हाथी का दाँत दो टुकड़ों में टूटकर बिखर गया और पहले से जलती हुई अग्नि अचानक बुझ गयी ।

अवदीर्णां च पृथिवीं शुष्कांश्चविविधान् द्रुमान् ।
अहं पश्यामि विध्वस्तान् साधुमांश्चैव पर्वतान् ।।१३।।

मैंने स्वप्न में पृथ्वी को फटी हुई तथा वृक्षों को सूखा हुआ देखा और पर्वतों को ढहा हुआ देखा जिनसे धुआं निकल रहा था ।

पीठे कार्ष्णायसे चैव निषण्णं कृष्णवाससम् ।
प्रहरन्ति स्म राजानं प्रमदाः कृष्णपिङ्गलाः ।।१४।।

लोहे के आसन पर राजा (दशरथ) को बैठे हुए देखा जिन्होंने काला वस्त्र पहन रखा है । काले एवं पिंगल वर्ण की महिलाएँ उनके ऊपर प्रहार कर रही थीं ।

त्वरमाणश्च धर्मात्मा रक्तमाल्यानुलेपनः ।
रथेन खरयुक्तेन प्रयातो दक्षिणामुखः ।।१५।।

धर्मात्मा राजा दशरथ लाल फूलों की माला पहने तथा चंदन लगाए हुए गधों की सवारी से युक्त रथ पर बैठकर तीव्र वेग से दक्षिण की ओर जा रहे थे ।

प्रहसन्तीव राजानं प्रमदा रक्तवासिनी ।
प्रकर्षन्ती मया दृष्टा राक्षसी विकृतानना ।।१६।।

मैंने स्वप्न में देखा कि लाल वस्त्र पहनी अट्टहास करती हुई डरावने मुख वाली राक्षसी महाराज को खींचती हुई ले जा रही है ।

एवमेतन्मया दृष्टामिमां रात्रिं भयावहाम् ।
अहं रामोऽथवा राजा लक्ष्मणो वा मरिष्यति ।।१७।।

इस प्रकार से इस भयावह रात्रि में मैंने ये स्वप्न देखा । मेरी, श्रीराम, महाराज (दशरथ) अथवा लक्ष्मण में से किसी एक की मृत्यु निश्चित ही होगी ।

नरो यानेन यः स्वप्ने खरयुक्तेन याति हि ।
अचिरात्तस्य धूमाग्रं चितायां सम्प्रदृश्यते ।।१८।।

जो मनुष्य स्वप्न में गधे से युक्त रथ पर यात्रा करता है शीघ्र ही उसकी चिता का धुआं उठता नजर आता है ।

एतन्निमित्तं दीनोऽहं न वचः प्रतिपूजये ।
शुष्यतीव च मे कण्ठो न स्वस्थमिव मे मनः ।।१९।।

इसी कारण से मैं दुःखी हो रहा हूँ और आप लोगों की बातों में मेरी श्रद्धा नहीं हो रही है । मेरा गला सूख रहा है और मन अस्वस्थ हो रहा है ।

न पश्यामि भयस्थानं भयं चैवोपधारये ।
भ्रष्टश्च स्वरयोगो मे छाया चापगता मम ।
जुगुप्स इव चात्मानं न च पश्यामि कारणम् ।।२०।।

मैं भय का कारण न देखने पर भी भय से ग्रस्त हो रहा हूँ । मेरा स्वर योग (गति) बदल गया है तथा मेरी कांति धूमिल हो गयी है । मैं स्वयं से घृणा करने लगा हूँ यद्यपि ऐसा कोई कारण नहीं है ।

इमां च दुःस्वप्नगतिं निशाम्य हि
त्वनेकरूपामवितर्कितां पुरा ।
भयं महत्तद्धृदयान्न याति मे
विचिन्त्य राजानमचिन्त्यदर्शनम् ।।२१।।

इस दुःस्वप्न की गति को सुनकर यानि अवितर्कित दुःस्वप्न को देखकर साथ ही महाराज को इस अवस्था में स्वप्न में देखकर जिसकी हमने कल्पना नहीं की थी मेरा हृदय महान् भय से भर गया है । मेरे हृदय से यह भय दूर नहीं हो रहा है ।

त्रिजटा का स्वप्न

अशोक वाटिका में भगवती सीता को जब सभी राक्षसियाँ मिलकर संत्रास दे रही थीं उसी समय त्रिजटा ने आकर उन सभी को अपना स्वप्न सुनाया जिसे उसने विगत रात्रि में देखा था । त्रिजटा का स्वप्न दैविक स्वप्न की कोटि में आता है । इसे भविष्य दर्शन कराने वाला (प्रिडिक्टिव) स्वप्न भी कहा जा सकता है; क्योंकि सीता दर्शन के बाद हनुमान जी का कार्य पूरा हो चुका था और वे लंका से लौट आते; पर त्रिजटा के स्वप्न ने उन्हें अशोकवन विध्वंस के लिए प्रेरित किया। यहाँ वाल्मीकीय रामायण और रामचरित मानस दोनों से वृद्धा त्रिजटा राक्षसी का स्वप्न दिया जा रहा है --

स्वप्नो ह्यद्य मया दृष्टो दारुणो रोमहर्षणः ।
राक्षसानामभावाय भर्तुरस्या भवाय च ।।सुन्दरकाण्ड२७।६।।

आज (रात में) मैं ने स्वप्न देखा जो रोंगटे खड़े कर देने वाला तथा भीषण था, जो राक्षसों के विनाश तथा सीता के पति के अभ्युदय को सूचित करता है।

एवमुक्तास्त्रिजटया राक्षस्यः क्रोधमूर्च्छिताः ।
सर्वा एवाब्रुवन् भीतास्त्रिजटां तामिदं वचः ।।२७।७।।

क्रोध से वशीभूत राक्षसियाँ त्रिजटा के स्वप्न की बात सुनकर भयभीत हो उठीं । वे सभी त्रिजटा से इस प्रकार बोलीं --

कथयस्व त्वया दृष्टः स्वप्नोऽयं कीदृशो निशि ।
तासां श्रुत्वा तु वचनं राक्षसीनां मुखोद्गतम् ।।२७।८।।
उवाच वचनं काले त्रिजटा स्वप्नसंश्रितम् ।

तुमने रात्रि में किस तरह का स्वप्न देखा- बताओ । उन राक्षसियों के इस प्रकार के वचन को सुनकर त्रिजटा ने स्वप्न वाली बात को उसी समय कहा-

गजदन्तमयीं दिव्यां शिविकामन्तरिक्षगाम् ।।२७।९।।
युक्तां वाजिसहस्रेण स्वयमास्थाय राघवः ।
शुक्लमाल्याम्बरधरो लक्ष्मणेन समागतः ।।२७।१०।।

मैं ने स्वप्न में देखा - आकाश में चलने वाली हाथी दांतों की शिविका- जिसमें एक हजार घोड़े जुते हुए हैं - पर लक्ष्मण के साथ आसीन होकर श्वेत वस्त्र और श्वेत माला पहने हुए राघव (श्रीराम) आए हैं ।

स्वप्ने चाद्य मया दृष्टा सीता शुक्लाम्बरावृता ।
सागरेण परिक्षिप्तं श्वेतपर्वतमास्थिता ।।२७।११।।

मैं ने स्वप्न में श्वेत वस्त्र धारण की हुई सीता को देखा जो समुद्र से घिरे श्वेत पर्वत के ऊपर बैठी हुई है।

रामेण संगता सीता भास्करेण प्रभा यथा ।
राघवश्च पुनर्दृष्टश्चतुर्दन्तं महागजम् ।।२७।१२।।

श्री राम के साथ सीता का मिलन हो गया जैसे सूर्य के साथ प्रभा (सूर्या) देवी का मिलन होता है । मैं ने दुबारा राघव (श्रीराम) को देखा जो चार दाँत वाले महागजराज पर --

आरूढः शैलसंकाशं चकास सहलक्ष्मणः ।
ततस्तु सूर्यसंकाशौ दीप्यमानौ स्वतेजसा ।।२७।१३।।

जो पर्वत की तरह दिख रहा था - लक्ष्मण के साथ सुशोभित हो रहे थे । वे दोनों अपने तेज से सूर्य की तरह ओजस्वी लग रहे थे ।

शुक्लमाल्याम्बरधरौ जानकीं पर्युपस्थितौ ।
ततस्तस्य नगस्याग्रे ह्याकाशस्थस्य दन्तिनः ।।२७।१४।।

वे दोनों भाई श्वेत माला धारण किए हुए जानकी के पास आये । उस पर्वत के ऊपर आकाश में स्थित हाथी को --

भर्त्रा परिगृहीतस्य जानकी स्कन्धमाश्रिता ।
भर्तुरङ्कात् समुत्पत्य ततः कमललोचना ।।२७।१५।।

श्रीराम ने पकड़ रखा था । उसके कन्धे पर सीता आकर बैठ गई । इसके बाद कमल नेत्र वाली सीता पति श्रीराम की गोद से उड़कर --

चन्द्रसूर्यौ मया दृष्टा पाणिभ्यां परिमार्जती ।
ततस्ताभ्यां कुमाराभ्यामास्थितः स गजोत्तमः ।।२७।१६।।

चन्द्र एवं सूर्य के मण्डल को अपने दोनों हाथों से पोंछ रही हैं, सहला रही हैं । इसके बाद वह गजराज जिसपर राम लक्ष्मण -

सीतया स विशालाक्ष्या लंकाया उपरि स्थिता ।
पाण्डुरर्षभयुक्तेन रथेनाष्टयुजा स्वयम् ।।२७।१७।।

और बृहद् लोचना सीता बैठीं हुईं थीं लंका के ऊपर आ कर खड़ा हो गया । आठ सफेद बैलों से युक्त रथ पर -

इहोपयातः काकुत्स्थः सीतया सह भार्यया ।
शुक्लमाल्याम्बरधरो लक्ष्मणेन सहागतः ।।२७।१८।।

श्वेत माला और पुष्पधारी श्रीराम अपनी पत्नी सीता के साथ तथा लक्ष्मण के साथ यहाँ पर (अशोक वन) पधारे ।

ततोऽन्यत्र मया दृष्टो रामः सत्यपराक्रमः ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा सीतया सह वीर्यवान् ।।२७।१९।।
आरूह्य पुष्पकं दिव्यं विमानं सूर्यसंनिभम् ।
उत्तरां दिशमालोच्य प्रस्थितः पुरुषोत्तमः ।।२७।२०।।

इसके बाद दूसरी जगह मैं ने देखा सत्यपराक्रम एवं बलशाली श्रीराम अपनी भार्या सीता और भाई लक्ष्मण के साथ दिव्य पुष्पक विमान - जो सूर्य की तरह चमक रहा था - पर चढ़कर उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर गये ।

एवं स्वप्ने मया दृष्टो रामो विष्णुपराक्रमः ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा सीतया सह भार्यया ।।२७।२१।।

इस प्रकार मैं ने स्वप्न में विष्णु की तरह बलशाली श्रीराम को भार्या सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ देखा ।

न हि रामो महातेजाः शक्यो जेतुं सुरासुरैः ।
राक्षसैर्वापि चान्यैर्वा स्वर्गः पापजनैरिव ।।२७।२२।।

श्री राम महा तेजस्वी हैं । वे सुर असुर से जीते नहीं जा सकते । राक्षस या अन्य प्राणी भी उन्हें नहीं जीत सकते जैसे पापी मनुष्य स्वर्ग नहीं जीत पाता उसी तरह श्रीराम को जीतना भी असंभव है ।

रावणश्च मया दृष्टो मुण्डस्तैलसमुक्षितः ।
रक्तवासाः पिबन्मत्तः करवीरकृतस्रजः ।।२७।२३।।
विमानात् पुष्पकादद्य रावणः पतितः क्षितौ ।
कृष्यमाणः स्त्रिया मुण्डो दृष्टः कृष्णाम्बरःपुनः ।।२७।२४।।

मैं ने रावण को स्वप्न में देखा । वह मुंडित केश था । तेल से स्नान कर लाल कपड़ा पहने हुए मदिरा पीकर मतवाला हो रहा था और करवीर (कनैल) के फूलों की माला को पहन रखा था । वह पुष्पक विमान से धरती पर गिर पड़ा और एक स्त्री उस मुंडित सिर रावण को खींच रही थी । मैं ने स्वप्न में देखा- वह (रावण) काला कपड़ा पहने हुए था ।

रथेन खरयुक्तेन रक्तमाल्यानुलेपनः।
पिबस्तैलं हसन्नृत्यन् भ्रान्तचित्ताकुलेन्द्रियः ।।२७।२५।।
गर्दभेन ययौ शीघ्रं दक्षिणां दिशमास्थितः ।
पुनरेव मया दृष्टो रावणो राक्षसेश्वरः ।।२७।२६।।

वह गदर्भ जुते रथ पर लाल माला पहने हुए, तेल पीते हुए, अट्टहास करते हुए, व्याकुल इन्द्रिय गधे पर सवार होकर दक्षिण दिशा की ओर चला गया। पुनः मैं ने देखा राक्षसराज रावण -

पतितोऽवाक्शिरा भूमौ गर्दभाद् भयमोहितः ।
सहसोत्थाय सम्भ्रान्तो भयार्तो मदविह्वलः ।।२७।२७।।

भयभीत होकर गधे के पीठ से औंधे मुख भूमि पर गिर पड़ा और अचानक उठकर भयभीत मदविह्वल घबराया -

उन्मत्तरूपो दिग्वासा दुर्वाक्यं प्रलपन् बहु ।
दुर्गन्धं दुःसहं घोरं तिमिरं नरकोपमम् ।।२७।२८।।

पागलों की तरह गाली गलौज बकने लगा । वह नंगा हो गया था। दुर्गन्ध युक्त असहनीय घोर अंधकारपूर्ण और नरक तुल्य -

मलपङ्कं प्रविश्याशु मग्नस्तत्र स रावणः ।
प्रस्थितो दक्षिणामाशां प्रविष्टोऽकर्दमं ह्रदम् ।।२७।२९।।

मलमूत्र के पंक में जो उसके सामने ही फैला था उसी में गिर पड़ा और उसमें डूब गया । वह दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान कर रहा था तथा कीचड़रहित सरोवर में घुस रहा था ।

कण्ठे बद्ध्वा दशग्रीवं प्रमदा रक्तवासिनी ।
काली कर्दमलिप्ताङ्गी दिशं याम्यां प्रकर्षति ।।२७।३०।।

एक काले रंग की स्त्री जो कीचड़ से लिपटी हुई थी साथ ही लाल साड़ी पहनी हुई थी, रावण का गला बांधकर दक्षिण दिशा की ओर खींचती हुई ले जा रही थी ।

एवं तत्र मया दृष्टः कुम्भकर्णो महाबलः ।
रावणस्य सुताः सर्वे मुण्डास्तैलसमुक्षिताः ।।२७।३१।।

इसी प्रकार से मैं ने स्वप्न में कुम्भकर्ण को भी इसी दशा में देखा । रावण के सभी पुत्र सिर मुंड़ाए तेल में नहाए दिखाई दे रहे थे ।

वराहेण दशग्रीवः शिशुमारेण चेन्द्रजित् ।
उष्ट्रेण कुम्भकर्णश्च प्रयातो दक्षिणां दिशम् ।।२७।३२।।

रावण सूअर पर सवार होकर, सूंस पर मेघनाद तथा ऊँट पर कुंभकर्ण सवार होकर दक्षिण दिशा की ओर गये ।

एकस्तत्र मया दृष्टः श्वेतच्छत्रो विभीषणः ।
शुक्लमाल्याम्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः ।।२७।३३।।

राक्षसों में मात्र विभीषण ही ऐसे थे जो श्वेत माला एवं वस्त्र पहने हुए श्वेत चंदन और अंगराग लगाये हुए सिर पर श्वेत छत्र धारण किए हुए थे ।

शंखदुन्दुभिनिर्घोषैर्नृत्तगीतैरलंकृतः ।
आरूह्य शैलसंकाशं मेघस्तनितनिःस्वनम् ।।२७।३४।।

वे शंख और दुंदुभी (नगाड़े) के घोष तथा नृत्य गीत से सुशोभित हो रहे थे । वे पर्वतों की तरह विशाल तथा मेघ की तरह गड़गड़ाहटपूर्ण –

चतुर्दन्तं गजं दिव्यमास्ते तत्र विभीषणः ।
चतुर्भिः सचिवैः सार्धं वैहायसमुपस्थितः ।।२७।३५।।

चार दाँत वाले दिव्य हाथियों पर आकाश में सवार थे । उनके साथ चार सचिव भी थे ।

समाजश्च महान् वृत्तो गीतवादित्रनिःस्वनः ।
पिबतां रक्तमाल्यानां रक्षसां रक्तवाससाम् ।।२७।३६।।

यह भी देखा गया कि तेल पीने वाला तथा लाल वस्त्र एवं माला पहनने वाला राक्षसों का समाज गीत वाद्य के साथ वहाँ जुटा हुआ है ।

लंका चेयं पुरी रम्या सवाजिरथकुञ्जरा ।
सागरे पतिता दृष्टा भग्नगोपुरतोरणा ।।२७।३७।।

यह सुंदर लंका पुरी हाथी घोड़ों रथों के साथ सागर में गिर पड़ी है । उसका सिंहद्वार और ध्वज नष्ट हो चुका है ।

लंका दृष्टा मया स्वप्ने रावणेनाभिरक्षिता ।
दग्धा रामस्य दूतेन वानरेण तरस्विना ।।२७।३८।।

मैं ने स्वप्न में देखा कि रावण द्वारा अभिरक्षित लंका पुरी श्रीराम के तेजस्वी वानर दूत के द्वारा जला दी गई है ।

पीत्वा तैलं प्रमत्ताश्च प्रहसन्त्यो महास्वनाः ।
लङ्कायां भस्मरूक्षायां सर्वा राक्षसयोषितः ।।२७।३९।।

तैल पीकर उन्मत्त हुई अत्यन्त भयकारी राक्षसों की पत्नियाँ भस्म से रूक्ष लंका नगरी में अट्टहास कर रही थी ।

कुम्भकर्णादयश्चेमे सर्वे राक्षसपुंगवाः ।
रक्तं निवसनं गृह्य प्रविष्टा गोमयह्रदम् ।।२७।४०।।

कुंभकर्ण आदि समस्त राक्षस शिरोमणि वीर लाल कपड़े पहन कर गोबर के सरोवर में घुस गये है ।

अपगच्छत पश्यध्वं सीतामाप्नोति राघवः ।
घातयेत् परमामर्षी युष्मान् सार्धं हि राक्षसैः ।।२७।४१।।

इसलिए अब तुम लोग यहाँ से हट जाओ । राक्षसों के साथ तुम लोगों को भी वे मरवा डालेंगे और सीता जी को प्राप्त कर लेंगे ।

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ।।
सपने बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ।।
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ।।
एहि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ बिभीषन पाई ।।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ।।
यह सपना मै कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ।।
(श्रीरामचरितमानस से संगृहीत)

आदित्यमंडलं वापि चन्द्रमंडलमेव वा ।
स्वप्ने गृह्णाति हस्ताभ्यां राज्यं संप्राप्नुयान्महत् ।।रामायणभूषण ।।

स्वप्न में जो पुरुष या स्त्री अपने दोनों हाथों से सूर्य मण्डल अथवा चन्द्र मण्डल को छू लेता है उसे विशाल राज्य की प्राप्ति होती है ।

सिद्धिदायक स्वप्न

तंत्र साधना के क्रम में जब साधक अपनी साधना के उच्चतम बिन्दु पर पहुँचता है तो उसे कुछ ऐसे स्वप्न दिखलाई देते है जो बतलाते हैं कि शीघ्र ही देवदर्शन, मंत्रसिद्धि, पुरश्चरण साफल्य या इष्ट सिद्धि होने वाली है । ऐसे ही कुछ स्वप्न जो अनुकूल चिह्न के रूप में माने जाते है श्री बगलामुखीरहस्यम् से यहाँ दिए जा रहे हैं -

सिद्धिचिह्नानि प्रोक्तानि वासनाकथने मम ।
आनुकूल्यस्य चिह्नानि शृणु साधयतस्तदा ।।
स्वप्ने पोतेषु वनितावृन्दैः सम्मेलनं निशि ।
गजादिसौधशृङ्गेषु विहारो राजदर्शनम् ।।
गजानामंगनानां च दर्शनं नृत्यगीतयोः ।
उत्सवं च सुरामांसदर्शनं स्पर्शनं तथा ।।

सिद्धि से पूर्व सिद्धिसूचक अनुकूल चिह्न के रूप में जिन स्वप्नों का दिखलाई देना शुभ कहा गया है वे निम्नलिखित है -- रात में जहाज में औरतों के समूह से भेंट होना, हाथी विहार, राजमहल विहार, पर्वत शिखर पर भ्रमण, राजा का दर्शन, हाथियों एवं महिलाओं का दर्शन, नृत्य गीत उत्सव आदि का दर्शन, मदिरा एवं मांस का दर्शन तथा स्पर्शन अत्यंत शुभ होता है । इन स्वप्नों को देखने के पश्चात् साधक को समझ लेना चाहिए कि सिद्धि उससे दूर नहीं है ।

सिद्धिनाशक स्वप्न

निन्द्यानि शृणु देवेशि विघ्नानर्थकराणि च ।
कृष्णवर्णैर्भटैः स्वप्ने प्रहारस्तैललेपनम् ।।
मैथुनं परनारीभिरिन्द्रियच्यवनं तथा ।
राष्ट्रक्षोभो वह्निर्वायुर्जलभिर्बन्धुनाशनम् ।।
गुरावुपेक्षा सम्पत्तिवसूनां व्याधिनाशनम् ।
अन्यमन्त्रार्चनश्रद्धा विघ्नो नित्यार्चनेऽनिशम् ।।

आराधना एवं साधना सिद्धि के काल में पूर्वजन्म एवं वर्तमान के कुसंस्कार के कारण कुछ ऐसे स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं जो बतलाते हैं कि की जा रही साधना विफल हो जाएगी या रोग शोक दुःख आदि को देगी । ये दुःस्वप्न निम्नलिखित

है -- काले रंग के मल्लों से भेंट होना, प्रहार करना, तेल लगाना, मैथुन करना, दूसरों की स्त्रियों से संबन्ध बनाना, इन्द्रिय विशेष का नष्ट होना, राष्ट्रक्षोभ को देखना, आग हवा एवं जल के द्वारा तबाही देखना, बन्धुओं का नाश देखना, गुरु की उपेक्षा करना, रोग सम्पत्ति एवं धन का नाश देखना, अपने इष्ट देवता से अतिरिक्त दूसरे देवता में श्रद्धा करना आदि ।

चरक संहितोक्त स्वप्नफल

चरक संहिता आयुर्वेद का विश्रुत ग्रन्थ है । महर्षि चरक विरचित इस ग्रन्थ में इन्द्रिय स्थान प्रकरण में स्वप्न के संदर्भ में शुभ एवं अशुभ फल दिए हुए हैं । वे यहाँ दिए जा रहे है --

गृहप्रासादशैलानां नागानां वृषभस्य च ।
हयानां पुरुषाणां च स्वप्ने समधिरोहणम् ।।१२।८१।।

जब व्यक्ति स्वप्न में घर, महल, पर्वत, हाथी, बैल तथा घोड़े पर अपने को चढ़ा देखता है (शुभफल प्राप्त करता है) ।

अर्णवानां प्रतरणं वृद्धिः संबाधनिःसृतिः ।
स्वप्ने देवैः सपितृभिः प्रसन्नैश्चाभि भाषणम् ।।१२।८२।।

स्वप्न में समुद्र को तैरना, अपनी वृद्धि देखना, बाधाओं के पार जाना, देवताओं एवं अपने पितरों से प्रसन्न होकर बात-चीत करना (शुभ का सूचक होता है) ।

सोमार्काग्निद्विजातीनां गवां नृणां यशस्विनाम् ।
दर्शनं शुक्लवस्त्राणां ह्रदस्य विमलस्य च ।।१२।८३।।

स्वप्न में चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि तथा ब्राह्मणों का, गायों, यशस्वी मनुष्यों एवं उज्ज्वल वस्त्र तथा स्वच्छ तालाब का दर्शन (शुभ फल देता है) ।

मांसमत्स्यविषामेध्यच्छत्रादर्शपरिग्रहः ।
स्वप्ने सुमनसां चैव शुक्लानां दर्शनं शुभम् ।।१२।८४।।

स्वप्न में मांस, मछली, विष, अपवित्र (मल-मूत्रादि), छत्र, दर्पण तथा उजले फूलों का दर्शन शुभ फल देता है ।

अश्वगोरथयानं च यानं पूर्वोत्तरेण च ।
रोदनं पतितोत्थानं द्विषतां चावमर्दनम् ।।१२।८५।।

स्वप्न में घोड़ा, गाय, रथ, तथा वाहन का पूर्वोत्तर दिशा में जाना, रोना, गिरकर उठ जाना तथा शत्रुओं का मर्दन करना शुभ सूचक होता है ।

शारङ्गधर संहितोक्त स्वप्नफल

शारङ्गधर संहिता के तीसरे अध्याय में शुभ एवं अशुभ स्वप्नों का विवेचन प्राप्त होता है । इन स्वप्न फलों को यहाँ दिया जा रहा है --

दुःस्वप्नलक्षणानि -

स्वप्नेषु नग्नान्मुण्डांश्च रक्तकृष्णाम्बरावृताम् ।
व्यङ्ग्यांश्च विकृतान् कृष्णान्सपाशान् सायुधानपि ।।
बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दिशमाश्रितान् ।
महिषोष्ट्रखरारूढान् स्त्रीपुंसो यस्तु पश्यति ।।
स स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ।।३।१६।।

जो व्यक्ति स्वप्न में नग्न एवं मुंडित व्यक्ति को, लाल एवं काले कपड़े पहने हुए को, टेढ़े-मेढे अंग वाले को, विकृतांग को, काले व्यक्ति को जिसके हाथ में पाश तथा हथियार हो, बांधते हुए तथा मारते (हत्या करते) हुए, दक्षिण दिशा को जाते हुए भैंस, ऊँट तथा गधे पर चढ़कर स्त्री या पुरुष को जाते हुए देखता है वह व्यक्ति यदि स्वस्थ हो तो रोगी हो जाता है और रोगी हो तो मृत्यु को प्राप्त करता है।

अधो यो निपतत्युच्चाज्जलेऽग्नौ वा विलीयते ।
श्वापदैर्हन्यते योऽपि मत्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् ।।३।१७।।

जो व्यक्ति स्वप्न में ऊँचाई से गड्ढे में गिर जाता है या अग्नि में धस जाता है, हिंसक जन्तुओं से मारा जाता है या मछलियों व जलजन्तुओं से भक्षित हो जाता है (तो वह मृत्यु को प्राप्त करता है) ।

यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् ।
तैलं सुरां पिबेद्वापि लोहं वा लभते तिलान् ।।३।१८।।

स्वप्न में जिसकी दोनों आँखें बन्द हो जाती हैं या जो दीपक को बुझता हुआ देखता है, तेल, सुरा (मदिरा) को पीता है अथवा लोहा या तिल को प्राप्त करता है (वह मृत्यु को प्राप्त करता है) ।

पक्वान्नं लभतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् ।
स स्वस्थो लभते रोगं रोगी यात्येव पञ्चताम् ।।३।१९।।

जो व्यक्ति स्वप्न में पक्वान्न को खाता है या प्राप्त करता है अथवा कुआं या गड्ढे में प्रवेश करता है वह यदि स्वस्थ है तो रोगी हो जाता है और रोगी मृत्यु को प्राप्त करता है ।

दु:स्वप्ननिवरण प्रयोग

दु:स्वप्नानेवमादींश्च दृष्ट्वा ब्रूयान्न कस्य चित् ।
स्नानं कुर्यादुषस्येव दद्याद्धेमतिलानयः ।।३।२०।।

दु:स्वप्न को देखकर किसी और व्यक्ति से नही बतलाना चाहिए तथा जागकर उषा काल में ही स्नान कर लेना चाहिए । इसके बाद स्वर्ण, तिल एवं लोहे का दान करना चाहिए ।

पठेत् स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् ।
कृत्वैवं त्रिदिनं मर्त्यो दु:स्वप्नात्परिमुच्यते ।।३।२१।।

दु:स्वप्न देखने के पश्चात् देवताओं के दिव्य स्तोत्रों का पाठ करे तथा रात मे देवालय में सोए । इस प्रकार तीन दिन आचरण करने से मनुष्य दु:स्वप्न के अशुभ फल को नही प्राप्त करता है ।

शुभस्वप्नम्

स्वप्नेषु यः सुरान् भूपान् जीवन्तः सुहृदो द्विजान् ।
गोसमिद्धाग्नितीर्थानि पश्येत्सुखमवाप्नुयात् ।।३।२२।।

स्वप्न में देवताओं, राजाओं एवं जीवित मित्रों, ब्राह्मणों को देखकर तथा गाय, प्रज्जवलित अग्नि एवं तीर्थ का दर्शन कर मनुष्य सुख को प्राप्त करता है।

तीर्त्वा कलुषनीराणि जित्वा शत्रुगणानपि ।
आरूह्य सौधगोशैल करिवाहान्सुखी भवेत् ।।३।२३।।

स्वप्न में गन्दे जल को (नाला आदि को) तैरकर, शत्रुओं के समूह को जीत कर, महल, गो, पर्वत, हाथी एवं वाहन पर चढ़कर व्यक्ति सुखी होता है।

शुभपुष्पाणि वासांसि मांसमत्स्य फलानि च ।
प्राप्यातुरः सुखी भूयात् स्वस्थो धनमवाप्नुयात् ।।३।२४।।

स्वप्न में शुभ फूलो को देखकर, उजले वस्त्र, मांस-मछली एवं फल को प्राप्त कर आतुर व्यक्ति सुख को प्राप्त करता है तथा स्वस्थ व्यक्ति धन को प्राप्त करता है ।

अगम्यागमनं लेपो विष्ठया रुदितं मृतिः ।
आममांसाशनं स्वप्ने धनारोग्याप्तये विदुः ।।३।२५।।

स्वप्न में अगम्य का आगमन, शरीर में मल का लेपन, मृत्यु में रूदन, कच्चे मांस का भोजन करना या देखना धन एवं आरोग्य को देता है । ऐसा समझना चाहिए ।

जलौका भ्रमरी सर्पो मक्षिका कापि यं दशेत् ।
रोगी स भूयादुल्लाधः स्वस्थो धनमवाप्नुयात् ।।३।२६।।

स्वप्न में जोंक, भ्रमरी, सर्प, मक्खी आदि जिसको काटे या डसे वह रोगी व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है तथा स्वस्थ व्यक्ति धन को प्राप्त करता है ।

मत्स्य पुराणोक्त स्वप्नफल

मत्स्य पुराण के 242 वें अध्याय में यात्रानिमित्तक स्वप्नों का वर्णन प्राप्त होता है। इन अपूर्व स्वप्न फलों को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है --

मनुरुवाच-

स्वप्नाख्यानं कथं देव! गमने प्रत्युपस्थिते ।
दृश्यन्ते विविधाकाराः कथं तेषां फलं भवेत् ।।१।।

भगवान् मत्स्य से मनु ने कहा - हे देव! यात्रा से पहले रात्रि में देखे हुए विविध प्रकार के स्वप्नो का फल कैसे जाना जाता है ?

मत्स्य उवाच-

इदानीं कथयिष्यामि निमित्तं स्वप्नदर्शने ।
नाभिं विनान्यगात्रेषु तृणवृक्षसमुद्भवः ।।२।।
चूर्णनं मूर्ध्नि कांस्यानां मुण्डनं नग्नता तथा ।
मलिनाम्बरधारित्वमभ्यङ्गः पंकदिग्धता ।।३।।

भगवान् मत्स्य ने कहा - अब मैं स्वप्नदर्शन के प्रतीक फलों को कहता हूँ - नाभि रहित शरीर में घास एवं वृक्ष आदि का उगना तथा मस्तक पर कांसे के वर्तन का टूटना, सिर का वपन (मुंडन), नग्नता, गन्दे वस्त्र को धारण करना, उबटन लगाना एवं कीचड़ लगना (स्वप्न में देखने पर) अशुभ फल देता है ।

उच्चात्प्रपतनं चैव दोलारोहणमेव च ।
अर्जनं पक्वलोहानां हयानामपि मारणम् ।।४।।
रक्तपुष्पद्रुमाणां च मण्डलस्य तथैव च ।
वराहर्क्षखरोष्ट्राणां तथा चारोहणक्रिया ।।५।।

ऊँचाई से गिरना, झूला झूलना, पक्वलौह पात्र को जुटाना, घोड़ों को मारना, लाल फूल वाले पेड़ों को देखना, लाल मंडल को देखना, सूअर, भालू, गदहा, ऊँट, आदि पर चढ़ना अशुभ फल का सूचक होता है ।

भक्षणं पक्षिमत्स्यानां तैलस्य कृसरस्य च ।

नर्तनं हसनं चैव विवाहो गीतमेव च ।।६।।

तन्त्रीवाद्यविहीनानां वाद्यानामभिवादनम् ।
स्रोतोऽवगाहगमनं स्नानं गोमयवारिणा ।।७।।

स्वप्न में पक्षियों एवं मछलियों को खाना, तेल एवं खिचड़ी को खाना, नाचना, हंसना, विवाह देखना एवं गीत गाना, वीणा से रहित अन्य वाद्यों को प्रणाम करना, जलाशय में स्नान करके यात्रा करना, गोबर के गड्ढे में स्नान करना महान् अशुभ फल देता है ।

पंकोदकेन च तथा महीतोयेन चाप्यथ ।
मातुः प्रवेशो जठरे चितारोहणमेव च ।।८।।
शक्रध्वजाभिपतनं पतनं शशिसूर्ययोः ।
दिव्यान्तरिक्षभौमानामुत्पातानां च दर्शनम् ।।९।।

कीचड़ के जल में तथा जमीन के भीतर के जल स्रोत में प्रवेश करना, माता के पेट में प्रवेश करना, चिता पर चढ़ना, इन्द्रध्वज को टूटते हुए देखना, चन्द्रमा एवं सूर्य को गिरते हुए देखना और आकाश एवं भूमि पर दिव्य उत्पातों को देखना महान् अशुभ का सूचक होता है ।

देवद्विजातिभूपालगुरूणां क्रोध एव च ।
आलिंगनं कुमारीणां पुरुषाणां च मैथुनम् ।।१०।।
हानिश्चैव स्वगात्राणां विरेकवमनक्रिया ।
दक्षिणाशाभिगमनं व्याधिनाभिभवस्तथा ।।११।।

देवता, ब्राह्मण, राजा, गुरु को क्रोधित अवस्था में देखना, कुमार लड़की का आलिंगन करना, पुरुषों के परस्पर मैथुन को देखना, अपने अंगों की हानि को देखना, दस्त उल्टी आदि क्रिया करना, दक्षिण दिशा में जाना, रोग से अपनी छति देखना भावी अशुभ का सूचक होता है ।

फलापहानिश्च तथा पुष्पहानिस्तथैव च ।
गृहाणां चैव पातश्च गृहसम्मार्जनं तथा ।।१२।।
क्रीडापिशाचक्रव्यादवानरर्क्षनरैरपि ।
परादभिभवश्चैव तस्माच्च व्यसनोद्भवः ।।१३।।

वृक्षों में फल एवं पुष्पों की हानि देखना, मकान को ढहते देखना, मकान की धुलाई पुताई देखना, पिशाच, राक्षस, बानर, भालू एवं मनुष्यों के साथ क्रीड़ा करते स्वयं को देखना, शत्रुओं से पराजित होते हुए स्वयं को देखना, पराजय के पश्चात् रोग ग्रस्त होना भविष्य के उत्पात ग्रस्त होने की सूचना देता है ।

काषायवस्त्रधारित्वं तद्वत् स्त्रीक्रीडनं तथा ।
स्नेहपानावगाहौ च रक्तमाल्यानुलेपनम् ।।१४।।
एवमादीनि चान्यानि दुःस्वप्नानि विनिर्दिशेत् ।
एषां संकथनं धन्यं भूयः प्रस्वापनं तथा ।।१५।।

स्वप्न में कषाय धारण करना, महिलाओं के साथ क्रीडा करना, तेल पीना तथा तेल में स्नान करना, लाल फूलमाला पहनना अशुभ होता है । इस प्रकार से अन्य दुःस्वप्नों को समझना चाहिये । दुःस्वप्न देखकर दूसरों से कह देना चाहिये तथा फिर से सो जाना चाहिये ।

कल्कस्नानं तिलैर्होमो ब्राह्मणानां च पूजनम् ।
स्तुतिश्च वासुदेवस्य तथा तस्यैव पूजनम् ।।१६।।
नागेन्द्रमोक्षश्रवणं ज्ञेयं दुःस्वप्ननाशनम् ।
स्वप्नास्तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः ।।१७।।

प्रातः काल उठकर स्नान करना, तिल से होम करना, ब्राह्मणों का पूजन करना, भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करना तथा उनकी पूजा करना श्रेयस्कर होता है यानि इन उपायों से दुःस्वप्न का अशुभ फल नष्ट हो जाता है । गजेन्द्रमोक्ष का पाठ करने और सुनने से दुःस्वप्न का नाश होता है ।रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे हुए स्वप्न का प्रभाव एक वर्ष के अन्दर दृष्टिगोचर होता है ।

षड्भिर्मासैर्द्वितीये तु त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ।
चतुर्थे मासमात्रेण पश्यतो नात्र संशयः ।।१८।।
अरूणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ।
एकस्यां यदि वा रात्रौ शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।।१९।।

रात्रि के दूसरे प्रहर में देखा हुआ स्वप्न छः महीने में तथा तृतीय प्रहर में देखा हुआ स्वप्न तीन महीने में अपना फल देता है । सूर्योदय से पूर्व यानि अरूणोदय काल में देखा हुआ स्वप्न दश दिन के अन्दर अपना फल देता है । एक ही रात में शुभ या अशुभ जो भी स्वप्न -

पश्चादृष्टस्तु यस्तत्र तस्य पाकं विनिर्दिशेत् ।
तस्माच्छोभनके स्वप्ने पश्चात् स्वप्नो न शस्यते ।।२०।।
शैलप्रासादनागाश्च वृषभारोहणं हितम् ।

द्रुमाणां श्वेतपुष्पाणां गमने च तथा द्विजः ।।२१।।

दिखाई देता है उनमें से अंतिम स्वप्न अपना .फल देता है यानि एक रात में चाहे जितने स्वप्न देखे जाएं परन्तु उनमें से अंतिम स्वप्न ही अपना शुभ या अशुभ फल देता है । इसलिए शुभ स्वप्न देखने के बाद अशुभ स्वप्न को देखना ठीक नहीं होता । पर्वत, राजमहल, हाथी तथा बैल पर चढ़ना हितकर होता है ।

द्रुमतृणोद्भवो नाभौ तथैव बहुबाहुता ।
तथैव बहु शीर्षत्वं फलितोद्भव एव च ।।२२।।
सुशुक्लमाल्यधारित्वं सुशुक्लाम्बरधारिता ।
चन्द्रार्कताराग्रहणं परिमार्जनमेव च ।।२३।।

स्वप्न में नाभि में पेंड़ या तृण का निकलना, अनेक भुजाओं से युक्त होना, अनेक सिर से युक्त होना विकास का सूचक होता है । सफेद फूलों की माला पहनना तथा सफेद वस्त्र धारण करना, चन्द्रमा, सूर्य एवं ताराओं को पकड़ लेना तथा उन्हें पोंछना शुभ फल देता है ।

शक्रध्वजालिङ्गनं च तदुच्छायक्रिया तथा ।
भूम्यम्बुधीनां ग्रसनं शत्रूणां च वधक्रिया ।।२४।।
जयो विवादे दूते च संग्रामे च तथा द्विज ।
भक्षणं चार्द्रमांसानां मत्स्यानां पायसस्य च ।।२५।।

इन्द्रध्वज का आलिंगन करना, उसे ऊपर की ओर उठाना, पृथिवी, समुद्र, को ग्रास बनाना तथा शत्रु का बध करना, विवाद में जीत हासिल करना, द्यूतक्रीड़ा में जीतना, युद्ध जीतना, गीले (ताजा) मांस को खाना, मछलियों तथा दूध को खाना-पीना, शुभ फल का सूचक होता है ।

दर्शनं रूधिरस्यापि स्नानं वा रूधिरेण च ।
सुरारुधिरमद्यानां पानं क्षीरस्य चाथ वा ।।२६।।
अन्त्रैर्वा वेष्टनं भूमौ निर्मलं गगनं तथा ।
मुखेन दोहनं शस्तं महिषीणां तथा गवाम् ।।२७।।

स्वप्न में खून को देखना या खून से स्नान करना, सुरा, खून एवं आसव को पीना, दूध को पीना, पृथ्वी एवं स्वच्छ आकाश को आंतों से लपेटना, भैंस एवं गाय के थन को अपने मुख से पीना, अत्यन्त शुभ फल देता है ।

सिंहीनां हस्तिनीनां च वडवानां तथैव च ।
प्रसादो देवविप्रेभ्यो गुरूभ्यश्च तथा शुभः ।।२८।।

अम्भसा त्वभिषेकस्तु गवां शृङ्गाश्रितेन वा ।
चन्द्राद् भ्रष्टेन वा राजन् ज्ञेयो राज्यप्रदो हि स ।।२९।।

पूर्वोक्त की तरह सिंहनी, हस्तिनी एवं घोड़ी का अपने मुख से दूध पीना शुभ फल देता है । देवता एवं ब्राह्मण तथा गुरु के द्वारा प्रसाद पाना शुभ फलदायी होता है । हे राजन्! स्वप्न में गायों को जल से स्नान कराना, शिखर या चन्द्रमा पर से गिर पड़ना, राज्य लाभ का सूचक होता है ।

राज्याभिषेकश्च तथा छेदनं शिरसस्तथा ।
मरणं वह्निदाहश्च वह्निदाहो गृहादिषु ।।३०।।
लब्धिश्च राज्यलिङ्गानां तन्त्रीवाद्याभिवादनम् ।
तथोदकानां तरणं तथा विषमलङ्घनं ।।३१।।

स्वप्न में राज्याभिषेक देखना, सिर का कटना देखना, मृत्यु देखना, अग्नि दाह देखना, जलते हुए घर को देखना, राज्यचिह्नों को प्राप्त करना यानि छत्र, चामर, सिंहासन आदि प्राप्त करना, वीणा नामक वाद्य को प्रणाम करना, जल में तैरना, दुर्लंघ्य चीजों (पहाड़ों) को लांघना शुभ सूचक माना गया है ।

हस्तिनीवडवानां च गवां च प्रसवो गृहे ।
आरोहणमथाश्वानां रोदनं च तथा शुभम् ।।३२।।
वरस्त्रीणां तथा लाभस्तथालिङ्गनमेव च ।
निगडैर्बन्धनं धन्यं तथा विष्ठानुलेपनम् ।।३३।।

हस्तिनी, घोड़ी तथा गाय का अपने घर में प्रसव देखना, घोड़े पर चढ़ना तथा स्वप्न में रोना, शुभ स्त्रियों को प्राप्त करना या उनका आलिंगन करना, निगड (लोहे की लम्बी जंजीर जिससे सारा शरीर बांधा जा सके) से बंध जाना तथा शरीर में विष्ठा का लिपट जाना अत्यंत शुभ दायक स्वप्न माना गया है ।

जीवतां भूमिपालानां सुहृदामपि दर्शनम् ।
दर्शनं देवतानां च विमलानां तथाम्भसाम् ।।३४।।
शुभान्यथैतानि नरस्तु दृष्ट्वा
प्राप्नोत्ययत्नाद् ध्रुवमर्थलाभम् ।
स्वप्नानि वै धर्म्मभृतां वरिष्ठ-
व्याधेर्विमोक्षं च तथातुरोऽपि ।।३५।।

स्वप्न में जीवित राजाओं तथा जीवित मित्रों का दर्शन करना, देवताओं का दर्शन करना, निर्मल जलाशयों को देखना, अत्यन्त शुभ होता है । इन शुभ स्वप्नों को देखकर मनुष्य बिना प्रयास के ही निश्चितरूप से धन को प्राप्त करता है । ये शुभ स्वप्न धार्मिक एवं वरिष्ठ मनुष्यों को निश्चित तौर से शुभ फल देते हैं । साथ ही साथ रोगी व्यक्ति इन शुभ स्वप्नों को देखकर रोग से विमुक्त हो जाता है ।

इति श्रीमात्स्ये महापुराणे यात्रानिमित्ते स्वप्नाध्यायो
नाम द्विचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ।।२४२।।

बृहस्पतिविरचितः

स्वप्नाध्यायः

तत्रादौ स्वप्नदर्शनावस्थामाह--

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं यदा ।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति ।।१।।

सर्वप्रथम स्वप्न देखने की अवस्था के संदर्भ में कहते हैं । जब सभी इन्द्रियाँ (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच कर्मेन्द्रियाँ) तथा मन जब सभी क्रियाओं से अलग होकर निश्चेष्ट होता है तब नाना प्रकार के स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं । स च स्वप्नो द्विविधः इष्टफलोऽनिष्टफलश्चेति । तत्रसामान्यत इष्टफलं यथा-

नदीसमुद्रतरणमाकाशगमनं तथा ।
भास्करोदयनंचैवप्रज्वलन्तं हुताशनम् ।।२।।

यह स्वप्न दो प्रकार का होता है -- शुभ फल देने वाला तथा अशुभ फल देने वाला । सामान्य रूप से शुभ फल देने वाले स्वप्न निम्नलिखित हैं-- नदी और समुद्र का तैरना, आकाश में उड़ना, सूर्योदय देखना, प्रज्वलित अग्नि देखना शुभ होता है ।चिताग्नि शुभ नहीं होती है ।

ग्रहनक्षत्रताराणां चन्द्रमण्डलदर्शनम् ।
हर्म्येष्वारोहणं चैव प्रासादशिखरेपि वा ।।३।।

ग्रह नक्षत्र एवं तारा मंडल को देखना, चन्द्रमण्डल को देखना, राजमहल पर चढ़ना, देवालय के शिखर पर चढ़ना शुभ होता है ।

एवमादीनिसंदृष्ट्वा नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ।
स्वप्ने तु मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम् ।।४।।
कृमिविष्ठानुलेपं च रूधिरेणाभिषेचनम् ।

इन शुभ स्वप्नों को देखकर मनुष्य शुभ फल को प्राप्त करता है । स्वप्न में मदिरा पान करना, चर्वी एवं मांस खाना, कृमि एवं मल को शरीर में लपेटना तथा खून से अभिषेक करना शुभ फल देता है ।

भोजनं दधिभक्तस्यश्वेतवस्त्रानुलेपनम् ।।५।।
रत्नान्याभरणादीनिस्वप्नेदृष्ट्वा प्रसिद्ध्यति ।

दही भात का भोजन करना, श्वेत वस्त्र लपेटना एवं स्वप्न में रत्न आभूषण को पहनना शुभ फल को देता है ।

देव-विप्र-द्विजच्छत्रतुषपंकज-पार्थिवान् ।।६।।
शुक्लपुष्पाम्बरधरां प्रशस्ताभरणांगनाम् ।

देवता, ब्राह्मण, चन्द्रमा, छत्र, भूसी, कमल, राजागण, उजले फूल, उजले वस्त्र पहनी हुई तथा आभूषण से सुशोभित महिलाएँ स्वप्न में शुभ होती है ।

वृषभं पर्वतं क्षीरफलिवृक्षाधिरोहणम् ।।७।।
दर्पणामिषमाल्याप्तिस्तरणं च महाम्भसाम् ।

बैल, पर्वत, दूध एवं फल वाले वृक्ष पर चढ़ना, दर्पण, मांस, फूलमाला की प्राप्ति तथा समुद्र तरण शुभ फल संधाता होता है ।

दृष्ट्वा स्वप्नेऽर्थलाभः स्याद्व्याधिमुक्तिश्च जायते ।।८।।

इन स्वप्नों को देखकर रोग से मुक्ति मिलती है तथा धन का लाभ होता है।

सामान्यतोऽनिष्टफलं यथा--

यूपकिंशुकवल्मीकपारिभद्राधिरोहणम् ।
तालकार्पास-रायाकलोहावाप्तिर्विपत्तये ।।९।।

अब अनिष्ट फलदायी स्वप्नों का विवेचन किया जा रहा है--

स्तम्भ, पलाश, बाँबी तथा नीब वृक्ष पर चढ़ना, ताल वृक्ष, कपास, रूई, लोहा आदि की प्राप्ति अशुभ फल सूचित करती है ।

विहारकरणं स्वप्ने रक्तवस्त्रविधारणम् ।
स्रोतसां हरणं नेष्टं पक्वमांसस्य भोजनम् ।।१०।।

स्वप्न में क्रीड़ा करना, लाल वस्त्र पहनना, जल बहाव को बदलना, पकाए हुए मांस का भोजन करना अत्यन्त अशुभ होता है ।

तदेवं द्विविधसाम्ये स्वप्नस्यपरत्वे कालभेदेन फलमाह--

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः ।
द्वितीयेचाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ।।११।।

अब इन शुभाशुभ स्वप्न फलों को स्वप्नदर्शन के काल भेद से निरूपित किया जा रहा है -- रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष के अन्दर फल देता है । द्वितीय प्रहर में देखा हुआ स्वप्न आठ मास में तथा तीसरे प्रहर में देखा हुआ स्वप्न तीन महीने के अन्दर फल देता है ।

चतुर्थयामे यःस्वप्नो मासे स फलदःस्मृतः।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ।।१२।।

रात के चौथे प्रहर में देखा हुआ स्वप्न एक मास के अन्दर फल देता है । अरुणोदय काल में देखा हुआ स्वप्न दश दिन के अन्दर फलीभूत होता है।

गोविसर्जनवेलायां दशाहेनफलं भवेत् ।
गोविसर्जनवेलायां सद्य एव फलं भवेत् ।।१३।।

जब गायें प्रातःकाल चरने के लिए बाहर जाती हैं, उस समय से लेकर सूर्योदय के बीच में देखा हुआ स्वप्न शीघ्र फल देता है ।

विशेष इष्टफलः स्वप्नो यथा–

यस्तु पश्यति वै स्वप्ने राजानं कुंजरं हयम् ।
सुवर्णं वृषभं गां च कुटुंबं तस्य वर्धते ।।१४।।

विशिष्टशुभ फल वाले स्वप्न-- जो व्यक्ति स्वप्न में राजा, हाथी, घोड़ा, स्वर्ण, बैल, तथा गाय को देखता है उसका कुटुम्ब बढ़ता है ।

आरोहणं गोवृषकुंजराणां प्रासादशैलाग्रवनस्पतीनाम् ।
विष्ठानुलेपोरुदितं मृतं च स्वप्नेष्वगम्यागमनं च धन्यम् ।।१५।।

स्वप्न में गाय, बैल, हाथी, राजमहल, पर्वत शिखर, वृक्ष का अग्रभाग तथा वनस्पतियों को देखना, शरीर में विष्ठालेप करना, रोना, अपने को मृत देखना, अगम्य स्त्री से संगम करना अत्यन्त शुभफल दायक होता है ।

क्षीरिणं फलितं वृक्षमेकाकी यः प्ररोहति ।
तत्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ।।१६।।

स्वप्न में दुग्धवृक्ष, फलदार वृक्ष पर जो अकेले चढ़ता है अगर उसी समय वह जाग उठे तो तत्काल धन प्राप्त होता है ।

यस्य श्वेतेन सर्पेण ग्रस्तश्चेद्दक्षिणः करः ।
सहस्रलाभस्तस्यस्यादपूर्णे दशमे दिने ।।१७।।

स्वप्न में जिस पुरुष को उजला सर्प दाहिने हाथ में काट ले उसे दश दिन के अन्दर हजार स्वर्णमुद्रा का लाभ होता है ।

उरगो वृश्चिको वापि जले ग्रसति यं नरम् ।
विजयं चार्थसिद्धिं च पुत्रं तस्य विनिर्दिशेत् ।।१८।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को सर्प या बिच्छू जल के भीतर काट ले उसको विजय एवं धन प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति अवश्य होती है ।

प्रासादं शैलमारूह्य समुद्रं तरते नरः ।
अपि दासकुले जातो राजा भवति वै ध्रुवम् ।।१९।।

स्वप्न में जो राजमहल एवं पर्वत पर चढ़कर समुद्र के पार जाता है वह दास कुल में उत्पन्न होकर भी राजा होता है, यह सुनिश्चित तथ्य है ।

यस्तुमध्ये तडागस्य भुंक्ते च घृतपायसम् ।
अखंडे पुष्करे पत्रे तं विद्यात्पृथिवीपतिम् ।।२०।।

जो व्यक्ति स्वप्न में तालाव के बीच में कमल के अखंड पत्ते पर घी और खीर को खाता है उसे राजा समझना चाहिए यानि भविष्य में उसे राज्य की प्राप्ति होती है ।

बलाकां कुक्कुटीं क्रौंचीं दृष्ट्वा यः प्रतिबुध्यति ।
कुलजां लभते कन्यां भार्यां च प्रियवादिनीम् ।।२१।।

स्वप्न में जो बगुली या मुर्गी या क्रौंची को देखकर जगता है वह कुलीन एवं सुंदर, प्रियवादिनी पत्नी को प्राप्त करता है ।

निगडैर्बध्यते यस्तु बाहुपाशेन वा पुनः ।
पुत्रो वा जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ।।२२।।

स्वप्न में जो अपने को जंजीर बद्ध देखता है अथवा भुजाओं में बंधा पाता है उसे पुत्र की अथवा धन की प्राप्ति होती है ।

आसने शयने याने शरीरे वाहने गृहे ।
ज्वलमानो विबुध्येत तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ।।२३।।

स्वप्न में जो अपने आसन, गद्दा (बिछौना), गाड़ी, शरीर एवं घर को जलता हुआ देखता है वह चतुर्दिक् लक्ष्मी को प्राप्त करता है ।

आदित्यमंडलं स्वप्ने चंद्रं वा यदि पश्यति ।
व्याधितो मुच्यते रोगाद् रोगीश्रियमवाप्नुयात् ।।२४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति सूर्य या चन्द्र के मंडल को देखता है वह रोग से मुक्त हो जाता है और निरोग व्यक्ति धन को प्राप्त करता है ।

रुधिरं पिबति स्वप्ने सुरां वापि तथा नरः ।
ब्राह्मणो लभते विद्यामितरो लभते धनम् ।।२५।।

स्वप्न में जो व्यक्ति खून या मदिरा को पीता है, वह यदि ब्राह्मण हो तो विद्या तथा अन्य जाति का व्यक्ति हो तो धन को प्राप्त करता है ।

शुक्लांबरधरा नारी शुक्लगंधानुलेपना ।
अवगाहति वै स्वप्ने श्रियं तस्य विनिर्दिशेत् ।।२६।।

स्वप्न में जो व्यक्ति श्वेत वस्त्र धारण की हुई नारी से -- जो श्वेत चंदन आदि का लेप की हुई हो -- अपने को स्नान करते हुए देखता है, वह धन को प्राप्त करता है ।

पादुकोपानहौ छत्रं लब्ध्वा यः प्रतिबुध्यति ।
असिं वा विमलं तीक्ष्णं साध्वन्नं तस्य निर्दिशेत् ।।२७।।

स्वप्न में जो व्यक्ति खड़ाऊँ एवं जूते को देखकर या छत्र और सुंदर तीक्ष्ण धार वाली तलवार को देखकर जाग जाता है, वह उत्तम अन्न को प्राप्त करता है।

रथं गोवृषसंयुक्तमेकाकी यः प्ररोहति ।
तत्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ।।२९।।

स्वप्न में जो व्यक्ति गाय एवं बैल जुते रथ में अकेले बैठता है और उसपर बैठने के बाद जग जाता है, वह जल्दी ही उत्तम धन प्राप्त करता है ।

दधिलाभे भवेदर्थो घृतलाभे ध्रुवं यशः ।
घृतभक्षे ध्रुवः क्लेशो यशस्तु दधिभक्षणे ।।३०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति दही को प्राप्त करता है वह धन प्राप्त करता है, घी पाने वाला व्यक्ति निश्चितरूप से यश को प्राप्त करता है । स्वप्न में घी खाने से क्लेश तथा दही खाने से यश मिलता है ।

अग्निना वेष्टितो यो वै नगरेऽपिगृहेऽपि वा ।
गृहेमाण्डलिको राजा नगरे पार्थिवो भवेत् ।।३१।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने को नगर या घर में अग्नि से घिरा पाता है, वह राजा या मांडलिक होता है (नगर में अग्नि से घिरा राजा, तथा घर में अग्नि से घिरा मांडलिक होता है) ।

मानुषाणि च मांसानि स्वप्नांते यस्तु पश्यति ।
हरितानि च पक्वानि शृणु तस्य च यत्फलम् ।।३२।।

स्वप्न के अन्त में जो व्यक्ति मनुष्य के मांस को कच्चा या पका हुआ देखता है, उसका निम्नलिखित फल होता है --

पद्भक्षणे शतं लाभः सहस्रं बाहु भक्षणे ।
राज्यं शतसहस्रं वा भवेद्वै शिरभक्षणे ।।३३।।

स्वप्न में जो व्यक्ति मनुष्य के पैर का मांस खाता है, उसे सौ रूपये (स्वर्णमुद्रा) का लाभ, भुजाओं का मांस खाने पर हजार रूपये (स्वर्णमुद्रा) का लाभ तथा सिर को चबाने पर राज्य या सौ सहस्र (एक लाख स्वर्णमुद्रा) को प्राप्त करता है ।

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पास – भस्मौदनतक्रवर्ज्यम् ।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिंदितानि
गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ।।३४।।

स्वप्न में सभी प्रकार के उज्ज्वल पदार्थों एवं वस्तुओं का दर्शन शुभ फल देता है, केवल कपास, भस्म, भात एवं मट्ठा को छोड़कर । स्वप्न में सभी प्रकार की काली वस्तुएँ अशुभ फल देती हैं, केवल गाय, हाथी, देवता, ब्राह्मण एवं घोड़ा को छोड़कर ।

क्षीरं पिबति यः स्वप्ने सफेनं दोहने कृते ।
सोमपानं भवेत्तस्य भोक्ता भोगाननेकशः ।।३५।।

स्वप्न में जो व्यक्ति गो दोहन के पश्चात् फेन के साथ दूध को पीता है, मानो वह अमृत को पी रहा है यानि वह अनेक प्रकार के सुख भोगों को भोगता है ।

दधिदृष्ट्वा भवेत्प्रीतिर्गोधूमांश्च धनागमः ।
यवान् यज्ञागमंविंद्याल् लाभः सिद्धार्थकानपि ।।३६।।

स्वप्न में दही देखने से प्रेम बढ़ता है, गेंहू देखने से धनागम होता है, यव देखने से यज्ञ करने का अवसर मिलता है तथा सरसो देखने से धन का लाभ होता है ।

नागपत्रं लभेत्स्वप्ने कर्पूरमगरुं तथा ।
चंदनं पांडुरं पुष्पं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ।।३७।।

स्वप्न में जो व्यक्ति पान के पत्ते को प्राप्त करता है अथवा कर्पूर, अगर, चंदन एवं श्वेत फूल को प्राप्त करता है तो वह चतुर्दिक् धन को प्राप्त करता है।
अथविशेषतोऽनिष्टफलाः स्वप्नाः कथ्यंते ।तत्रशौनकः--

आदित्यं वाथ चंद्रं वा विगतच्छविकं तथा ।
पततं चाथ नक्षत्रं तारकादींश्च वा यदि ।।३९।।

अब विशेष अनिष्टफल देने वाले स्वप्नों के बारे में शौनक ऋषि का मत यहाँ दिया जा रहा है-- जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य, चन्द्रमा को निस्तेज देखता है या नक्षत्र और ताराओं को टूटते हुए देखता है वह शोक को प्राप्त करता है ।

अशोकं करवीरं वा पलाशं वाथ पुष्पितम् ।
स्वप्नान्ते बहुत पश्येत नरः शोकमवाप्नुयात् ।।४०।।

अशोक, करवीर या पलाश को स्वप्न के अन्त में जो व्यक्ति फूला हुआ देखता है वह शोक को प्रप्त करता है यानि किसी अन्य की मृत्यु से दुःखी होता है।

नावरुह्य यः स्वप्ने नदीं चैव समुत्तरेत् ।
प्रवासं निर्दिशेत्तस्य शीघ्रं च पुनरागमम् ।।४१।।

स्वप्न में जो व्यक्ति नौका पर चढ़ कर नदी को पार करता है वह विदेश जाता है तथा शीघ्र लौट भी आता है ।

रक्ताम्बरधरानारी रक्तगंधानुलेपना ।
अवगाहति वै स्वप्ने मृत्युं तस्य विनिर्दिशेत् ।।४२।।

लाल वस्त्र पहनी हुयी तथा रक्त सुगन्ध लगायी हुयी नारी स्वप्न में जिसका अवगाहन करती है उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है । (यहाँ अवगाहन का अर्थ रति से है ।)

तैलेनाभ्यक्तकायस्तु पयसा तु घृतेन वा ।
स्नेहेन वा तथान्येन व्याधिं तस्य विनिर्दिशेत् ।।४३।।

स्वप्न में जो व्यक्ति तेल, जल, घी या तरल पदार्थ से स्नान करता है वह रोग ग्रस्त होता है ।

केशा यस्यावशीर्यन्ते दंता यस्य पतंति वै ।
अर्थनाशोभवेत्तस्य पुत्रो वा यदि नश्यति ।।४४।।

स्वप्न मे जिस व्यक्ति के बाल झड़ जाते है अथवा दन्त पंक्तियां नष्ट हो जाती है उसका धन नाश होता है । यदि पुत्र हो तो पुत्र की मृत्यु हो जाती है ।

खरोष्ट्रमाहिषरथमेकाकी यः प्ररोहति ।
तत्रस्थः स तु बुध्येत मृत्युं शीघ्रमवाप्नुयात् ।।४५।।

जो व्यक्ति स्वप्न में गदहा, ऊंट या भैंसे के रथ पर चढ़कर यात्रा करता है और रथस्थ ही जाग जाता है उसकी शीघ्र मृत्यु हो जाती है ।

कर्णनाशाकरादीनां छेदनं पंकमज्जनम् ।
पतनं दंतकेशानां पक्वमांसस्य भक्षणम् ।।४६।।

स्वप्न मे कान, नाक और भुजाओं का कटना तथा कीचड़ में स्नान देखना, दांत और बालों का झड़ना देखना, पका मांस को खाना –

खरोष्ट्रमाहिषं यानं तैलाभ्यंगं च मृत्यवे ।४७।।

गदहा, ऊंट तथा भैंसे की सवारी पर आरूढ़ होना तथा उबटन लगाना मृत्यु का सूचक होता है ।

इति स्वप्नफलनिर्णयः ।

अथ जाग्रतोऽनिष्टानि कथ्यन्ते –

अरुंधतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणिपदानि च ।
आयुर्हीना न पश्यंति चतुर्थं मातृमंडलम् ।।१।।

सम्प्रति जाग्रत अवस्था के अनिष्ट का विचार किया जा रहा है –अरुन्धती, ध्रुव तथा भगवान् विष्णु के तीन पद को मृत्यु के आसन्न लोग नही देख पाते । आयुहीन मातृमण्डल (कृत्तिकाओं) को नहीं देख पाते ।

देहेप्यरुंधती जिह्वाध्रुवोनासाग्रमुच्यते ।
भ्रुवोमध्यगतं मध्यं तारकामातृमंडलम् ।।२।।

अपने शरीर में ही जिह्वा अरुन्धती है, नासिका का अग्र भाग ध्रुव है । दोनो भ्रुवों के मध्य में मातृमण्डल या तारक मण्डल कहलाता है । इसका अर्थ है आयु हीन व्यक्ति अपने शरीर का जिह्वाग्र, नासाग्र तथा मातृमण्डल (भ्रूमध्य) नही देख पाता ।

आकीर्णे श्रवणे यस्य न घोषः शृणुयात्तथा ।
नभो मंदाकिनीमिन्दोश्छायां नेक्षेद् गतायुषः ।।३।।

कान को बन्द करने पर जिसे शब्द नहीं सुनाई पड़ता तथा जो आकाश गंगा को नही देख पाता, चन्द्रोदय के बाद चन्द्रिका को नही देख पाता वह गतायु होता है ।

पांसुपंकादिषु न्यस्तं खण्डं यस्य पदं भवेत् ।
पुरतःपृष्ठतोवापि सोष्टौ मासान्न जीवति ।।४।।

धूल एवं कीचड़ में जिसका पैर पड़ने पर न उठ पाये तथा खण्डित जैसा महसूस हो अथवा आगे या पीछे होने में पैर खण्डित महसूस हो तो वह व्यक्ति आठ मास भी जीवित नही रहता ।

स्नानाम्बुलिप्तगात्रस्य यस्यास्यं प्राक् प्रशुष्यति ।
गात्रेष्वार्द्रेषु सर्वेषु सोर्ध्वमासं न जीवति ।।५।।

स्नान करने के बाद भी जिसका मुख बार-बार सूख जाता है और भीगा शरीर होने

पर भी जो शुष्क महसूस करता है वह व्यक्ति एक मास से ज्यादा जीवित नहीं रहता ।

एवमादीनि चान्यानि श्रुत्युक्तानि बहूनि च ।
स्वप्नोत्पातादि चैतेषां कालरात्र्यादिदेवताः ।।६।।

इस प्रकार से वेदोक्त एवं अन्य ग्रन्थों के आधार पर स्वप्न मे होने वाले उत्पात कहे गये है । इनके देवता काल रात्रि आदि हैं ।

पूजाविधानं पूर्वोक्तं कुर्यादत्रापि यत्नतः ।
होमं कृत्वा प्रयत्नेन रात्रावेव द्विजोत्तमः ।।७।।
उक्तेनैव विधानेन सघृतं पायसं हुनेत् ।।८।।
(पूर्वोक्तमितिरात्रिसूक्तकल्पवदित्यर्थः।)

अशुभ से बचने के लिए यत्न पूर्वक देवीकल्प आदि से दिव्य उपायों को करना चाहिए ।

प्रत्यूषं पायसं हुत्वा रात्रीव्याख्येति वै क्रमात् ।
अष्टोत्तरशतं हुत्वा सूक्तेनानेन वित्तमः ।।९।।
स्वप्नाधिपतिमंत्रेण हुनेदष्टोत्तरं शतम् ।
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा होमशेषं समापयेत् ।।१०।।
पूर्वोक्तमभिषेकेपि तदत्रापि विधीयते ।
गुरवे दक्षिणां दद्याद्वस्त्रं हेमपशूनपि ।।११।।
यद्यस्ति दक्षिणाभावोऽप्यशक्तेहोमकर्मणि ।
हिरण्यं दक्षिणां दद्यात्तदानीमेव वाबुधः ।।१२।।
वस्त्रकुंभादिसकलं तद्धोत्रे प्रतिपादयेत् ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्छक्त्या सुशीलान् वेदपारगान् ।।१३।।
भक्ष्यैश्च पायसाद्यैश्च रत्नान्याभरणानि च ।
अनेनविधिना यस्तु शांतिं कुर्वीतशक्तितः ।।१४।।
तस्यवर्षशतायुष्यं भवत्येव न संशयः ।।१५।।

इति श्रीआचारमयूखांतर्गतस्वप्नाध्यायः समाप्तः।।

ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त स्वप्नफल

सुस्वप्नदर्शनफलम्

नन्द उवाच –

केन स्वप्नेन किं पुण्यं केन मोक्षो भवेत् सुखम् ।
कोऽपि कोऽपि च सुस्वप्नस्तत्सर्वं कथय प्रभो ।।१।।

श्री नन्द जी ने कहा– किस स्वप्न से कौन सा पुण्य प्राप्त होता है तथा किस स्वप्न से मोक्ष की प्राप्ति होती है । इस प्रकार के स्वप्नों को हे प्रभु मुझसे बतलाइये ।

श्री भगवानुवाच –

वेदेषु सामवेदश्च प्रशस्तः सर्वकर्मसु ।
तथैव काण्वशाखायां पुण्यकाण्डे मनोहरे ।।२।।

श्री भगवान् ने कहा– वेदों मे सामवेद सभी कार्यो में शुभ माना गया है । इसमें पुण्य काण्व शाखा अत्यन्त मनोहर है ।

स व्यक्तो यश्च सुस्वप्नः शश्वत् पुण्यफलप्रदः ।
तत्सर्वं निखिलं तात कथयामि निशामय ।।३।।

उसमें शास्वत पुण्यप्रदायी शुभ स्वप्नों का वर्णन है । उन स्वप्नों को मै यहां कह रहा हूँ ।

स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि बहुपुण्यफलप्रदम् ।
स्वप्नाध्यायं नरः श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ।।४।।

मै पुण्य फल देने वाले स्वप्नाध्याय का वर्णन कर रहा हूँ । स्वप्नाध्याय को सुनकर मनुष्य गंगा स्नान का शुभ फल प्राप्त करता है ।

स्वप्नस्तु प्रथमे यामे संवत्सरफलप्रदः ।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ।।५।।

रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष के अन्दर में प्रतिफलित होता है । द्वितीय प्रहर में देखा हुआ स्वप्न आठ मास के अन्दर तथा तृतीय प्रहर में देखा हुआ स्वप्न तीन मास के अन्दर अपना फल देता है ।

चतुर्थे चार्द्धमासेन स्वप्नः स्वात्मफलप्रदः ।
दशाहे फलदः स्वप्नोऽप्यरुणोदयदर्शने ।।६।।

चतुर्थ प्रहर में देखा हुआ स्वप्न पन्द्रह दिन के अन्दर अपना फल देता है तथा अरुणोदय का देखा हुआ स्वप्न दस दिन के अन्दर अपना फल देता है ।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः ।
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वञ्च लभेद् ध्रुवम् ।।७।।

सूर्योदय काल में देखा हुआ स्वप्न तत्काल फल देता है । दिन में देखा हुआ स्वप्न उसी समय फल देता है ।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तो नरः स्वप्नञ्चपश्यति ।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्येव न संशयः ।।८।।

चिन्ता और रोग से ग्रस्त व्यक्ति यदि स्वप्न देखता है तो उसका देखा हुआ स्वप्न व्यर्थ हो जाता है । इसमें संदेह नहीं है ।

जडो मूत्रपुरीषेण पीडितश्च भयाकुलः ।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभेत् स्वप्नजं फलम् ।।९।।

जड़, मूत्र और विष्टा से पीड़ित व्यक्ति, भय से ग्रस्त व्यक्ति, नग्न व्यक्ति तथा मुण्डित केश व्यक्ति का देखा हुआ स्वप्न प्रतिफलित नहीं होता ।

दृष्ट्वा स्वप्नञ्च निद्रालुर्यदि निद्रां प्रयाति च ।
विमूढो· वक्ति चेद्रात्रौ न लभेत् स्वप्नजं फलम् ।।१०।।

स्वप्न को देखकर यदि व्यक्ति पुनः सो जाय या रात में ही वह मूढ़ दृष्ट स्वप्न को किसी दूसरे से बतला दे तो उसका फल वह नहीं प्राप्त करता ।

उक्त्वा काश्यपगोत्रञ्च विपत्तिं लभते ध्रुवम् ।
दुर्गते दुर्गतिर्याति नीचे व्याधि प्रयातिच ।।११।।

रात्रि में स्वप्न को बतलाकर काश्यप गोत्र का व्यक्ति (यानि सम्पूर्ण मनुष्य समाज) विपत्ति को प्राप्त करता है। वह दुर्गति व रोग को भी प्राप्त करता है ।

शत्रौ भयञ्च लभते मूर्खे च कलहं लभेत् ।
कामिन्यां धनहानिः स्याद्रात्रौ चौरभयं भवेत् ।।१२।।

शत्रु से भय, मूर्ख से विवाद, महिलाओं द्वारा धन हानि तथा रात्रि में चोरी का भय भी होता है ।

निद्रायां लभते शोकं पण्डिते वाञ्छितं फलम् ।
न प्रकाश्यश्च स स्वप्नः पण्डितैः काश्यपे व्रज ।।१३।।

निद्रा में जो व्यक्ति शोक को प्राप्त करता है, या शुभ व्यक्ति द्वारा शुभ फल प्राप्त करता है तो उसे अपना देखा हुआ स्वप्न फल दूसरे से नहीं कहना चाहिए अथवा स्वप्न वेत्ता या देवता से जाकर स्वप्न निवेदित करना चाहिए ।

गवाञ्च कुञ्जराणाञ्च हयानाञ्च ब्रजेश्वर ।
प्रसादानाञ्च शैलानां वृक्षाणाञ्च तथैव च ।।१४।।
आरोहणञ्च धनदं भोजनं रोदनं तथा ।
प्रतिगृह्य तथा वीणां शस्याढ्यां भूमिमालभेत् ।।१५।।

स्वप्न में गो, हाथी, घोड़ा, महल, पर्वत तथा वृक्षों पर चढ़ना धनदायी होता है। स्वप्न में भोजन करना तथा रोना, वीणा को बजाना उपजाऊ भूमि का लाभ कराता है।

शस्त्रास्त्रेण यदा विद्धो व्रणेन कृमिणा तथा ।
विष्ठया रुधिरेणैव स युक्तोऽप्यर्थवान् भवेत् ।।१६।।

स्वप्न में जो व्यक्ति शस्त्र और अस्त्र से घायल हो जाय, फोड़ा या क्रिमियों के द्वारा ग्रस्त होता है अथवा विष्ठा और खून से सन जाता है तो वह धन को प्राप्त करता है।

स्वप्नेऽप्यगम्यगमनो भार्यालाभं करोति यः ।
मूत्रसिक्तः पिवेच्छुक्रं नरकञ्चविशत्यपि ।।१७।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अस्पृश्य महिला के पास गमन करता है वह पत्नी प्राप्त करता है। मूत्र से सना हुआ तथा वीर्य पान करने वाला, नरक में प्रवेश करने वाला-

नगरं प्रविशेद्रक्तं समुद्रं वा सुधां पिवेत् ।
शुभवार्तामवाप्नोति विपुलञ्चार्थमालभेत् ।।१८।।

नगर में प्रवेश करने वाला, समुद्र या अमृत को पीने वाला शुभ वार्ता तथा विपुल धान का लाभ प्राप्त करता है।

गजं नृपं सुवर्णञ्च वृषभं धेनुमेव च ।
दीपमन्नं फलं पुष्पं कन्यां छत्रं रथं ध्वजम् ।।१९।।
कुटुम्बं लभते दृष्ट्वा कीर्तिञ्च विपुलां श्रियम् ।
पूर्णकुम्भं द्विजं वह्निं पुष्पताम्बूलमंन्दिरम् ।।२०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति हाथी, राजा, स्वर्ण, बैल, गाय, दीपक अन्न, फल, फूल, कन्या, छत्र रथ तथा ध्वज को देखता है वह कुटुम्ब को प्राप्त करता है। साथ विपुल धन और यश को भी प्राप्त करता है। जल से भरा घड़ा, ब्राह्मण, आग, फूल, पान, मंदिर -

शुक्लधान्यं नटं वेश्यां दृष्ट्वा श्रियमवाप्नुयात् ।
गोक्षीरञ्च घृतं दृष्ट्वा चार्थपुण्यधनं लभेत् ।।२१।।

[illegible] नट तथा वेश्या को देखकर मनुष्य धन को प्राप्त करता है।

गाय का दूध, घी को देखकर मनुष्य धन एवं पुण्य को प्राप्त करता है।

पायसं पद्मपत्रं च दधिदुग्धं घृतं मधु ।
मिष्ठान्नं स्वस्तिकं भुक्त्वा ध्रुवं राजा भविष्यति ।।२२।।

स्वप्न में खीर कमलपत्र, दही, दूध, घी, मधु तथा शुभ मिष्ठान्न को खाकर मनुष्य निश्चित राज्य को प्राप्त करता है।

पक्षिणां मानुषाणाञ्च भुङ्क्ते मांसं नरो यदि ।
बह्वर्थं शुभवार्ताञ्च लभते वाञ्छितं फलम् ।।२३।।

स्वप्न में पक्षियों एवं मनुष्य का मांस खाने वाला व्यक्ति अधिक धन, शुभ वार्ता तथा मनवांछित फल को प्राप्त करता है।

छत्रं वा पादुकां वापि लब्ध्वा धान्यञ्च गच्छति ।
असिञ्च निर्मलं तीक्ष्णं तत्तथैव भविष्यति ।।२४।।

छत्र, पादुका (खड़ाऊं) को यदि स्वप्न में प्राप्त किया जाय तो स्वप्न द्रष्टा को धन लाभ होता है। व्यक्ति निर्मल एवं तेज धार वाली तलवार को स्वप्न में देखकर उपरोक्त फल प्राप्त करता है।

हेलया सन्तरेद्यो हि स प्रधानो भविष्यिति ।
दृष्ट्वा च फलितं वृक्षं धनमाप्नोति निश्चितम् ।।२५।।

स्वप्न में जो व्यक्ति आसानी से नदी पार कर जाता है वह प्रधानता को प्राप्त करता है। फलदार वृक्ष को देखकर व्यक्ति निश्चित ही धन को प्राप्त करता है।

सर्पेण भक्षितो यो हि अर्थलाभश्च तद्भवेत् ।
स्वप्ने सूर्यं विधुं दृष्ट्वा मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।।२६।।

स्वप्ने में जिसे सर्प काट ले वह धन को प्राप्त करता है। स्वप्न में जो सूर्य और चन्द्रमा के मण्डल को देखता है वह रोग बन्धन से मुक्त हो जाता है।

बडवां कुक्कुटीं दृष्ट्वां क्रौंचीं भार्यां लभेद् ध्रुवम् ।
स्वप्ने यो निगडैर्बद्धः प्रतिष्ठां पुत्रमालभेत् ।।२७।।

स्वप्न में जो घोड़ी, कुक्कुटी (मुर्गी), क्रौंची को देखता है वह पत्नी को प्राप्त करता है। स्वप्न में जो हथकड़ी से अपने को बंधा देखता है वह प्रतिष्ठा और पुत्र को प्राप्त करता है।

दध्यन्नं पायसं भुङ्क्ते पद्मपत्रे नदीतटे ।
विशीर्णपद्मपत्रे च सोऽपि राजा भविष्यति ।।२८।।

स्वप्न में जो व्यक्ति दहीभात तथा खीर को कमलपत्र पर नदी के तट

पर स्थित होकर खाता है अथवा फटे कमल पत्र पर खाता है वह राजा होता है।

जलौकसं वृश्चिकञ्च सर्पञ्च यदि पश्यति ।
धनं पुत्रञ्च विजयं प्रतिष्ठां वा लभेदिति ।।२९।।

जलौकस (जोंक), वृश्चिक (बिच्छू) तथा सर्प को स्वप्न में देखनेवाला व्यक्ति धन, पुत्र, विजय तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

शृङ्गिभिर्दंष्ट्रिभिः कोलैर्वानरैः पीडितो यदि ।
निश्चितञ्च भवेद्राजा धनञ्च विपुलं लभेत् ।।३०।।

स्वप्न में जो व्यक्ति सिंगधारी पशु, दांत से काटने वाले पशु, सूअर और वानर से पीड़ित होता है वह निश्चित ही राजा बनता है और विपुल धन प्राप्त करता है।

मत्स्यं मांसं मौक्तिकञ्च शङ्खं चन्दनहीरकम् ।
यस्तु पश्यति स्वप्नान्ते विपुलं धनमालभेत् ।।३१।।

स्वप्न में जो व्यक्ति मछली मांस, मोती, शंख, चंदन और हीरा को देखता है तथा जाग उठता है वह विपुल धन प्राप्त करता है।

सुराञ्च रुधिरं स्वर्णं दृष्ट्वा विष्टां धनं लभेत् ।
प्रतिमां शिवलिङ्गञ्च लभेद् दृष्ट्वा जयं धनम् ।।३२।।

स्वप्न में जो मदिरा, खून, स्वर्ण को देखकर विष्ठा को देखता है वह धन को प्राप्त करता है। शिव की प्रतिमा एवं लिंग को देखकर जीत एवं धन का प्राप्त. होना सुनिश्चित है।

फलितं पुष्पितं विल्वमाम्रं दृष्ट्वा लभेद्धनम् ।
दृष्ट्वा च ज्वलदग्निञ्च धनं वृद्धिं श्रियं लभेत् ।
आमलकं धात्रीफलमुत्पलञ्च धनागमम् ।।३३।।

स्वप्न में जो फला एवं फूला विल्व वृक्ष को देखता है वह धन को प्राप्त करता है जलती हुई अग्नि को देखने से धन, बुद्धि एवं सम्पदा की प्राप्ति होती है। आंवला एवं कमल को स्वप्न में देखने से धन का आगमन होता है।

देवताश्च द्विजा गावः पितरो लिङ्गिनस्तथा ।
यद्ददाति मिथः स्वप्ने तत्तथैव भविष्यति ।।३४।।

स्वप्न में देवता, ब्राह्मण, गो, पितर तथा शैव को परस्पर एक दूसरे को कुछ देते हुए देखता है वह वैसा ही फल प्राप्त करता है जैसा स्वप्न में देखता है।

शुक्लाम्बरधरा नार्यः शुक्लमाल्यानुलेपनाः ।
समाश्लिष्यन्ति यं स्वप्ने तस्य श्रीः स्वप्नतः सुखम् ।।३५।।

सफेद वस्त्र पहनी हुयी स्त्री जिसने सफेद माला एवं सुगन्ध धारण कर रखा हो स्वप्न में जिस व्यक्ति का आलिंगन करती है वह व्यक्ति सुख और समृद्धि को प्राप्त करता है।

पीताम्बरधरां नारीं पीतमाल्यानुलेपनाम् ।
अवगूहति यः स्वप्ने कल्याणं तस्य जायते ।।३६।।

स्वप्न में जो व्यक्ति पीला वस्त्र एवं पीली माला पहनी हुई स्त्री का आलिंगन करता है उसका कल्याण होता है।

सर्वाणि शुक्लानि प्रशंसितानि भस्मास्थिकार्पासविवर्जितानि ।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिन्दितानि गोहस्तिवाजिद्विजदेववर्ज्यम् ।।३७।।

सभी प्रकार की सफेद वस्तुएं स्वप्न में प्रशंसित मानी गयी हैं, लेकिन भस्म, हड्डी तथा कपास को छोड़कर यानि ये अशुभ माने गये है। सभी प्रकार की काली वस्तुएं स्वप्न में अशुभ मानी गयी हैं, लेकिन गाय, हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण तथा देवता शुभ माने गये हैं यानि ये काले होने पर भी अशुभ नहीं होते।

दिव्या स्त्री सस्मिता विप्रा रत्नभूषणभूषिता ।
यस्य मन्दिरमायति स प्रियं लभते ध्रुवम् ।।३८।।

स्वप्न में दिव्य हसती स्त्री तथा रत्न आभूषण से युक्त बाह्मण जिसके घर में प्रवेश करते हैं वह निश्चित ही अपनी प्रिय आकांक्षित वस्तु को प्राप्त करता है।

स्वप्ने च ब्राह्मणो देवो ब्राह्मणी देवकन्यका ।
ब्राह्मणो ब्राह्मणी वापी सन्तुष्टा सस्मिता सती ।
फलं ददाति यस्मै च तस्य पुत्रो भविष्यति ।।३९।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण, देवता, ब्राह्मणी या देव कन्या अथवा ब्राह्मण दम्पति प्रसन्न होकर फल देता है उस व्यक्ति को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

यं स्वप्ने ब्राह्मणा नन्द कुर्वन्ति च शुभाशिषम् ।
यद्वदन्ति भवेत्तस्य तस्यैश्वर्यं भवेद् ध्रुवम् ।।४०।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण जो आशीर्वाद देता है उसको वैसा ही फल मिलता है यानि ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

परितुष्टो द्विजश्रेष्ठश्चायाति यस्य मन्दिरम् ।
नारायणः शिवो ब्रह्मा प्रविशेत्तु तदाश्रयम् ।।४१।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को घर में संतुष्ट ब्राह्मण प्रवेश करता है उसके घर में नारायण, शिव, और ब्रह्म उस ब्राह्मण के माध्यम से आश्रय लेते है।

सम्पत्तिस्तस्य भवति यशश्च विपुलं शुभम् ।
पदे पदे सुखं तस्य स मानं गौरवं लभेत् ।।४२।

उस व्यक्ति के घर में सम्पत्ति बढ़ती है, उसका यश एवं शुभ धन बढ़ता है। उसको पग-पग पर सम्मान तथा गौरव प्राप्त होता है।

अकस्मादपि स्वप्ने तु लभते सुरभिं यदि ।
भूमिलाभो भवेत्तस्य भार्या चापि पतिव्रता ।।४३।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अचानक भी गाय को प्राप्त करता है उसको भूमि की प्राप्ति होती है, तथा उसे पतिव्रता स्त्री की प्राप्ति होती है।

करेण कृत्वा हस्ती यं मस्तके स्थापयेद्यदि ।
राज्यलाभो भवेत्तस्य निश्चितं च श्रुतौ मतम् ।।४४।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को हाथी अपने सूढ़ से उसे अपने मस्तक पर बैठा ले वह व्यक्ति निश्चित ही राज्य लाभ प्राप्त करता है। ऐसा वेदों में कहा गया है।

स्वप्ने तु ब्राह्मणस्तुष्टः समाश्लिष्यति यं व्रज ।
तीर्थस्नायी भवेत्सोऽपि निश्चितञ्च श्रियान्वितः ।।४५।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण प्रसन्न होकर आलिंगन करता है वह तीर्थ यात्रा करता है तथा धन से युक्त होता है।

स्वप्ने ददाति पुष्पञ्च यस्मै पुण्यवते द्विजः ।
जययुक्तो भवेत् सोऽपि यशस्वी च धनी सुखी ।।४६।।

स्वप्न में जिस पुण्यशाली व्यक्ति को ब्राह्मण फूल प्रदान करता है वह व्यक्ति विजय को प्राप्त करता है, तथा यशस्वी, धनी और सुखी होता है।

स्वप्ने दृष्ट्वा च तीर्थानि सौधरत्नगृहाणि च ।
जययुक्तश्च धनवान् तीर्थस्नायी भवेन्नरः ।।४७।।

स्वप्न में तीर्थों और भव्य भवनों तथा रत्न से युक्त महल को देखकर व्यक्ति विजय श्री, धन तथा तीर्थ यात्रा को प्राप्त करता है।

स्वप्ने तु पूर्णकलशं कश्चित्कस्मै ददाति च ।
पुत्रलाभो भवेत्तस्य सम्पत्ति वा समालभेत् ।।४८।।

स्वप्न में यदि किसी को कोई व्यक्ति जल से पूर्ण कलश को प्रदान करता है तो वह कलश ग्रहण करने वाला व्यक्ति पुत्र तथा धन का लाभ प्राप्त

करता है।

हस्ते कृत्वा तु कुडवमाढकं वारसुन्दरी ।
यस्य मन्दिरमायाति स लक्ष्मीं लभते ध्रुवम् ।।४९।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने घर में हाथ में एक आढ़क (बारह अंजली या इससे अधिक माप का पात्र) लिए गणिका को प्रवेश करते हुए देखता है वह लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

दिव्यास्त्री यद्गृहं गत्वा पुरीषं विसृजेद् व्रज ।
अर्थलाभो भवेत्तस्य दारिद्रञ्च प्रयातिच ।।५०।।

हे नन्द, स्वप्न में जिस व्यक्ति के घर में दिव्य स्त्री प्रवेश करके विष्ठा कर दे उसको धन लाभ होता है तथा उसकी दरिद्रता हमेशा के लिए दूर हो जाती है।

यस्यगेहं समायाति ब्राह्मणो भार्यया सह ।
पार्वत्या सह शम्भुर्वा लक्ष्मीर्नारायणोऽथवा ।।५१।।
ब्राह्मणो ब्राह्मणी वापि स्वप्ने यस्मै ददाति च ।
धान्यं पुष्पाञ्जलिं वापि तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ।।५२।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के घर में ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ प्रवेश करे अथवा शिव-पार्वती या लक्ष्मी-नारायण प्रवेश करें या ब्राह्मण-ब्राह्मणी स्वप्न में ही धान्य या पुष्प अंजली भर कर दें तो उस व्यक्ति की संपदा चारो ओर से बढ़ती है।

मुक्ताहारं पुष्पमाल्यं चन्दनञ्च लभेद् व्रज ।
स्वप्ने ददाति विप्रश्च यस्य श्रीः सर्वतोमुखी ।।५३।।

हे नन्द स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण मोती का माला, फूल की माला या चन्दन की माला दे उस व्यक्ति की संपदा विकसित होती है।

गोरोचनं पताकां वा हरिद्रामिक्षुदण्डकम् ।
सिद्धान्नञ्च लभेत् स्वप्ने तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ।।५४।।

जो व्यक्ति स्वप्न में गोरोचन, ध्वज, हल्दी और ईख तथा सिद्धान्न प्राप्त करता है उसकी लक्ष्मी चतुर्दिक् बढ़ती है।

ब्राह्मणो ब्राह्मणी वापि ददाति यस्य मस्तके ।
छत्रं वा शुक्लधान्यं वा स च राजा भविष्यति ।।५५।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के माथे पर ब्राह्मण या ब्राह्मणी छत्र या उजला धान्य रखें वह राजा होता है।

स्वप्ने रथस्थः पुरुषः शुक्लमाल्यानुलेपनः ।
तत्रस्थो दधि भुङ्क्ते च पायसं वा नृपोभवेत् ।।५६।।

स्वप्न में जो व्यक्ति रथ पर बैठ कर सफेद फूलों की माला पहने हो और रथ पर ही दही या खीर खाये तो वह राजा होता है।

स्वप्ने ददाति विप्रश्च ब्राह्मणी वा सुधां दधि ।
प्रशस्तपात्रं यस्मै वा सोऽपि राजा भवेद् ध्रुवम् ।।५७।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण या ब्राह्मणी अमृत, दही या चमकता हुआ वर्तन दे तो वह व्यक्ति निश्चित ही राजा बनता है।

कुमारी चाष्टवर्षीया रत्नभूषणभूषिता ।
यस्य तुष्टा भवेत् स्वप्ने स भवेत्कविपण्डितः ।।५८।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति से आठ वर्ष की कन्या जिसने रत्न आभूषण पहन रखा हो यदि प्रसन्न हो जाय तो वह व्यक्ति कवि और विद्वान् हो जाता है।

ददाति पुस्तकं स्वप्ने यस्मै पुण्यवते च सा ।
स भवेद्विश्वविख्यातः कवीन्द्रः पण्डितेश्वरः ।।५९।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को आठ वर्ष की कन्या पुस्तक दे वह व्यक्ति विश्व विख्यात कवि और विद्वान् हो जाता है।

यं पाठयति स्वप्ने वा मातेव च सुतं यथा ।
सरस्वतीसुतः सोऽपि तत्परो नास्ति पण्डितः ।।६०।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को अष्ट वर्षीय कन्या पढ़ायें जिस प्रकार माँ पुत्र को पढाती है तो वह व्यक्ति सरस्वती पुत्र हो जाता है यानि उसकी तरह कोई दूसरा विद्वान् नहीं होता।

ब्राह्मणः पाठयेद्यञ्च पितेव यत्नपूर्वकम् ।
ददाति पुस्तकं प्रीत्या स च तत्सदृशो भवेत् ।।६१।।

जिस व्यक्ति को स्वप्न में ब्राह्मण, पिता की तरह यत्न पूर्वक पढायें तथा पुस्तक भी दें तो वह व्यक्ति सरस्वती पुत्र की तरह होता है।

प्राप्नोति पुस्तकं स्वप्ने पथि वा यत्र यत्र वा ।
स पण्डितो यशस्वी च विख्यातश्च महीतले ।।६२।।

जो व्यक्ति स्वप्न में रास्ता चलते समय पुस्तक प्राप्त करता है वह पण्डित, यशस्वी और पृथ्वी पर विख्यात होता है।

स्वप्ने यस्मै महामन्त्रं विप्रा विप्रो ददाति चेत् ।
स भवेत् सुखी ज्ञानी धनवान् गुणवान् सुधीः ।।६३।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को एक ब्राह्मण या अनेक ब्राह्मण महामन्त्र दान करते है यानि दीक्षा देते हैं वह व्यक्ति बुद्धिमान्, धनवान्, गुणवान् तथा चिन्तक होता है।

स्वप्ने ददाति मन्त्रं वा प्रतिमां वा शिलामयीम् ।
यस्मै ददाति विप्रश्च मन्त्रसिद्धिश्च तद्भवेत् ।।६४।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण मन्त्र या पत्थर की प्रतिमा देता है वह व्यक्ति मन्त्रों की सिद्धि कर लेता है।

विप्रं विप्रसमूहञ्चदृष्ट्वा नत्वाऽऽशिषं लभेत् ।
राजेन्द्रः स भवेद्वापि किं वा च कविपण्डितः ।।६५।।

स्वप्न में ब्राह्मण या ब्राह्मण के समुदाय को देखकर जो प्रणाम करता है तथा आशीर्वाद प्राप्त करता है वह राजाओं में श्रेष्ठ अथवा कवि और विद्वान् होता है।

शुक्लधान्ययुतां भूमिं यस्मै विप्रः समुत्सृजेत् ।
स्वप्नेऽपि परितुष्टश्च स भवेत् पृथिवीपतिः ।।६६।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को सफेद धान्य से युक्त भूमि को ब्राह्मण देता है और स्वप्न में वह प्रसन्न भी होता है तो उस व्यक्ति को राज्य की प्राप्ति होती है।

स्वप्ने विप्रो रथे कृत्वा नानास्वर्गं प्रदर्शयेत् ।
चिरंजीवी भवेदायुर्धनवृद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।।६७।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण रथ पर बैठाकर अनेक प्रकार के स्वर्गों को दिखाता हो वह व्यक्ति दीर्घायु तथा धनी होता है।

विप्राय विप्रः सन्तुष्टो यस्मै कन्यां ददाति च ।
स्वप्ने च स भवेन्नित्यं धनाढ्यो भूपतिः स्वयम् ।।६८।।

स्वप्न में जिस विप्र को दूसरा विप्र प्रसन्न होकर कन्या देता है वह ग्रहण करने वाला विप्र धनाढ्य तथा राजा होता है।

स्वप्ने सरोवरं दृष्ट्वा समुद्रं वा नदींनदम् ।
शुक्लाहिं शुक्लशैलञ्च दृष्ट्वा श्रियमवाप्नुयात् ।।६९।।

स्वप्न में तालाव, समुद्र, नदी, नद, सफेद सर्प, सफेद पर्वत को देखकर व्यक्ति धन को प्राप्त करता है।

यः पश्यति मृतं स्वप्ने स भवेच्चिरजीवी च ।
अरोगो रोगिणं दुःखी सुखिनञ्च सुखी भवेत् ।।७०।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अपने को मृत देखता है वह दीर्घजीवी होता है।

रोगी को देखकर निरोग तथा सुखी को देखकर दु:खी तथा दु:खी को देखकर के सुखी होता है।

दिव्या स्त्री यं प्रवदति मम स्वामी भवानिति ।
स्वप्ने दृष्ट्वा च जागर्ति स च राजा भवेद् दृढम् ।।७१।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को दिव्य स्त्री यह कहती है- आप मेरे पति हैं, वह व्यक्ति यदि स्वप्न देखकर जाग जाय तो निश्चित ही राजा होता है।

स्वप्ने वा कालिकां दृष्ट्वा लब्ध्वा स्फटिकमालिकाम् ।
इन्द्रचापं शक्रवज्रं स प्रतिष्ठां लभेद् ध्रुवम् ।।७२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति महाकाली का दर्शन करता है तथा उनसे स्फटिक माला प्राप्त करता है, इन्द्र धनुप एवं इन्द्र को देखता है वह निश्चित ही प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

स्वप्ने वदति यं विप्रो मम दासो भवेति च ।
हरिदास्यं च मद्भक्तिं स लब्ध्वा वैष्णवो भवेत् ।।७३।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को ब्राह्मण कहता है कि- तुम मेरे दास बनो, भगवान् विष्णु या मेरी भक्ति करो तो वह व्यक्ति वैष्णव हो जाता है।

स्वप्ने विप्रो हरिः शम्भुर्ब्राह्मणी कमला शिवा ।
शुक्लस्त्री वेदमाता वा जाह्नवी वा सरस्वती ।।७४।।

स्वप्न में ब्राह्मण, विष्णु, शिव, ब्राह्मणी, लक्ष्मी, पार्वती, गौर वर्ण की स्त्री, वेदमाता गायत्री, गंगा, सरस्वती-

गोपालिकावेषधरा बालिका राधिका मम ।
बालश्च बालगोपालः स्वप्नविद्भिः प्रकाशितः ।।७५।।

गोपी का वेष बनायी हुयी कन्यायें तथा बालगोपाल के वेष में छोटे बच्चों के दिखने पर हमेशा शुभ फल प्राप्त होता है।

एषते कथितो नन्द सुस्वप्नः पुण्यहेतुकः ।
श्रोतुमिच्छसि किंवा त्वं किं भूयःकथयामि ते ।।७६।।

इस प्रकार से पुण्य फल को देने वाले सुस्वप्नों का वर्णन किया गया। हे नन्द आगे आप क्या जानना चाहते हैं ?

इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे नारायणनारदसंवादे
श्रीकृष्णजन्मखण्डे सुस्वप्नदर्शनं नाम सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ।।

दुःस्वप्नदर्शनफलम्

नन्द उवाच

श्रुतं सर्वं महाभाग दुःस्वप्नं कथय प्रभो ।
उवाच तं वै भगवान् श्रूयतामिति तद्वचः ।।१।।

नन्द ने कहा- हे भगवान् मैंने शुभ स्वप्नों के फल को सुना अब दुःस्वप्न के फल को कहिए। भगवान् ने कहा-आप मेरी बात को ध्यान से सुनें।

श्री भगवानुवाच-

स्वप्ने हसति यो हर्षाद्विवाहं यदि पश्यति ।
नर्तनं गीतमिष्टञ्च विपत्तिस्तस्य निश्चितम् ।।२।।

श्री भगवान् ने कहा-जो स्वप्न में हंसता है, हर्ष के साथ विवाह देखता है, नाच एवं गान को सुनता और देखता है वह विपत्ति में फंसता है।

दन्ता यस्य विपीड्यन्ते विचरन्तञ्च पश्यति ।
धनहानिर्भवेत्तस्य पीडा चापि शरीरजा ।।३।।

जिसके दाँत पीड़ित (टूटते) होते है तथा वह अपने को विचरण करते हुए देखता है तो उसको धन हानि तथा पीड़ा की प्राप्ति होती है।

अभ्यङ्गितस्तु तैलेन यो गच्छेद्दक्षिणां दिशम् ।
खरोष्ट्रमहिषारूढो मृत्युस्तस्य न संशयः ।।४।।

स्वप्न में जो अपने शरीर में उबटन एवं तेल लगाकर दक्षिण दिशा की ओर जाता है, गदहा, उंट एवं भैंस पर सवार होता है उसकी निश्चित ही मृत्यु हो जाती है।

स्वप्ने कर्णे जपापुष्पमशोकं करवीरकम् ।
विपत्तिस्तस्य तैलञ्च लवणं यदि पश्यति ।।५।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने कान में उड़हुल का फूल एवं कनेर का फूल लगा हुआ देखता है अथवा तेल या नमक लगा हुआ देखता है वह विपत्ति में फसता है।

नग्नां कृष्णां छिन्ननासां शूद्रस्य विधवां तथा ।
कपर्दकं तालफलं दृष्ट्वा शोकमवाप्नुयात् ।।६।।

जो स्वप्न में शूद्र की काली एवं नग्न विधवा को जिसकी नाक कट गयी हो देखता है अथवा ताड़फल एवं कपर्दक (वृक्ष विशेष या जटा जूट) को देखता है वह शोक को प्राप्त करता है।

स्वप्ने रुष्टं ब्राह्मणञ्च ब्राह्मणीं कोपसंयुताम् ।
विपतश्च भवेत्तस्य लक्ष्मीर्याति गृहाद् ध्रुवम् ।।७।।

स्वप्न में जो रुष्ट ब्राह्मण एवं ब्राह्मणी को अपने ऊपर क्रोध से युक्त देखता है उसके ऊपर विपत्ति आती है। उसकी लक्ष्मी घर से बाहर चली जाती है।

वनपुष्पं रक्तपुष्पं पलाशञ्च सुपुष्पितम् ।
कार्पासं शुक्लवस्त्रञ्च दृष्ट्वा दुःखमवाप्नुयात् ।।८।।

स्वप्न में जो व्यक्ति पानी का फूल, लाल फूल, फूला हुआ पलास, कपास, तथा सफेद वस्त्र को देखता है वह दुःख को प्राप्त करता है।

गायन्तीञ्च हसन्तीञ्च कृष्णाम्बराधरां स्त्रियम् ।
दृष्ट्वा कृष्णां च विधवां नरो मृत्युमवाप्नुयात् ।।९।।

स्वप्न में काला वस्त्र पहनी हुयी गाती एवं हँसती हुयी स्त्रियों को देखकर तथा काली विधवा को देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है।

देवता यत्र नृत्यन्ति गायन्ति च हसन्ति च ।
आस्फोटयन्ति धावन्ति तस्य देहो मरिष्यति ।।१०।।

स्वप्न में जिसके घर देवता हँसते गाते एवं नाचते है अथवा दौड़ते एवं वस्तु पटकते है तो स्वप्न देखने वाले की मृत्यु हो जाती है।

वातं मूत्रं पुरीषञ्च वैद्यं रौप्यं सुवर्णकम् ।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने जीवितं दशमासिकम् ।।११।।

वायु विकार, मूत्र, विष्ठा, वैद्य, चाँदी तथा सोना को स्वप्न एवं प्रत्यक्ष में देखने वाला व्यक्ति दश मास तक जीवित रहता है।

कृष्णाम्बराधरां नारीं कृष्णमाल्यानुलेपनाम् ।
उपगूहित यः स्वप्ने तस्य मृत्युर्भविष्यति ।।१२।।

स्वप्न में जो व्यक्ति काला वस्त्र पहनी हुयी तथा काली माला पहनी हुयी नारी को आलिंगन करता है वह मृत्यु को प्राप्त होता है।

मृतवत्सञ्च मुण्डञ्च मृगस्य च नरस्य च ।
यः प्राप्नोत्यस्थिमालाञ्च विपत्तिस्तस्य निश्चितम् ।।१३।।

मरे हुये बछड़े, एवं मनुष्य या मृग के मुण्ड को स्वप्न में प्राप्त करने वाला, हड्डियों की माला पहनने वाला व्यक्ति विपत्ति के समूह में फसता है।

रथं खरोष्ट्रसंयुक्तमेकाकी योऽधिरोहयेत् ।
तत्रस्थोऽपि जागर्ति मृत्युरेव न संशयः ।।१४।।

गदहा एवं घोड़े से युक्त रथ में जो अकेले चढ़ता है और उस पर बैठे हुए ही उसकी नींद खुल जाती है तो उसकी मृत्यु सुनिश्चित हो जाती है।

अभ्यङ्गितस्तु हविषा क्षीरेण मधुनापि च ।
तक्रेणापि गुडेनैव पीडा तस्य विनिश्चितम् ।।१५।।

स्वप्न में जो व्यक्ति घी, दूध और मधु से शरीर पर लेप करता है अथवा मट्ठा या गुड़ से लेप करता है तो उसे पीड़ा की प्राप्ति होती है।

रक्ताम्बरधरां नारीं रक्तमाल्यानुलेपनाम् ।
उपगूहति यः स्वप्ने तस्य व्याधिर्विनिश्चितम् ।।१६।।

लाल वस्त्र एवं माला पहनी हुयी स्त्री को स्वप्न में जो आलिंगन करता है वह रोगों से पीड़ित होता है।

पतितान्नखकेशांश्च निर्वाणाङ्गारमेव च ।
भस्मपूर्णाञ्चितां दृष्ट्वा लभते मृत्युमेव च ।।१७।।

स्वप्न में जो व्यक्ति नख एवं बाल से रहित व्यक्ति को देखता है बुझे हुये अंगार को देखता है तथा भष्म लगायी हुयी महिला को देखता है वह निश्चित ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

श्मशानं शुष्ककाष्ठञ्च तृणानि लौहमेव च ।
शमीञ्च किञ्चित्कृष्णाश्वं दृष्ट्वा दुःखं लभेद् ध्रुवम् ।।१८।।

स्वप्न में श्मशान, सूखी लकड़ी, घास, लोहा, शमी की लकड़ी तथा हल्का काला घोड़ा को देखकर निश्चित ही दुःख मिलता है।

पादुकां फलकं रक्तं पुष्पमाल्यं भयानकम् ।
माषं मसूरं मुद्गं वा दृष्ट्वा सद्यो व्रणं लभेत् ।।१९।।

स्वप्न में खड़ाऊँ, तख्ता, लाल फूल, तथा डरावनी वस्तु, उड़द, मसूर एवं मुद्ग को देखकर मनुष्य शीघ्र ही शरीर में फोड़ा प्राप्त करता है।

कटकं सरठं, काकं भल्लूकं वानरं गवम् ।
पूयं गात्रमलं स्वप्ने केवलं व्याधिकारणम् ।।२०।।

कटक, गिरगिट, कौवा, भालू वानर, नीलगाय, पीव, तथा शरीर का मल स्वप्न में देखने पर मात्र रोगोत्पत्ति होती है।

भग्नभाण्डं क्षतं शूद्रं गलत्कुष्ठञ्च रोगिणम् ।
रक्ताम्बरञ्च जटिलं शूकरं महिषं खरम् ।।२१।।

फूटा हुआ बर्तन, क्षतशूद्र, गलित कुष्ठी, रोगी, लाल वस्त्रधारी, जटाधारी, सूअर, भैंसा, तथा गदहे को देखकर विपत्ति की प्राप्ति होती है।

अन्धकारं महाघोरं मृतं जीवं भयङ्करम् ।
दृष्ट्वा स्वप्ने योनिलिङ्गं विपत्तिं लभते ध्रुवम् ।।२२।।

स्वप्न में घोर अन्धकार, मरा हुआ जीव, भयंकर जीव, योनि तथा लिंग को देखकर मनुष्य विपत्ति में पड़ता है।

कुवेशरूपं म्लेच्छञ्च यमदूतं भयङ्करम् ।
पाशहस्तं पाशशस्त्रं दृष्ट्वा मृत्युं लभेन्नरः ।।२३।।

स्वप्न में कुवेशधारी, म्लेच्छ, भयंकर यमदूत जिसके हाथ में पाश हो, को देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है।

ब्राह्मणो ब्राह्मणी बाला बालको वा सुतः सुता ।
विलापं कुरुते कोपाद् दृष्ट्वा दुःखमवाप्नुयात् ।।२४।।

स्वप्न में ब्राह्मण-ब्राह्मणी, बालक-बालिका, पुत्र-पुत्री को विलाप करते हुये देखने वाला मनुष्य अथवा इनको कुपित देखने वाला मनुष्य विपत्ति में पड़ता है।

कृष्णं पुष्पञ्च तन्माल्यं सैन्यं शस्त्रास्त्रधारिणम् ।
म्लेच्छाञ्च विकृताकारां दृष्ट्वा मृत्युं लभेद् ध्रुवम् ।।२५।।

उ क

स्वप्न में काला फूल और काले फूल की माला, शस्त्र-अस्त्र से सुसज्जित सेना तथा विकृत मुख वाली म्लेच्छ स्त्रियों को देखने वाला निश्चित ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

वाद्यञ्च नर्तनं गीतं गायनं रक्तवाससम् ।
म्लेच्छाञ्च विकृताकारां दृष्ट्वा मृत्युं लभेद् ध्रुवम् ।।२६।।

वाद्य, नृत्य, गीत, शास्त्रीय गायन, लाल कपड़ा, मृदंग को बजाते हुए देख कर व्यक्ति दुःख को प्राप्त करता है।

त्यक्तप्राणं मृतं दृष्ट्वा मृत्युञ्च लभते ध्रुवम् ।
मत्स्यादि धारयेद्यो हि तद्भ्रातुर्मरणं ध्रुवम् ।।२७।।

जिसका प्राण शरीर से निकल रहा हो अथवा जो मर चुका हो ऐसे

व्यक्ति को स्वप्न में देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है। जो स्वप्न में मछलियों को पकड़ता है उसके भाई की मृत्यु हो जाती है।

छिन्नं वापि कबन्धं वा विकृतं मुक्तकेशिनम् ।
क्षिप्रं नृत्यञ्च कुर्वन्तं दृष्ट्वा मृत्युं लभेन्नरः ।।२८।।

जिसका सिर धड़ से अलग हो अथवा जिसका शरीर विकृत हो गया हो, जिसका बाल मुण्डित कर दिया गया हो, जो तेजी से नृत्य कर रहा हो ऐसे व्यक्ति को स्वप्न में देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है।

मृतो वापि मृता वापि कृष्णम्लेच्छा भयानका ।
उपगूहित यं स्वप्ने तस्य मृत्युर्विनिश्चितम् ।।२९।।

मरे हुए लोग पुरूष या स्त्री अथवा काला मनुष्य या भयानक मनुष्य जिसका स्वप्न में आलिंगन करता है वह निश्चित ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

येषां दन्ताश्च भग्नाश्च केशाश्चापि पतन्ति हि ।
धनहानिर्भवेत्तस्य पीडा वा तच्छरीरजा ।।३०।।

स्वप्न में जिसके दांत तथा बाल झड़ जाते है वह धन हानि या शारीरिक पीड़ा को प्राप्त करता है।

उपद्रवन्ति यं स्वप्ने श्रृङ्गिणोदंष्ट्रिणोऽपि वा ।
बालका मानवाश्चैव तस्य राजकुलाद् भयम् ।।३१।।

जिसको स्वप्न में सिंग वाले पशु उपद्रव ग्रस्त करते है चाहे वह बालक हो या मनुष्य हो उसको राजकुल से भय उत्पन्न होता है ।

छिन्नवृक्षं पतन्तञ्च शिलावृष्टिं तुषं क्षुरम् ।
रक्ताङ्गारं भष्मवृष्टिं दृष्ट्वा दुःखमवाप्नुयात् ।।३२।।

कटे हुए वृक्ष तथा पत्थर की वृष्टि, भूसी, बाण, लाल अंगार तथा भष्म की वृष्टि को देखकर मनुष्य दुःख को प्राप्त करता है ।

ग्रहं पतन्तं शैलं वा धूमकेतुं भयानकम् ।
भग्नस्कन्धं नरं वापि दृष्ट्वा दुःखमवाप्नुयात् ।।३३।।

स्वप्न में ग्रह को टूट कर गिरते हुए, पहाड़ या भयानक धूम केतु को गिरते हुए तथा जिसके दोनों कन्धे कट गये हों एसे मनुष्य को देखकर व्यक्ति दुःख को प्राप्त करता है।

रथगेहशैलवृक्षगोहस्तितुरगाम्बरात्
भूमौ पतति यः स्वप्ने विपत्तिस्तस्य निश्चितम् ।।३४।।

स्वप्न में जो व्यक्ति रथ, मकान, पर्वत, पेड़, गाय, हाथी, घोड़ा तथा आकाश

से पृथ्वी पर अपने को गिरते हुए देखता है तो वह विपत्ति में फसता है।

उच्चैः पतन्ति गर्तेषु भष्माङ्गारयुतेषु च ।
क्षारकुण्डेषु चूर्णेषु मृत्युस्तेषां न संशयः ।।३५।।

स्वप्न में ऊंचाई से गड्ढे में गिरने वाला तथा भस्म एवं अंगार से लिपटा हुआ चूना या क्षार कुण्ड में गिर जाय तो उसकी मृत्यु हो जाती है। इसमें संदेह नहीं है ।

बलाद् गृह्णाति दुष्टश्च छत्रञ्च यस्य मस्तकात् ।
पितुर्नाशो भवेत्तस्य गुरोर्वापि नृपस्य वा ।।३६।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के सिर के ऊपर से कोई दुष्ट व्यक्ति बलपूर्वक छत्र छीन लेता हो उसके पिता की मृत्यु हो जाती है अथवा उसके गुरु या उसके देश के राजा की मृत्यु हो जाती है।

सुरभि यस्य गेहाच्च याति त्रस्ता सवत्सिका ।
प्रयाति पापिनस्तस्य लक्ष्मीरपि वसुन्धरा ।।३८।।

स्वप्न में जिस पापी व्यक्ति के घर से भयभीत गाय अपने वत्स के साथ पलायन कर जाती है उस पापी का धन और भू-भाग भी उसे छोड़कर भाग जाता है ।

पाशेन कृत्वा बद्धञ्च यं गृहीत्वा प्रयान्ति च ।
यमदूताश्च ये म्लेच्छास्तस्य मृत्युर्विनिश्चितम् ।।३८।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति को यमदूत या म्लेच्छ पाश में बांधकर अपने साथ ले जाते हैं उसकी मृत्यु सुनिश्चित ही हो जाती है।

गणको ब्राह्मणो वापि ब्राह्मणी वा गुरुस्तथा ।
परिरुष्टः शपति यं विपत्तिस्तस्य निश्चितम् ।।३९।।

स्वप्न में ज्योतिषी, ब्राह्मण, ब्राह्मणी तथा गुरु जिस पर नाराज होकर शाप देता है तो वह विपत्ति में पड़ जाता है ।

विरोधिनश्च काकाश्च कुक्कुटा भल्लुकास्तथा ।
पतन्त्यागत्य यद्गात्रे तस्य मृत्युर्न संशयः ।।४०।।

स्वप्न में जिसके ऊपर विरोधी, कौवे, कुक्कुट तथा भालू गिरते हों उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ।

महिषभल्लुका उष्ट्रा शूकरा गर्दभास्तथा ।
रुष्टा धावन्ति यं स्वप्ने स रोगी निश्चितं भवेत् ।।४१।।

स्वप्न में जिसको देखकर भैसा, भालू, ऊंट, सूअर तथा गदहा दौड़ाते

हों वह निश्चित ही रोगी हो जाता है।

रक्तचन्दनकाष्ठानि घृताक्तानि जुहोति यः ।
गायत्र्या च सहस्रेण तेन शान्तिर्विधीयते ।।४२।।

लाल चन्दन तथा घी की समिधा से गायत्री मंत्र से जो एक हजार हवन करता है उसके दुःस्वप्न की शान्ति हो जाती है ।

सहस्रधा जपेद्यो हि भक्त्यैनं मधुसूदनम् ।
निष्पापो हि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः सुखवान् भवेत् ।।४३।।

जो व्यक्ति विष्णु मन्त्र (ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय) का एक हजार जप करता है वह निष्पाप होकर सुखी तथा दुःस्वप्न के फल से मुक्त हो जाता है ।

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम् ।
हंसं नारायणञ्चैव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम् ।।४४।।

अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य जनार्दन, हंसपुरुष तथा नारायण का अष्टक पाठ करने वाला भी अशुभ स्वप्न से मुक्त हो जाता है तथा शुभ फल को प्राप्त करता है ।

शुचिः पूर्वमुखः प्राज्ञो दशकृत्वञ्च यो जपेत् ।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान् भवेत् ।।४५।।

जो बुद्धिमान् व्यक्ति पवित्र होकर पूर्वाभिमुख विष्णु का स्मरण दश बार करता है वह निष्पाप होकर दुःस्वप्न से मुक्त होकर शुभ फल प्राप्त करता है।

विष्णुं नारायणं कृष्णं माधवं मधुसूदनम् ।
हरिं नरहरिं रामं गोविन्दं दधिवामनम् ।।४६।।
भक्त्या चेमानि नामानि दश भद्राणि यो जपेत् ।
शतकृत्वो भक्तियुक्तो जप्त्वा नीरोगतां व्रजेत् ।।४७।।

विष्णु, नारायण, कृष्ण, माधव, मधुसूदन, हरि, नृसिंह, श्री राम, गोविन्द तथा वामन का भक्ति पूर्वक दश बार नाम जपने वाला व्यक्ति सैकड़ों शुभ से युक्त होकर निरोग हो जाता है।

लक्षधा हि जपेद्यो हि बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ।
जप्त्वा च दशलक्षञ्च महाबन्ध्या प्रसूयते ।
हविष्याशी यतः शुद्धो दरिद्रो धनवान् भवेत् ।।४८।।

इन नामों का एक लाख जप करने वाला व्यक्ति बन्धन से मुक्त हो जाता है। दश लाख जप करने पर महाबन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है। दरिद्र धनवान् हो जाता है। अतः शुद्ध होकर हविष्यान्न लेकर जप करना चाहिए ।

शतलक्षञ्च जप्त्वा च जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।
शुद्धो नारायणक्षेत्रे सर्वसिद्धिं लभेन्नरः ।।४९।।

एक करोड़ जप करने वाला जीवन मुक्त हो जाता है । तीर्थ क्षेत्र (विष्णु प्रधान क्षेत्र) में जप करने से सर्व सिद्धि हो जाती है ।

ऊँ नमः शिवं दुर्गां गणपतिं कार्तिकेयं दिनेश्वरम् ।
धर्मं गङ्गां च तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम् ।।५०।।
नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत् ।
वाञ्छितञ्च लभेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान् भवेत् ।।५१।।

शिव, दुर्गा, गणपति, कार्तिकेय, सूर्य, धर्म, गंगा, तुलसी, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती के पहले ऊँ नमः लगाकर जप करने से दुःस्वप्न नष्ट हो जाते है। जैसे- ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमो दुर्गायै, ऊँ नमो गणपतये, ऊँ नमः कार्तिकेयाय, ऊँ नमः सूर्याय आदि। इन नामों का स्मरण स्नान करके शुद्ध मन से करना चाहिये। इन्हें जपने से धन की प्राप्ति होती है।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं पूर्वदुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा ।
कल्पवृक्षो हि लोकानां मन्त्रः सप्तदशाक्षरः ।
शुचिश्च दशधा जप्त्वा दुःस्वप्नः सुखवान् भवेत् ।।५२।।

'ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं पूर्वदुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा' यह सत्रह अक्षरों वाला मन्त्र सभी मन्त्रों का राजा तथा कल्पवृक्ष सदृश फलदायी मन्त्र है। अतः इसे पवित्र होकर दस बार जपने से दुःस्वप्न का नाश होकर शुभ फल प्राप्त हो जाता है।

शतलक्षजपेनैव मन्त्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ।
सिद्धमन्त्रस्तु लभते सर्वसिद्धिञ्च वाञ्छिताम् ।।५३।।

इस मन्त्र का एक करोड़ जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जिसको यह मन्त्र सिद्ध हो जाय वह सभी अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है।

ऊँ नमो मृत्युञ्जयायेति स्वाहान्तं लक्षधा जपेत् ।
दृष्टवा च मरणं स्वप्ने शतायुश्चभवेन्नरः ।।५४।।

'ऊँ नमो मृत्युञ्जयाय स्वाहा' मन्त्र का एक लाख जप करने पर स्वप्न में अपने को मृत् देखने वाला व्यक्ति शतायु हो जाता है।

पूर्वोत्तरमुखो भुत्वा स्वप्नं प्राज्ञे प्रकाशयेत् ।
काश्यपे दुर्गते नीचे देवब्राह्मणनिन्दके ।
मूर्खे चैवानभिज्ञे च न च स्वप्नं प्रकाशयेत् ।।५५।।

पूर्व या उत्तर मुख होकर बुद्धिमान् ज्योतिषी के सामने अपने प्रश्न को कहना चाहिये। दुर्गति प्राप्त, नीच तथा देव ब्राह्मण के निन्दक, मूर्ख तथा स्वप्न विद्या से अनभिज्ञ व्यक्ति के सामने अपने स्वप्न को नहीं कहना चाहिए।

अश्वत्थे गणके विप्रे पितृदेवासनेषु च ।

आर्ये वैष्णवे मित्रे दिवास्वप्नं प्रकाशयेत् ।।५६।।

पीपल वृक्ष, ज्योतिषी, विद्वान् ब्राह्मण, पितर तथा देवता के आसन के समीप आर्य पुरुष, वैष्णव जन तथा मित्र के सामने दिन में देखे हुए स्वप्न को कहना चाहिए।

इति ते पुण्यमाख्यानं कथितं पापनाशनम् ।

धन्यं यशस्यमायुष्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।५७।।

इस प्रकार से हमने आप के सामने पवित्र तथा पाप नाशक आख्यान को कहा । इसको सुनने वाला धन्य होता है। वह यश एवं आयु का प्रापक होता है।

इति श्रीब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे नारायणनारदसंवादे श्रीकृष्णजन्मखण्डे श्रीभगवन्नन्दसंवादे दुःस्वप्नवर्णनं नाम द्व्यशीतितमोऽध्यायः ।।

फ्राँस के रेने विसकार्ते के अनुसार बुद्धि हमेशा सोचती रहती है। इसीलिए स्वप्न में भी सोची हुई बातों का प्रभाव दिखता है । निश्चित विचार, चिंतन, मनन के फलस्वरूप स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं । दार्शनिक लॉक इस विचार से सहमत नहीं है । इनके अनुसार शरीर जब सोया रहता है और आत्मा विचार में निमग्न रहती है तो जागने के बाद स्वप्न की बात भूल क्यों जाती है ? आत्मा और शरीर दोनों मिलकर सोंचने का काम करते है । फलतः एक सोया रहे दूसरा जागता रहे यह व्यावहारिक नहीं है । लॉक के इस विचार का खण्डन लिब्निज ने किया । लिब्निज के अनुसार अचेतन अवस्था में भी चेतन चिन्तन करता रहता है, यद्यपि उसकी भावना स्पष्ट होती है । प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पृथक् सत्ता है और वह दूसरे से भिन्न प्रकृति का है । स्वभाव, विचार, विश्वास सबकुछ एक दूसरे से भिन्न व व्यक्तित्व के अनुरूप होता है । इसीलिए सुप्तावस्था में स्वप्न भी भिन्न प्रकृति का दिखलाई पड़ता है। इसीलिए स्वप्न की बातें एक निश्चित परिणाम के लिए प्रतीक नहीं बन सकतीं। दार्शनिक हीगल बुद्धि को हजार भूलों के बाद क्रमरूप में विकसित वस्तु मानते हैं । अतः बुद्धि सही गलत दोनों हो सकती है । अतः नींद में गलत सोचने की संभावना अधिक होने के बावजूद सही भी सोचा जा सकता है ।काण्ट के अनुसार स्वप्न के बिना कोई सो ही नहीं सकता । सोने का एक अंग मात्र है स्वप्न । 1.

इन विदेशी विचारकोंके तर्क से एक समस्या पैदा होती है कि स्वप्न तर्क या विचार की वस्तु है । तर्क सुनिश्चित परिणाम को काटता भी है और उसे अधिक विचार विमर्श की वस्तु भी बनाता है । ऐसे में स्वप्न के सुनिश्चित फल या भविष्य कथन को कैसे सही ठहराया जा सकता है ?

डॉ0 ईटन स्वप्न को ज्ञान से उत्पन्न मानते हैं । हमारे यहाँ चरक ने स्वप्न को मन से उत्पन्न माना है । ईटन ने कहा कि-"स्वप्न में देखी गई बात के विषय में क्या कहा जाए । सपने में देखी गई घटनाएँ तथा व्यक्ति उसी प्रकार प्रत्यक्षरूप से वास्तविक में है जिस प्रकार इस समय सड़क पर कोई घटना हो रही है या लोग चल फिर रहे है। जाग्रत अवस्था में हम जो कुछ देखते है, सुनते हैं, वह हमारी अनुभूति का चौथाई हिस्सा तो है, फिर हम जागते हुए जो कुछ देखते है उसपर इतना अधिक विश्वास क्यों करते है ? निश्चयतः स्वप्न भी ज्ञान का एक रूप है ।" 2.

फ्रायड के अनुसार – "जाग्रत तथा सचेत अवस्था में हम अपने मन की जिन कामनाओं और इच्छाओं को कार्यरूप में परिणत करने में संकोच करते है या डरते है वे ही रात की एकान्त अवस्था में बाहर निकल पड़ती है स्वप्न के रूप में । ज्यों ही हम जागते है स्वप्न भी भूल जाता है। इसका सिर्फ यही कारण है कि जाग्रत अवस्था का 'डर' फिर उन्हें पीछे ढकेल देता है ।

फ्रायड के इस सिद्धान्त का बाद में खण्डन हो गया, क्योंकि सभी स्वप्न जाग्रत अवस्था की अतृप्त कामनाएँ ही नहीं होते । फ्रायड ने तो खुली किताब को स्वप्न में देखने को भी वासना ही माना है । उनके अनुसार खुली किताब स्त्री योनी का प्रतीक है । वे यह भी मानते है कि हम अपने मन में जिन इच्छाओं को मार बैठते हैं, दबा देते हैं, दबाए रहते हैं वही प्रतीक रूप में व्यक्त होती है । फ्रायड के अनुसार स्वप्न में बिल्ली, कुत्ता देखना भी कामुक भावनाओं तथा भोग विलास की प्रेरणा का परिणाम है । बच्चों के स्वप्न पर भी विदेशी विचार से जुड़े मानस वाले लेखकों का कथन है कि वे जंगल, अंधकार तथा डरावने स्वप्न ज्यादा इसलिए देखते हैं क्योंकि उनके मन पर आदिम मानव युग का संस्कार छाया रहता है । इससे एक बात तो स्पष्ट हुई कि अब मनोवैज्ञानिक भी धीरे-धीरे पूर्व जन्म के संस्कार को तो मानने लगे है। डॉ0 फ्रायड ने जीवन का सार तत्त्व काम वासना को माना है। कला, साहित्य लिखने में भूल का होना भी वे काम दोष से ही मानते हैं। वाणी का स्खलन यानि गाली-गलौज भी वे कामज ही मानते हैं । उन्हें क्रोध आदि विकार भूल जाते है । उनके अनुसार मनुष्य वासना शक्ति से ही संचालित होता है । 3.

फ्रायड के इन विचारों को डॉ0 जुंग ने अस्वीकृत कर दिया है। डॉ0 जुंग मानते हैं कि कामवासना के अतिरिक्त वास्तविक इच्छा कहीं अधिक व्यापक होती है । इसमें आत्मश्लाघा, धार्मिक, सामाजिक तथा रचनात्मक प्रवृत्तियाँ अधिक सन्निहित है । फ्रायड स्वयं भी स्वीकार करते हैं कि स्वप्न मनोवैज्ञानिक इतिहास की वस्तु है तब केवल कामवासना को आधार मानना उनकी भूल थी। मन में काम भी है और अन्य प्रवृत्तियाँ भी हैं । यदि स्पष्ट रूप से देखा जाए तो फ्रायड और जुंग में निम्नलिखित अंतर उभर कर सामने आता है -- स्वप्न में कामवासना का आधार फ्रायड को अभीष्ट है तो वर्तमान परिस्थितियों का व्यंग्यचित्र जुंग को । यानि फ्रायड काम को प्रधान मानते हैं और जुंग वर्तमान स्थिति को । निष्कर्षतः अज्ञात अचेतन अवस्था में मन का प्रतीकात्मक क्रियाओं का नाम ही स्वप्न है। इसीलिये स्वप्न प्रतीकात्मक होते हैं। महाकवि

दांते जो कुछ स्वप्न में देखते थे उसे कविता में लिखते थे । उनके काव्य में कितना सत्य है और कितना स्वप्न यह कहना कठिन है ।

एक स्वप्न की समीक्षा-- डॉ0 जुंग ने एक स्वप्न की समीक्षा इस प्रकार से की है - 'एक रोगी ने स्वप्न में देखा कि वह अपनी माता तथा बहन के साथ जीने पर चढ़ रहा है । ऊपर चढ़ जाने पर उसकी बहन को एक बच्चा पैदा हुआ।' डॉ0 फ्रायड के अनुसार जीने पर चढ़ना स्त्री संभोग का द्योतक है । माता बहन भी स्त्री भाव को प्रकट करती हैं । जुंग के अनुसार जीने पर चढ़ना उस पुरुष का उत्कर्ष भाव प्रकट करता है । बहन के साथ रहना उसके भावी प्रेम को प्रकट करता है। बच्चा पैदा होने का अर्थ है कि वह नयी पीढ़ी के निर्माण के बारे में सोच गया । साथ में माता भी है । उस रोगी ने स्वयं स्वीकार किया कि वह बहुत दिनों से माता से मिलना चाहता है । उसकी उपेक्षा करता रहा है । उसकी उस उपेक्षात्मक भूल को अज्ञात मानस ने ठीक कर लिया ।

फ्लूगेल की स्वप्न समीक्षा-- एक स्त्री ने स्वप्न देखा कि एक व्यक्ति उसका पियानो ठीक करने आया । उसने बाजे को खोला । उसकी कणियों को भीतर से निकालकर उसमें बिठाने लगा। इस स्वप्न के तीन अर्थ हुए । (ii) वह पियानो बाजा उस स्त्री का प्रतीक है । (i) बाजा ठीक करनेवाला पुरुष उस स्त्री का अभीष्ट पुरुष है जिससे वह अपनी वासना शान्त कराना चाहती है । (iii) कड़ियाँ निकाल कर डालने का अर्थ है उसके गर्भ में बीज डालना । अब हर व्यक्ति पियानो बाजा का ही स्वप्न देखे तो उसका भोग ही अर्थ होगा ऐसा नहीं है ।

विदेशी स्वप्न प्रतीक

1.	पानी में प्रवेश करना या बाहर निकलना	-	संतान जन्म प्रतीक ।
2.	सम्राट् या साम्राज्ञी देखना	-	पिता-माता का प्रतीक।
3.	यात्रा	-	मृत्यु का प्रतीक ।
4.	वस्त्र	-	नंगा रहने का प्रतीक
5.	प्राकृतिक दृश्य, कमरा, किला, महल	-	स्त्री प्रतीक
6.	पिस्तौल, सूई, चाकू, पेंसिल, मीनार	-	पुरुष प्रतीक ।
7.	गांठ खोलना	-	समस्या सुलझाना ।

8. पहरेदार - सचेतन क्रियाशीलता ।
9. अजायबघर - बुद्धि का कोष ।
10. अग्नि - देव प्रतीक

हैडेल ने कहा कि - वस्तुओं की उत्पत्ति की समस्या के सम्बन्ध में मनुष्य की कल्पना शक्ति ने समय-समय पर जो उत्तर दिए है पौराणिक कथाएं उनका प्रतिनिधित्व करती हैं । जिसकी जितना कल्पना शक्ति जाग्रत होगी, जिसका लोक विश्वास जैसा होगा, जिसकी अपनी पौराणिक गाथाओं की जितनी जानकारी होगी, उसका अज्ञात मानस भी स्वप्न में वैसा ही कार्य करेगा ।

इस प्रकार से विदेशी स्वप्न प्रतीक कामवासना, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा साम्वन्धिक आधार पर निर्धारित किये गये हैं। ये बहुत कुछ भारतीय स्वप्न समीक्षा से मेल खाते हैं । भारतीय स्वप्न में जो अदृष्ट जनित स्वप्न हैं वे अद्भुत हैं । उन्हें तपस्या या अतीन्द्रिय शक्ति से गृहीत किया जा सकता है ।

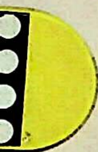
संदर्भ-

1. Kant-Anthropoligie.
2. Ralph Monroe Eaton, Ph.D.- "Symbolism and Truth" Harward University Press, 1925 Page 4
3. Dr. Sigmund Freud & Psychopathology of Everyday life 1920.

स्वप्न परिशिष्ट

स्वप्न परिशिष्ट

स्वप्न	स्वप्नफल	पृष्ठ
जोंक, मछली, भ्रमरी, सर्प, मक्खी का काटना	-रोग से मुक्ति, धन लाभ	66
माता के पेट में प्रवेश करना	-महद् अशुभ	67
पुरुषों का परस्पर मैथुन देखना	-अशुभ सूचक	"
दस्त उल्टी करना	-रोग सूचक	"
मकान की धुलाई-पुताई	-रोगग्रस्त होना	"
द्युतक्रीडा में जीतना	-शुभ सूचक	69
मछली खाना, दूध पीना	-शुभ सूचक	"
खून से स्नान करना	-अत्यन्त शुभ	"
सिंही, हस्तिनी, घोड़ी का थन	-राज्य लाभ का सूचक	70
अपने मुख से पीना	"	
गाय को स्नान कराना	-राज्य लाभ	"
घर में हस्तिनी, घोड़ी, तथा	-अत्यन्त शुभदायक	"
गाय का प्रसव देखना	"	
अशुभ तथा शुभ स्वप्नों की सूची	-पृष्ठ 72, 73, पर देखें	
जल बहाव को बदलना	-अशुभ	73
कच्चा मांस खाना	-शुभ	"
पक्का मांस खाना	-अशुभ	"
दुग्धवृक्ष पर अकेले चढ़ कर तत्काल जागना	-शुभ	74
उजले सर्प का काटना	-दस दिन के अन्दर हजार स्वर्ण मुद्रा लाभ	"
जल के भीतर साँप बिच्छू का काटना	-विजय एवं धनलाभ	"
बगुली, मुर्गी, क्रौंची को देखना	-कुलीन पत्नी लाभ	75
बेड़ी में बंधना	-पुत्र लाभ	"
मनुष्य के अंग विशेष का मांस खाना	-पृष्ठ 76 पर देखें	



सन्दर्भ ग्रन्थ

1. स्वप्नकमलाकरः	–	ज्योतिर्विद् श्रीधरः
2. महाभारतम्		
3. ऋग्वेदः		
4. वाल्मीकीयरामायणम्		
5. श्रीरामचरितमानस	–	गोस्वामी तुलसीदास
6. रामयणभूषणम्		
7. बगलामुखीरहस्यम्	–	राष्ट्रगुरुदतिया स्वामी
8. चरकसंहिता		
9. शारङ्धरसंहिता		
10. तन्त्रराजतन्त्रम्		
11. मत्स्यपुराणम्		
12. स्वप्नाध्यायः	–	बृहस्पतिः
13. ब्रह्मवैवर्तपुराणम्		
14. Anthropoligie	–	Kant
15. Symbolism and Truth	–	R. M. Eaton
16. Sychopathology of Everyday	–	S. Freud.





स्वप्न विद्या

ऋषियों ने स्वप्न पर अनेक प्रकार से विचार किया है ... जगत् प्रपंच की तरह मिथ्या माना गया तथा इसको ईश्वरीय अ... क्रप्रक्रिया का संसूचक भी माना गयां है ।स्वप्न पर विचार पुराण... स्वतंत्रस्वप्न ग्रंथ तथा ज्योतिष के संहिता विभाग के अन्तर्गत कि... प, पुण्य और दैवी आदेश से दृष्ट स्वप्न अद्भुत एवं अपूर्व हो... उनका अपना पृथक् महत्व है। प्रस्तुत ग्रंथ में भारतीय चिंतन में स्वप्नादेश ... जो कुछ भाग प्राप्त हो सका है उसे संकलित किया गया है । इस ग्रंथ से पाठक स्वप्नों के फलों का विश्लेषण कर सकता है।साथ ही स्वप्नकाल एवं दुःस्वप्न परिमार्जन के उपायों को भी जान सकता है । परिशिष्ट में विशिष्ट स्वप्न और उनका फल संकलित कर दिया गया है जिससे एक दृष्टि में ही स्वप्नों का फल जाना जा सकता है । सम्पूर्ण ग्रंथ का अध्ययन करने से पाठक स्वप्न फलका विशिष्ट ज्ञाता हो सकता है । तंत्रागम में स्वप्न का जो अर्थ लिया गया है उससे मानव जीवन के पथ का प्रदर्शनहो सकता है। फलतःआज के इस विषम एवं व्यस्ततम् जीवन में स्वप्नों के माध्यम से अदृष्ट फलों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

त्रिस्कन्ध - ज्योतिषम् प्रकाशन, वाराणसी